दिव्य आदेश

(भाग चार)

रामचन्द्र

श्री रामचन्द्र मिशन

शाहजहाँपुर, उ०प्र० (भारत)

दिव्य आदेश

(भाग चार)

इरशादात हज़रत क़िब्ला पीर
दस्तगीर श्रीमान रामचन्द्र जी
साहब फ़तहगढ़ी, ज़िला फ़र्रुख़ाबाद
मन इब्तदाई 3 जनवरी 1945 ई०
लग़ायत 31 मार्च, 1945 ई०

प्रथम संस्करण - २०००, ११०० प्रतियाँ

©श्री रामचन्द्र मिशन

मूल्यः रू० 90/-

प्रकाशक :
श्री रामचन्द्र मिशन,
प्रकाशन विभाग
शाहजहाँपुर, उ०प्र० (भारत)

मुद्रक :खन्ना आर्ट प्रिन्टर्स,
WZ-190, शादीखामपुर,
वेस्ट पटेल नगर,
नई दिल्ली - 110 008.

प्रस्तावना

हमारे लिए एक सौभाग्य की बात है कि हमें एक महान हस्ती के कुछ संदेशों को एक पुस्तक के रूप में आप सब के सामने प्रस्तुत करने का शुभ अवसर मिला, जिन्हें हमने ***दिव्य आदेश*** नामक पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया है। इसमें दिव्य संदेश, जो हमारे पूज्य बाबूजी को एक आदेश के रूप में मिले थे, अगर हम पढ़कर अपनी बुद्धी पर जरा भी जोर डालें, तो हमें पता चलेगा कि हमारे पूज्य बाबूजी महाराज कितनी महान हस्ती हैं और किन किन महान शक्तियों की प्रेरणा से उन्होंने सहज मार्ग की स्थापना की और मानव समाज के उद्धार के लिये जीवन पर्यान्त कार्यरत रहें। और अब भी कार्यरत हैं। बाबूजी हमेशा कहते थे कि एक Special Personality का जन्म हो चुका है और उसके माध्यम से आध्यात्मिक दुनियाँ की भावी अवरचना होगी। यहाँ तक कि उनके संदेशों में महाप्रलय तक का वर्णन है। यह संदेश कोई साधारण संदेश नहीं हैं यह आगे आने वाली पीढ़ियों के लिये अनौखे संदेश होंगे। हम सब का मनुष्य जीवन में आने का क्या उद्देश्य है इस पर अवश्य विचार करना चाहिये और इसी जीवन में जीवन के उद्देश्य को प्राप्त कर के मानव जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिये। इस संसार में आकर मनुष्य अनेक कष्टों को झेलते हुए अनेक जीवन बिता जाता है। और जीवन-मृत्यु के काल चक्र में फँस कर अपने संस्कारों को भोगता रहता है। इस काल-चक्र से किस प्रकार छुटकारा पाया जा सकता है। इस के लिये उन्होंने ***सहज मार्ग*** की स्थापना की है। इस मार्ग की सहायता से मनुष्य इस जन्म में जीवन मृत्यु के चक्र से छुटकारा पा सकता है। अर्थात मोक्ष प्राप्त कर सकता है। मोक्ष प्राप्त करने के लिये मनुष्य को सहज मार्ग के नियमों पर चलकर मनुष्य जीवन सार्थक बनाने के लिये सहज मार्ग एक अचूक साधन है। आध्यात्मिक मार्ग पर चलने के लिये भक्ति (Devotion) विश्वास (faith) और आत्म समर्पण (Surrender) का महत्वपूर्ण स्थान है। विश्वास एक ऐसी शक्ति है जो हर मनुष्य की विचार धारा (thinking) को बदल सकती है और आध्यात्मिकता के उचित मार्ग पर चलने के लिये विवश कर सकती है।

प्रस्तुत पुस्तक दिव्य आदेश उन संदेशों (Messages) पर आधारित है जो हमारे पूज्य बाबूजी को Direct Super Conscious state में दिये गये और उन्होंने अपने हाथों से डायरी में लिखें, जो कि कई भाषाओं में लिखे हुये हैं। उनका रूपान्तरण एक अच्छे अभ्यासी श्री मदन मोहन गुप्ता जी के प्रयासों से किया गया । उनके कठिन

प्रयासों की सहायता से यह पुस्तक इस शुभ अवसर पर प्रस्तुत करने में समर्थ हुए हैं। इसके साथ ही कम्प्यूटर तथा अन्य प्रकार की सहायता श्रीमति अमिता कुमारी, श्री सुनीत कुमार, श्री पुनीत कुमार और श्री गुरु प्रसाद के पारिश्रमिक सहयोग से संभव हुआ है। प्रस्तुत पुस्तक के रू-ब-रू original script के तर्जुमें को सामने रक्खा गया है। इसमें किसी प्रकार का विचार परिवर्तन और न ही उनके शब्दों में परिवर्तन (change) किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में बाबूजी महाराज के बेंगलूर, मैसूर, हैदराबाद, बम्बई, सूरत, द्वारिका, मथुरा आदि स्थानों की यात्रा का वर्णन है। उन्होंने जो कार्य वहाँ किये उनका वर्णन है। यह टूर करीब एक माह 15 दिन का था। और कई स्थानों का हजारों वर्षों का कार्य कुछ क्षणों में किया उसका भी वर्णन है। इस पुस्तक में श्री लालाजी महाराज, स्वमी विवेकानन्द जी, श्री कृष्ण जी, राधा जी, श्री गुरु नानक देव, श्री चैतन्य महाप्रभु तथा अनेक ऋषि के, बाबूजी महाराज के अध्यक्ष पद का तथा अनेक शक्तियों का वर्णन है। तथा आध्यात्मिकता क्या है? शांति क्या है? आदि का वर्णन किया गया।

आधुनिक युग में कोई भी प्राणी बिना आध्यात्मिक सहायता के दिन प्रति दिन के जीवन को उचित रूप से चलाने में असमर्थ है। अब जो युग आने वाला है वह आने वाली कठिनाईयों का प्रतीक है। इससे यह ज्ञात होता है कि आने वाले युग में हर मनुष्य को कठिनाईयों का सामना करना पडेगा। इन कठिनाईयों को सहन करने में आध्यात्मिकता का महत्वपूर्ण योगदान होगा।

अन्त में हम यही कहेंगे कि हर इन्सान को किसी न किसी रूप में ईश्वर से लगाव रखना चाहिये। सहज मार्ग ही एक ऐसा पथ है जो , सद्गुरु बाबूजी महाराज के आशिर्वाद से, आपको शान्ति पथ पर अग्रसर कर सकता है।

यह दिव्य आदेश, १२ volumes में आपके सामने प्रस्तुत होंगे और कोशिश यह होगी कि यह १२ volumes ६ साल में हम आप के सामने प्रस्तुत कर सकें। यही हमारा प्रयत्न होगा।

उमेश चन्द्र

अध्यक्ष, श्री रामचन्द्र मिशन

शाहजहाँपुर ।

दिव्य आदेश - भाग - 4

3-1-45 Bangalore

हज़रत क़िब्ला : मैं ने तुम को इस जगह एक रोज़ क़याम करने का यूं हुक्म दिया कि तुम बहुत थक गये थे। आगे सफ़र के क़ाबिल नहीं थे, वरना मेरी राय नहीं थी। तुम्हारा काम अब तक बराबर क़ाबिले-तारीफ़ रहा है।

SV (Swami Vivekanand ji) = You have made the field for others to work on. Nobody could have done so. It is you and only you fit for this duty. I am glad to have you. Start for Mysore tonight. When you go back to Shahjahanpur, prepare some graduates to work in Mysore. You have correctly arrived at the result that there is a vast field in Mysore. You will find a number of people in Hyderabad, too. But it will require time to mould their destiny to this godly duty and it is you who will prepare them for the same. Prepare field for others. Your one duty is common everywhere, i.e., destruction of Brahmans. Going back with the Lord.

4-1-45 Mysore

S.V. = See a few of the prominent persons of the city if you like. I don't compel you. As it was your desire, so I allow you. Select good ones to work in the field. Education is necessary. Very big personality is to be born from you. Days are nearer.

7-1-45 Mysore

हज़रत क़िब्ला - तुम Hāsan जा रहे हो, बिलूर के मन्दिर को पुरअसर कर देना। तुम्हारा काम बहुत अच्छा रहा है। मैसूर अच्छा मुनव्वर हुआ। कल कूच कर दो।

S.V.= Your work has been extra-ordinary, rather exemplary. You have made field for others to traverse on. This work ought to be written with gold letters. Human wisdom fails here. Now comes the turn of Northern India. When you reach home, proceed to Delhi.

Hyderabad Deccan 10.1.45 को पहुंचा

11-1-45

हज़रत क़िब्ला = आज बवक्त 11 ½ बजे रात के एक ताक़त क़ुदरत की तरफ़ से तुम को काम करने के लिये अता हुई है। वो मैं

ने इस वक्त मुन्तक़िल कर दी। यह ताक़त नबियों को दी जाती है। किसी भगत को आज तक अता नहीं की गई।

14-1-45

S.V. = Congratulations! Your work has been excellent throughout. You have filled the air with rebellion and Nizam's dominion will end. It is bound to take place. Don't be disheartened. Your generation will reap the fruit of your labour carried on so far, and you will ever and after be remembered till the world exists. You have illuminated every part of the country in Southern India. Now comes the turn of Northern India for which you must proceed to Delhi, after completing the present tour of Southern India. Don't be afraid of time. It comes on sooner or later. By later I mean after your death, and the effect will last ever and after till the time collapses by Will of God Almighty. Your existence is the golden opportunity for the country and the world. **You will absorb at large every religon of the world, and issue forth a new one** which you are apt to do. Proceed on to Ajanta as you desire to see it and then to Bombay and Dwarka. Lord Krishna will be waiting for you in Dwarka to give you some sacred work.

19-1-45

Manmand से बम्बई मुनव्वर करने का हुक्म हुआ।

21-1-45

सूरत स्टेशन निकल जाने के बाद गुजरात को मुनव्वर करने का हुक्म हुआ।

23-1-45

श्री कृष्ण जी= द्वारका को मुनव्वर कर दो। यह वो जगह है जहाँ मेरा क़याम रहा है। यह वही सरज़मीन है। कुछ हिस्सा उस का समन्दर की नज़्र हो चुका है और यह मेरा ही हुक्म था। Okha Fort जाओ। उस हिस्से को मुनव्वर कर दो। और अगर न जा सको तो यहीं से मुनव्वर करना। जाना हर हाल में अच्छा है। यहाँ के लोग ख़ुदगर्ज़ बहुत हैं। मुहब्बत में कमी है। और क़रीब-क़रीब हर जगह कमोबेश यही हाल है। माया के दाम में हर शख़्स गिरफ़्तार नज़र आता है।

हज़रत क़िब्ला= तुम यहाँ का काम ख़त्म कर के घर चले जाओ। मथुरा एक या दो यौम ठहर सकते हो। अपने घर में अभी शाहजहाँपुर न ले जाना (बीवी को); भण्डारे तक मुमानियत है। अगर ख़ुद आजावें तो कोई बात नहीं। मगर बवजूहात चन्द दर चन्द अभी मुनासिब नहीं समझता। Okha जाना तुम्हारा ज़रूरी है।

S. Vivekanandji = You have done wonders.

24-1-45 Dwarka

हज़रत क़िब्ला = मन्दिर काफ़ी रोशन हो चुका। अब बस्ती पर रुजुअ हो जाओ।

S.V. = We don't want Brahmanical Supremacy over India. They must be extinguished altogether. Sooner the better.

26-1-45

S.V. = There is no necessity of staying here anymore. Start.

27-1-45

(R.C.) द्वारका से रवाना हुआ। स्टेशन पहुंचने से पहले हुक्म हुआ कि जनूबी हिन्द जो क़तई मुनव्वर किया गया है, एक साथ ले लो।

28-1-45 मक़ाम महसाना

राजपूताना के मुसलमान और ब्रह्मण के डिस्ट्रक्शन का हुक्म मिला।

29-1-45

आज मथुरा पहुंचा।

31-1-45 मथुरा

श्री कृष्ण जी: तुम ने सफ़र में वो कारनुमायाँ किये हैं, जिनके देखने के लिये आँख चाहिये। कुल जनूबी हिन्द मुनव्वर हो चुका है। द्वारका भी अभी मुनव्वर हुई। अब अपना रुख़ हिन्दुस्तान के शुमाली हिस्से में फेर दो। जिस की शुरुआत देहली से होगी। ज़माना बदल रहा है और तेज़ी से बदलना चाहता है। जितनी तुम्हारी कोशिश में कमी है, उतनी ज़माना बदलने में देर है। यह काम कुलियतन् क़ुदरत ने तुम्हारे सुपुर्द किया है। अपने गुरु के हस्बे-हिदायत काम करते चलो। शुमाली हिन्द मुनव्वर कर के कुल हिन्दुस्तान एक साथ लेना। उस के बाद और काम मिलेगा। जिस का इशारा तुम्हारे पास आ चुका है। मैं तुम्हारे काम से बहुत ख़ुश रहा।

S.V. = Look here; these are the words of **Lord Krishna**. You should stick to work and work alone.

2nd February, 1945 SPN (Shahjahanpur)

हज़रत क़िब्ला - मैं बड़ा ख़ुश हूँगा अगर तुम लोग उस काम को कर सको जिस को मैं न कर सका। Organization हर रुहानी संस्था के लिये ज़रूरी है। मेरे वक़्त में सब लोगों के ख़याल मुझ में focus किये हुये थे। तालीम वो किसी से पाते मगर मेरा लिहाज़ व ख़याल था। यह ही तरीक़ा अगर शुरु किया जाये कि लोगों के ख़याल की धारें किसी एक शख़्स से मिल जावें जिस को वो बड़ा समझते हों या जिस को ईशर (ईश्वर) ने बड़ा बनाया हो। यह भी हो सकता है कि

ख़ास हस्तियों में से जो अभी हाल में बनाई गई हैं और जिन को मैं अपना समझता हूँ, अपने-अपने मुतल्लिक़ लोगों को अपनी तरफ़ खींच लें और फिर उनका connection जिस को वो बड़ा समझतें हों, क़ायम कर दें। इसके कहने से मेरा यह मतलब नहीं है कि अपने मुरीदैन या जो लोग उन से वाबिस्ता हैं, उन से पीछा छुड़ा कर किसी ख़ास शख़्स के ऊपर ज़िम्मेदारी डाल दी जाये। बल्कि मतलब यह है कि यह ख़याल उन पर जमा दिया जाये कि जो हमारे गुरु महाराज का सज्जादा नशीन है, उस के ज़रिये से एहकाम सादर होते हैं और उन की पाबन्दी करना फ़र्ज़ है यानी उस को मेरा नुमायन्दा समझ लिया जावे।

Organization करने वालों को सब से पहले यह अमल होना चाहिये कि वो अपने आप को ऐसा बना लें जैसा कि दूसरों को बनाना चाहते हैं। जैसे किसी शख़्स में मिठाई खाने की आदत है और वो दूसरों की मिठाई छुड़ाना चाहता है तो उस को लाज़िम है कि पहले ख़ुद छोड़ दे। तब दूसरों को तरग़ीब दे। मेरा यही अमल ज़िन्दगी भर रहा है कि जो बात दूसरों से कराना चाही, पहले ख़ुद अमल किया। इस बात को मद्देनज़र रख के तुम लोग organization की तरफ़ क़दम बढ़ाओ। एक बात याद रखने के क़ाबिल है कि अगर सिखाने वाले में कोई नुक़्स ज़ाहिरन् या बातनन् मौजूद रहा तो वो नुक़्स बहुत आगे तक जायेगा। और उस शख़्स में यह नुक़्स बहुत जल्द पैवस्त हो जायेगा जो अपने गुरु का शग़्ले-राब्ता करता है। यह ही वजह है कि शग़्ले-राब्ता हमेशा उस शख़्स का करना चाहिये जिस की तबियत एत्दाल पर आचुकी हो। और बहुत कुछ ऐबों से जो रुहानियत में माना हों या इख़लाक़ी हालत से गिरे हुये हों, बरी हो चुका हो। मैं समझता हूँ

कि हर शख़्स को जो तालीम करता है, शग़ले-राब्ता बताना भी नहीं चाहिये। जब तक कि सिखाने वाला ख़ुद उस हालत पर न पहुंच चुका हो। इसलिये हर तालीम कुनन्दा को चाहिये कि वो अपने आप को ऐसा बना ले कि जिस का शग़ले-राब्ता उसके मुरीद कर सकें।

4-2-45

हज़रत क़िब्ला - मैं फ़तेहगढ़ से आ रहा हूँ। बुढ़िया भी लालच में फंस गई। Toleration की अब इन्तिहा हो गई। **स्वामी विवेकानन्द** जी को बुला लो।

S.V. = All the elements that come in the way of progress must be annihilated. Look here, the field before you is a very large one, but it has been made narrow by the elements we don't desire. From today, my backing will be in your work. I think it to be my work and my duty. Your Guru has given me the charge of his work today. He will be the guiding power over us. The dictates you will receive direct from me regarding this work. You will guide your subordinates just a I tell you. Negative ideas should be forgotten altogether. I find a great difficulty in guessing your brethren of high positions they enjoy. You should make them alright first, then put to work. Ficklemindedness is the poison for the way to success. I want the firm minded persons with strong will for the work.

हज़रत क़िब्ला = मैं ने **स्वामी विवेकानन्द** जी को इस काम का चार्ज दे दिया है। अब जो मुनासिब होगा, वो करेंगे। तुम सब को उन के हुक्म की पाबन्दी करनी होगी। अगर उन के हुक्म से ज़रा भी हट गये तो मेरा इताब (अताब) नाज़िल होगा। मैं बाबू मदन मोहन लाल से ज़ाहिरन् किसी हद तक नाख़ुश हूँ। वो अपनी पिछली हालत और आदत पर आजाते हैं। कितने अफ़सोस का मुक़ाम है कि इस बड़े पैमाने का आदमी दूसरों को अपनी तरफ़ राग़िब न कर सके। मैं ने इस के मुतल्लिक़ अज़ीज़ राम चन्द्र से कहा था। उसने अदबन् और बलिहाज़ बुजुर्गी, यह बात उन से न कही। अब मुझ को कहना पड़ी। मैं सख़्ती की शुरुआत सब से पहले अपनों से करूंगा। उन्होंने अपने आप को इस क़दर ढीला छोड़ दिया कि हर हवा उन्हें तजावज़ कर जाती है। परेशानियाँ इस दारे-फ़ानी में रहते हुये किसी को कम नहीं होतीं। सूरत बदलती रहती है। किसी को एक तरह की तो दूसरे को दूसरी तरह की। क्या मैं परेशानियों से बरी था? इस के होते हुये मैं ने कौन सा फ़र्ज़ अपना पूरा नहीं किया। ऐसे ज़बरदस्त आदमी को कितना ही साफ़ क्यों न किया जाये, उस की will जिस बात की आदी हो रही है, उस को ख़ुद घसीट लेगी। पस लाज़िम है कि अपनी will को काम में लावें और इन ख़यालात को जगह न दें। और वक़्त के मुताबिक़ अपने आप को बनाएं। पुरानी चालें अब ख़त्म हो रही हैं। उन को बहुत से काम करना हैं। मगर अफ़सोस उन की तबियत उस तरफ़ रुजूअ नहीं होती। और न वो ऐसे साज़ोसामान बनाते हैं कि कामयाबी की सूरत जल्द नज़र पड़े।

एक सहल उसूल मैं उन को बताता हूँ कि जिस को रोज़ाना और बिलानाग़ा वक्त-मोइना पर किया करें। और वो प्रार्थना है। अपने ऐबों को जो ख़्याली सूरत में उन को नज़र पड़ें, ख़ुदा के सामने रख दें और उन से सुबकदोश होने की प्रार्थना करें और साथ ही साथ अभ्यास भी करते चलें। क्या चन्दन में जो एक ठण्डी चीज़ है, आग पैदा नहीं हो सकती। क्या सूखी लकड़ी तपाने से सीधी नहीं हो सकती। उन को अपने आप को इस तरह का बनाना चाहिये कि दूसरों को उन की तरफ़ खिंचने की रग़बत पैदा हो। बाक़ी इस मामले में वो जो कुछ consult करना चाहें मुझ से हर वक्त कर सकते हैं। मैं जवाब दूँगा। मुझे ख़ौफ़ है यह ज़हर उन के मुरीदैन में न फैल जाये। इसलिये ख़ास तौर पर मैं हिदायत करता हूँ। सिर्फ़ रुहानियत काम नहीं देती, और उस के परखने वाले भी बहुत कम हैं। आम तौर पर लोग ज़ाहिर से बातिन का पता लगाते हैं। गुफ़्तगू में कशिश, लोच और नरमी होना चाहिये। और यह बात मैं सब से कहता हूँ। अगर किसी शख़्स की रुहानियत में कमी नहीं है, और ज़ाहिरा उस का दुरस्त नहीं है, तो मैं उस को मुकम्मिल नहीं कह सकता। अपना काम बना लेना और बात है, और यह दूसरी बात है। मैं ऐसे शख़्स को जो अपना काम बनाले और दूसरों को बनाने के क़ाबिल अपने आप को न बनाये, ख़ुदगर्ज़ कहने केलिये तैयार हूँ। यह अल्फ़ाज़, मुमकिन है कि सख़्त हों, मगर इन्हीं में मिठास है। अगर कारबन्द हो जाये। यह तहरीर जो मैं ने बाबू मदन मोहन लाल के लिये लिखाई है, अपने पास भी नोट कर लें और उस को अक्सर और बेश्तर पढ़ा करें ताकि उनको ख़याल बना रहे।

मुख्तसरन् हालात दौरा दक्खन देश

हज़रत क़िब्ला - अज़ीज़ रामचन्द्र का दौरा जनूबी हिन्द में तक़रीबन् डेढ़ माह तक रहा। उस ने वो कारनुमायां किये हैं जिन के देखने के लिये आँख चाहिये। जितने एहकाम उस को दिये गये थे, सब तकमील पर पहुंचा दिये। और एक ख़ास ख़ूबी इस के काम में यह थी और यह इस के दिमाग़ की तारीफ़ थी कि जगह-ब-जगह उस ने ऐसे बन्द लगा दिये कि उस के किये हुये काम को कोई ख़राब न कर सके। और एक बात क़ाबिले तारीफ़ यह थी कि उस सरज़मीं के गज़ों नीचे तक मुनव्वर कर दिया। इस के काम का तरीक़ा बेहतरीन था। स्टेशन और सरज़मीन आने से पहले, उसने, जितनी कि ख़राबियां ज़मीन में जागुज़ीन हो चुकी थीं, पहले खींच लीं। और लुत्फ़ यह था कि उस ख़राबी को भी ख़िला में रहने नहीं दिया। ख़राबियाँ जो उभार कर निकालीं, उनको भी शुद्ध कर दिया, ताकि यह ज़हर कहीं और न हलाहल बन जावे। एक जगह इस ने थोड़ी सी शरारत ज़रूर की और वो **द्वारका** में आकर; कि उन का असर निकाल कर बजाये शुद्ध करने के, मग़रबी इलाक़े में भेज दिया। कहने के लिये मैं ने इस के इस काम को शरारत से मन्सूब किया है, मगर वाक़ई तौर पर उस वक्त मेरी भी यह ही मरज़ी थी। मन्दिरों में ऐसा असर भरा है कि सौ बरस तक उन में ताक़त भरने की ज़रूरत नहीं रही। और बाज़-बाज़ सड़कों और गलियों को (में) जहाँ कि यह चला है, इस क़दर असर भर दिया है कि मराक़बा करने की जगह बन गई। बाज़-बाज़ शहर ऐसे मुनव्वर किये हैं कि हर दरोदीवार में उस का असर मौजूद है।

एक बात क़ाबिले-तहसीन यह की है कि वहाँ के कुल atmosphere के ज़र्रात को रोशन कर दिया है और ऐसी रोक कर दी है कि उन ज़र्रात को कोई ख़राब न कर सके। अक्सर ऐसा ही हुवा है, बल्कि ज़्यादातर कि शहर के शहर, मतलब लोगों से है, जुमला रुहानी स्टेजेज (stages) से पार हो जाते। मगर यह मेरी मन्शी नहीं थी। इसलिये कि क़ुदरत का काम रुक जाता और difference या तफ़ावत जो क़ुदरत की जान है, जाती रहती।

Ceylon का काम जो उस ने एक मिनट में किया है, वो कोई हज़ार बरस में नहीं कर सकता। और जिस पर लुत्फ़ यह कि यह हर वक़्त डरता रहता था कि ऐसा न हो कि मैं किसी ड्युटी के अन्जाम देने में क़ासिर रह जाऊँ। इतना ज़बरदस्त काम करते हुये भी इस को यह यक़ीन न होता था कि न जाने यह काम ख़त्म हो गया। वजह यह थी कि इसने अपने आप को इस क़दर Negative बना दिया है कि Positive की हद तक इस का ख़याल touch नहीं होता। यह मेरी ही ख़ता है। यह मिसाल दुनियाँ में नहीं मिलेगी। और मैं समझता हूँ, आगे मुद्दतों तक न मिले। इस अस्ना में Cape Comorin में जाकर एक ख़्वाहिश इस की ज़रूर पैदा हुई। और वो यह थी, कि किसी Rock को ऐसा Hypnotise कर दे कि जिस की मिसाल कभी पैदा ही न हुई हो। इसकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ **स्वामी विवेकानन्द** जी ने इस को इजाज़त भी दे दी थी और अपनी rock के क़रीब एक rock बतला दी थी मगर यह समझ कर इस ने इस काम को नहीं किया कि इस बात को कौन जानेगा। और इस rock को मेरे नाम से कोई मन्सूब क्यों करने लगा। एक लिहाज़ से यह अच्छा ही हुवा, इस लिये कि वहाँ

पर अगर ऐसा कर बैठता, जितना ज़बरदस्त कि इस का इरादा था तो वहाँ की गुज़रगाह बन्द हो जाती। और मुमकिन है कि क़िस्सों के मुताबिक़ वो हद्दे-सिकन्दरी* बन जाती।

आख़िर में इतना कहना चाहता हूँ कि इसने मेरा नाम ज़िन्दा कर दिया। और इसी की वुक़अत फ़ुक़रा की निगाह में कुछ और ही हो गई और मुमकिन है इस का रिकार्ड (Record) किसी दूसरी जगह आला फ़ुक़रा की संस्था में तैयार हो गया हो। हर बुज़ुर्ग इस के काम से ख़ुश रहा और **श्री कृष्ण जी** की निगाह अब इस पर इस काम के एवज़ कुछ और ही हो गई। सब से बड़े फ़र्क की बात यह है कि दौराने-ग़ैर हाज़री में इस के मकान पर **कृष्ण चक्र** घूमता रहा। और हिफ़ाज़त **श्री कृष्ण जी महाराज** ने अपने हाथ ही में रखी। लड़के का रेल की पटरी पर से हटा देना उन्हीं का काम था। (नोट : वाक़या स्टेशन ख़ुदागन्ज, ज़िला फ़र्रुख़ाबाद। बरख़ुरदार दिनेश चन्द्र रेल की पटरी पर बैठा। एक मर्तबा वहाँ से हटा दिया गया। दुबारा फिर बैठा, वहाँ से किसी लड़के ने हाथ पकड़ कर अलैहदा फेंक दिया। इतने ही में रेल गाड़ी आगई।) जिस वक़्त **श्री कृष्ण जी** ने जाने की तारीख़ मुकर्रर की थी, उसी वक़्त से हिफ़ाजत और निगरानी अपने हाथ में लेली थी और **कृष्ण चक्र** ग़ैर हाज़री पर भी गया। और यह दूसरी फ़रवरी तक, जब तक यह वापसी पर सो कर न उठा, यानी सुबह 9½ बजे तक, हिफ़ाज़त करता रहा। **रामेश्वरम** के बाद जो इस ने काम किये हैं, वो सब दर्द की हालत में किये हैं।

---

*Foot note: सौभाग्यशालीनता या बादशाहत की पराकाष्ठा (सीमा) बन जाती। व्यवस्था या प्रबन्ध की सीमा

5-2-45

हज़रत क़िब्ला : मैं ने **स्वामी विवेकानन्द** जी के साथ में अपने मैदान को ख़ास तौर पर बग़ौर देखा। उन में से बहुतों की शक्ल पके हुये फोड़े, जिस में कि पीप मौजूद हो, की गई है। बहुत से लोग सरापा मवाद बन गये हैं। और किसी हद तक मुझ से मुन्हरिफ़ हो गये हैं। इस के यह मानी नहीं कि मुझ को गुरु नहीं मानते बल्कि दूसरे का आसरा लेने लगे हैं। और उन का मवाद उन में भरने लगा है। कुछ लोग ऐसे भी हैं कि जो पीप की टीसन (यानी तपक) को जज़्ब समझ रहे हैं। यह मवाद इतना गहरा हो रहा है कि हर रगोरेशे में बुहोतों के सरायत कर चुका है। इस का खींचना मामूली इन्सान का काम नहीं रहा। और न इस वक्त में किसी शख़्स की ताक़त है कि इस को दूर कर सके। और न यह उस वक्त तक दूर हो सकता है जब तक कि लोग अज़ीज़ रामचन्द्र पर ईमान न लायें। बाज़ों का नर्वस सिस्टम इस क़दर ख़राब हो चुका है कि सिवाये धुवां के और माद्दी आग के कुछ नहीं रहा। इस हालत को अज़ीज़ राम चन्द्र ने मेरे हुक्म से किसी वक्त साफ़ कर दिया था मगर उन के ढ़ील डाल देने से जो मेरा ही हुक्म था, अब फिर उसी हालत पर आने लगे। और क़रीब-क़रीब आ गये। वजह ज़ाहिर है कि उन्होंने ऐसे शख़्सों का साथ नहीं छोड़ा जिन से उन को रुहानी नुक़्सान पहुंच रहा है।

बाबू मदन मोहन लाल से ख़िताब : अगर डाक्टरी उसूल के मुताबिक़ इस का तर्जुमा किया जाये तो उन लोगों में सड़न पैदा हो गई है। लूंई कोनी ने इस माद्दे फ़ासिद को सड़न कहा है। रुहानी ख़्याल

से इस को दूसरे मायनों में सड़न कहता हूँ। अगर कोई रोशन दिल आदमी उन के (उन लोगों के) सामने बैठे तो उस को अकसर लोगों से बदबू आती मालूम होगी। अब इस का इलाज नश्तर है। मुमकिन है कुछ लोगों के क़सदन् खोलना पड़ें और कुछ लोग इस सिलसिले ही को छोड़ दें। सिलसिले से मतलब मेरा मौजूदा सिलसिले से है। वो सिलसिले तो टूट चुके हैं। यह हालत मैं ने तुम लोगों के गोश गुज़ार दी। यह सही तर्जुमा उन की हालत का है। जहाँ तक कि अल्फ़ाज़ मिल सके। कुछ लोग अच्छे भी हैं। मगर सिक्का ग़ैरों का उन में से बुहोतों पर जमा हुआ है।

6-2-45

Swami Vivekanandji = I have watched the situation myself and arrived at the result that the elements who (which) are at work in degenerating **must** be removed. The idea is prevalent among your brethren that the work of your Master is to be carried on smoothly by the souls, black as they are, who have no connection with your Guru - my Lord. This is exact translation of their ideas prevailing in them like jackals. They are howling like that. The will of God Almighty is moving towards the things we are avoiding for the time being. (I allow you to sit before me just as you sit before your Guru). There is slackness on the part of B. Madan Mohan Lal in doing the godly work. A man of such a standard or stage should avoid these things. His will has been weakened. Avoid it altogether. He should have undaunted courage and unshaking will. He

should know that there is no man in the world (B. Ram Chandra excepted) of such a high standard. He has not come for these things. Throw these to dogs and keep yourself aloof. My object is that he should lead a life like a Sanyasi in true sense. I call your Guru the incarnation of Love and He is really so. He (RC) has performed his duties wilfully. He constructed the whole of the programic duty given to him. He has illuminated the whole of Southern India in spite of his pain he was suffering in the way. He carried out all what was desired from him. He has beaten the world record. I am in praise of his godly wisdom, made so by his Guru. In short, no man exists in the present world who can compete him and his work. I will again say, this is all due to his worthy Master - my Lord. He will be ever and after remembered, I phrophesy among sages, particularly.

7-2-45

श्री कृष्ण जी महाराज: सफ़र की बाबत महात्मा राम चन्द्रजी (फ़तेहगढ़ी) बहुत कुछ कह चुके हैं, और (जो) कुछ कहा है लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ सही है। राम चन्द्र ने रूहानी दुनियाँ को हैरत में डाल दिया है। ऐसे क़ीमती आदमी की वहाँ (यानी आलमे-बाला में) भी ज़रूरत है। **दुनियाँ तबादला बहुत जल्द मांग रही है।** मलेक्षों **(मलेछों) से देश पाक होना चाहिये।** यह वहाँ पहुंच कर यह काम बहुत तेज़ी से कर सकेंगे। इस की तहरीक कई मर्तबा बराहे-रास्त ज़ात से हो चुकी है। मगर अब सवाल इतना बाक़ी रहता है कि जिस

बुज़ुर्ग हस्ती ने इस को बनाया है, उस का फल उसने नहीं चख पाया। वाक़ई यह उन्हीं की मेहनत का नतीजा है, कि आज हम यह शक्ल देख रहे हैं। इस की मिसाल दुनियाँ में नहीं है। इस बात को मद्दे नज़र रख के यह राय क़ायम की गई है कि अभी इस को (RC) और रखा जावे। इस की क़ुर्बत इन्तहाई ज़ात से हो चुकी है और इस ने बहुत गहरा सम्बन्ध क़ायम कर लिया है।

8-2-45 वक्त दोपहर

हज़रत क़िब्ला : अगर ख़ुदानाख़ास्ता, ईशर न करे कि ऐसा हो। अगर भण्डारे में नाकामयाबी हो तो मैं इजाज़त देता हूँ कि **कृष्ण चक्र** की पूरी ताक़त वहाँ पर खींच देना। कुछ परवाह नहीं, किसी का डेस्ट्रक्शन हो जाये। और तुम लोग (शाहजहाँपुर वाले) ऐसे करने के बाद ही सब के सब फ़ौरन वो मक़ाम छोड़ देना। एक हुक्म मैं तुम को और देता हूँ। जहाँ पर मौक़ा समझो, **श्री कृष्ण जी** को आवाहन कर लेना। मैं यक़ीन दिलाता हूँ कि तुम्हारी बात वो टाल नहीं सकते। मैं और **स्वामी विवेकानन्द** जी साहब अपनी पूरी ताक़त से वहाँ मौजूद होंगे। अगर तुम **श्री कृष्ण जी महाराज** से कोई बात रो कर कह दो तो तख़्ता उलट जावेगा। एक बात मैं तुम को और बतलाता हूँ कि तुम्हारी इतनी इन्तिहाई क़ुर्बत ज़ात में हो चुकी है कि वो भी गरदिश में आसकती है और प्रलय का सीन बरपा हो सकता है। इन ताक़तों की तुम्हें ख़बर नहीं। वजह ज़ाहिर है कि तुम ने अपने आप को मुझ में इस क़दर फ़ना कर दिया है कि इन बातों का एहसास नहीं होता। इसलिये मैं चाहता हूँ कि किसी मौक़े पर जब तक कोई ख़ास हुक्म न

हो, तुम्हारी तबियत तैश पर न आजावे और निज़ाम गड़बड़ हो जाये। और मैं ने तुम्हें बना भी ऐसा ही लिया है। मैं यह चाहता हूँ कि ज़रूरत से ज़्यादा तुम से कोई काम सरज़द न हो।

ख़िताब बाबू मदन मोहन लालः मैं ने इस को वो ताक़त दी है कि अगर यह तैश पर आ जावे, गो यह बात क़ानून-क़ुदरत के ख़िलाफ़ होगी, प्रलय कर सकता है। मगर यह बात उस से सरज़द कभी नहीं हो सकती तावक्ते कि ऐसा वक्त न आजावे क्योंकि इस की बाग डोर मेरे हाथ में है। अगर और किसी में ऐसी ताक़तें भर देता तो वो उफन पड़ता । इसी के लिये हुक्म क़ुदरत था और वैसा ही बनाया गया। ये ताक़तें किसी को दी नहीं जातीं, हत्ताकि सज्जादा नशीन भी इन से बेबहरा रखे जाते हैं। और सच तो यह है कि यह ताकतें बहुत से आला दरजे के गुरुओं में भी पाई नहीं जातीं। आग़ाज़े-आलम से अब तक यह ताकतें महफ़ूज़ रखी गई हैं। मैं अल्बत्ता इन का भण्डार बन गया था। इस क़िस्म की तन्द्रुस्ती (RC जैसी तन्द्रुस्ती) इन ताक़तों को बरदाश्त भी नहीं कर सकती थी, मगर यह मेरा ही ज़र्फ़ था कि मैं ने नामुमकिन को मुमकिन कर के दिखा दिया। और लुत्फ़ यह है कि इन ताक़तों के इस्तेमाल में तन्द्रुस्ती हारिज नहीं है। मेरी पहुंच मेरी ज़िन्दगी में ज़ात की इन्तिहाई हालत तक हो चुकी थी, और यहाँ तक मैं इन को मुन्तक़िल कर चुका था।

अब मैं बाबू मदन मोहन लाल का हाल मुख़्तसरन् कहता हूँ। अगर उन के चचा (मुराद नन्हें यानी रघुवर दयाल) हारिज न होते और तकलीफ़ाते ज़माना यह ख़ुशी से बरदाश्त कर जाते तो यह भी

बहुत कुछ पाने के हक़दार होते। मगर अब भी बाबू राम चन्द्र को छोड़ कर दुनियाँ में सानी नहीं रखते। एक बात जो कहीं पाई नहीं जाती, वो यह है कि इस शख़्स (MM) ने मुझ से मुहब्बत बेइन्तिहा की और इसी का नतीजा है कि आज मैं उन को अपनी खुली आँख से इस हालत पर देख रहा हूँ। यही ही (मुहब्बत) एक चीज़ है। मैं तुम दोनों (MM & RC) को नसीहत करता हूँ कि अपने मुरीदैन में यह (मुहब्बत) पैदा करें। यह ही सब कुछ है और इस से ही सब कुछ हो जाता है। इसके आगे अम्ल और शग़ल सब बेकार है।

अज़ीज़ रामचन्द्र ने कभी कोई मेहनत क़ायदे के अन्दर बैठ कर नहीं की। इस की मिसाल औरों को नहीं लेना चाहिये। यह ख़ास ज़र्फ़ है। और न इस तरफ़ लोगों की तवज्जह दिलाना चाहिंये। इस की (RC) मेहनत का औसत बीस-बाईस साल में औसतन् दो तीन मिनट का पड़ेगा। वो भी इस लिहाज़ से कर लेता था कि पाबन्दी हो जाये। मगर इस बात की दूसरों को मिसाल नहीं लेना चाहिये। आज की बातें मैं ने बड़े राज़ की बतलाई हैं। अज़ीज़ रामचन्द्र ने क़ुदरत को अपनी तरफ़ इस क़दर खैंचा है कि अगर यह चाहे तो बराहे-रास्त हसब मन्शा हुक्म सादर कर सकता है। मगर इस की शराफ़त है कि मुझ को किसी वक्त नहीं छोड़ता और मैं भी नहीं छोड़ता। लाज़िम व मल्ज़ूम बन गये हैं। यह मिसाल नक़ल करने के क़ाबिल है।

बदरियफ़्त मदन मोहन लाल फ़रमाया - बाबू बृज मोहन लाल ने कुबरा से नीचे रुख़ कर दिया है। उस में ख़ुश्की दौड़ रही है। और तरी सुग़रा से भी हट रही है। तर्जुबा और अक़्ल से काम ले रहे हैं। कुबरा

का मैदान अभी कुलियतन् नहीं छोड़ा। उन के आलियान ने उन के दिमाग़ में बादशाही महक पैदा कर दी। महाराज जी और हुज़ूर बना दिया।

राजेन्द्र कुमार ने ख़याली कूद फांद का नाम रूहानियत रख लिया है। मगर वो लोच और नरमी कहां।

9-2-45

हज़रत क़िब्ला - बाबू मदन मोहन ने जो तवज्जह का असर बयान किया है, यह अज़ीज़ रामचन्द्र के वालिद माजिद की तवज्जह थी। क्या कोई शख़्स इस ज़माने में अज़ीज़ राम चन्द्र की हमसरी का दावा कर सकता है। हरग़िज नहीं। यह अज़ीज़ राम चन्द्र की तीन मिनट की तवज्जह का असर था जो उन्होंने अपने वालिद को दी थी। इस वक्त उन के वालिद में ख़ामोशी बहुत बढ़गई है। सुम-बकुम की हालत है। Power बेइन्तहा इस ने एक दम भर दी है। अब जब तक मैं दोबारा हुक्म न दूं, अपने वालिद को तवज्जह न देना। उस ने क़ुतुब और क़ुतुबुलअक्ताब की हालत से निकाल कर ग़ौसुल आज़म की हालत पर ठहरा दिया है।

S.Vivekanandji Saheb = I congratulate you. This is the first example you (RC) set before the world.

हज़रत क़िब्ला : बावजूदेकि अज़ीज़ रामचन्द्र (को) दर्द की इस क़दर तकलीफ़ है जिस को कि वो जानता है या मेरा दिल जानता है।

मगर काम में क़ासिर नहीं। यह बात नक़ल करने के क़ाबिल है। ख़ुदा सब को तौफ़ीक़ दे। आमीन। मैं ने अज़ीज़ रामचन्द्र को हुक्म दिया है कि वो बाबू मदन मोहन लाल के संस्कार भोगना शुरु कर दे। कुछ हिस्सा उस ने ले भी लिया है। इस की ज़रूरत इस लिये पड़ी कि इस के (RC) संस्कार बहुत ही थोड़े रह गये हैं। मैंने, जो इस ने बाबू मदन मोहन लाल के संस्कार हुकमन् भोगने के लिये, लिये हैं, उन में पावर देदी है ताकि भोग की शक्ल जल्द पैदा हो जावे। और उनको (मदन मोहन) भी यकगोना नजात मिले। उन्होंने ख़ांगी व दीगर मामलात की तकलीफ़ात बहुत उठाई हैं।

10-2-45

हज़रत क़िब्ला : मुझ को बाबू मदन मोहन लाल से बैहैसियत पीर के यकगोना मुहब्बत है। इलावा-अर्ज़ी वो मेरे काम में मददगार हुये हैं और आगे भी ऐसी ही उम्मीद है। और मेरी मुहब्बत भी जिस का ताल्लुक़ अज़ीज़ रामचन्द्र से भी है, मजबूर कर रही है कि मैं उन को संस्कारों से किसी हद तक relieve कर दूं। इस लिये मैं ने अज़ीज़ राम चन्द्र को हुक्म दिया है कि उन में (मदन मोहन) सिर्फ़ इतने ही संस्कार बाक़ी रखे जावें जो अपने दौरे ज़िन्दगी ख़त्म होने तक आसानी से भोग लें। बाक़ी सब उनके एवज़ ख़ुद भोगें। बाबू मदन मोहन लाल ! वाज़ा हो कि अगर मुझ को तुम से मुहब्बत न होती तो मैं अपने प्यारे रामचन्द्र को भोगने का, जिस के संस्कार मैं ने अपनी ज़िन्दगी में ख़ुद भोगे हैं, हुक्म न देता।

सवाल हज़रत क़िब्ला: ऐसी कौन से तरकीब है कि जो ख़राबियाँ हमारे सतसंग में पड़ीं, आयन्दा न पड़ें। बिरादर अज़ीज़ रामचन्द्र ने तरकीब अर्ज़ की। उस पर इरशाद हुआ कि ऐसा दिमाग़ सांचे में ढ़ला हुआ कभी पैदा ही न हुआ और आगे भी इस की उम्मीद कम पाई जाती हैं। लिहाज़ा बतरीक़ दोस्ताना या बहैसियत पीर जैसा चाहो समझ लो, मैं तुम सब लोगों को बलिहाज़ छोटाई और बड़ाई के नसीहत करता हूँ कि अज़ीज़ रामचन्द्र से फ़ायदा उठालें और जो गुत्थियाँ कि रुहानियत के रास्ते में लायनहल अभी तक बनी हुई थीं, सुलझा लें। यह वक़्त बार-बार नहीं मिलेगा। न ऐसी हस्ती फिर आने की उम्मीद है। इस मौक़े को ग़नीमत जानो। मैं यह भी तुम सब को यक़ीन दिलाता हूँ कि कुछ क़ुदरत और ज़ाते-बारी की इस में ख़ास मसलेहत है। और वो इन के ज़रिये से मदद्गार हो रही है। यह अल्फ़ाज़ मैं ज़ात की हैसियत से कहता हूँ। इस का दिमाग़ ईशरी (ईश्वरीय) दिमाग़ समझो। इस ने अपना कुछ नहीं रक्खा। यह ही वजह है कि मुश्किल से मुश्किल सवाल करते ही फ़ौरन जवाब आता है। सोचने में देर नहीं लगती। इस वक़्त मैं ने कितना मुश्किल और अहम सवाल इस के सामने रखा था। सवाल करते ही जवाब तैयार हो गया और सोने में सुहागा यह कि उस की तरकीब बेहतरीन तरीक़े में इस के ख़याल में आगई जो सवाल की मन्शा नहीं थी। मगर उस के साथ यह बात लाज़मी थी।

तरीक़ा: जब किसी शख़्स को तवज्जह में बिठा ले तो पहले ज़्यादातर उस के दिल को साफ़ करे। उस के बाद जुम्ला मुक़ामात

थोड़े-थोड़े इस हद तक साफ़ कर दे कि माद्दी ख़राबी जो अमल के मानेअ हो रही हों, दूर हो जावें। मेरी मन्शा इस हद तक सफ़ाई का नहीं है कि उस के कुल मुक़ामात खुल जावें। बल्कि रास्ते की गर्दोग़ुबार साफ़ हो जावे। उस के बाद मामूल के दिमाग़ की एक हल्की धार दिल की तरफ़ मब्ज़ूल करें और दिमाग़ की वो धार जो दिल पर नाज़िल की गई है उस का connection किसी हद तक साफ़ कर के (उसके) कारण शरीर से कर दे। अब सिखाने वाला जो बात कि मामूल में पैवस्त किया चाहता है, वो कारण में बीज रूप में रख दे। और उस की cavities को गहरा कर दे। कारण से कार्य बनता है और जो बातें बीज रूप में उस में मौजूद होती हैं, वो ही भोग की शक्ल में उतरती हैं। मगर यह मुझे फिर कहना पड़ता है कि मामूली शख़्स का यह काम भी नहीं है।

इस का काट: अगर कोई शख़्स बेहयाई से या अपनी तमाअ-नफ़सानी की वजह से या अपने आप को पुजवाने की ग़रज़ से यह तरीक़ा कर बैठे और इस को (यानी तरीक़ा मज़कूरा बाला के असर को किसी में से दूर करना हो) दूर करना मन्ज़ूर हो तो उस का **तरीक़ा** यह है कि विराट देश या बड़े ब्रह्माण्ड के कारण शरीर से (पहले) उस के रास्ते को साफ़ कर के मामूल के कारण शरीर से ताल्लुक़ पैदा कर दे और फिर बड़े ब्रह्माण्ड में इस ख़राबी के दूर करने का नक़्शा बना दे और अगर किसी और शख़्स की यहाँ तक (बड़े ब्रह्माण्ड तक) रसाई है तो उस से ऊपर का हिस्सा लेले। यहाँ तक हर शख़्स की रसाई नहीं हो सकती।

S.V.= Look here, Christ is here with us. Very big soul. We have decided together to give you some work desired by Him sometime after. Let the destruction of Europe be completed.

Lord Christ = The destruction of Europe is God's Will. Kingdoms will spring up on the ruins of Europe, in short time to come. Civilization is at its apex taking the form of destruction itself. Christianity will go away. It will take the form of something else under me, your Guru and Swamiji (S.Vivekanandji) too.

India is rising up but slowly. Lust of power is great in Europe than in any other countries of the world.

S.V. = You won't be given any work for the time being.

11-2-45

हज़रत क़िब्ला : बाबू मदन मोहन लाल! इस वक्त मेरी तबियत बहुत ख़ुश हुई। अज़ीज़ रामचन्द्र ने **तरीक़ा बैअत** में भी तरमीम कर दी (गो कि पहली बैअत भी इस वजह बेझिझक ज़रूर थी) मै इस तरमीम को रायज करता हूँ। मेरी औलाद जो है या आयन्दा होगी, इसी की पाबन्द रहेगी। यह तरीक़ा बेहतरीन है जो आज तक किसी के दिमाग़ में नहीं आया। हालांकि देखने में बज़ाहिर मामूली - मामूली मालूम होता है। मगर इस के बेशुमार फ़ायदे हैं। मेरी ज़बान क़ासिर है कि मैं इस की ख़ूबियाँ बयान कर सकूं। तजुर्बा बता देगा।

यह तरीक़ा बाबू मदन मोहन लाल जिन को इजाज़त दे चुके हैं, ज़रूरत पड़ने पर बतला देवें।

तरीक़ा : पहले connection अपने शिष्य का अपने पीर और मूरिसे आला तक क़ायम करे। उस के बाद दिल से दिमाग़ तक connection क़ायम कर के उस की ज़न्जीर (यानी पहले connection से) जोड़ दे। फिर यह तसव्वुर बांधे कि दिल से दिमाग़ से होते हुये connection मूरिसे आला तक हो गया है और उस पर हल्का ज़ोर देदे।

आयन्दा से यह ही तरीक़ा रहेगा। और यह ईजाद अज़ीज़ रामचन्द्र के नाम से **मन्सूब** की जायेगी। यह कुछ ईशरी बात है कि इस (RC) से यह बातें सरज़द हो रही हैं।

जो बैअतें कि बाबू मदन मोहन लाल ने की हैं, उन को इसी तरीक़े से दुरस्त कर लेवें और आयन्दा जो होंगे, वो और जुम्ला एहबाब जो मुझ को मानते हैं, यह ही तरीक़ा इस्तेमाल करेंगे। ताकीद जानो। एक उस्तादी का पेच इस ने (अज़ीज़ रामचन्द्र ने) और मारा। वो यह कि **श्री कृष्ण जी** से इस ने बरोह-रास्त इजाज़त ले कर बैअत किया है।

12-2-45

हज़रत क़िब्ला : बाबू मदन मोहन लाल! अज़ीज़ राम चन्द्र ने न तुम्हारी ज़रूरत रखी, न मेरी ज़रूरत रखी। आज एक नई बात और ईजाद कर दी। एक बात जो बहुत मुश्किल थी, उस को भी किसी हद तक आसान बना दिया। गो वो बज़ाते ख़ुद तरीक़ा मुश्किल है। और यह हर एक का इस ज़माने में काम नहीं है। मगर तारीफ़ इस बात की है कि इस को (RC) कैसा Hit हुआ। **पहला तरीक़ा यह है।** कि जिस वक्त मामूल के stages गुरु किसी हद तक पार कर दे तो ऐसी कौन सी तरकीब हो सकती है कि अक्सी तौर पर तय शुदा मनाज़िल या चक्रों को अपनी मेहनत से पूरी हालत में (ख़ुद) खोल ले। इस के दो तरीक़े हैं। इस ने (RC) दूसरे तरीक़े को तरजीह दी है। मैं भी उस को तरजीह देता हूँ। एक तरीक़ा यह है कि दिमाग़ से अपने दिल पर हल्की-हल्की ख़ुद तवज्जह देता चले। इस तरीक़े के ज़्यादा मुवाफ़िक़ न अज़ीज़ रामचन्द्र है और न मैं हूँ। वजह यह है कि ऐसा न हो कि ज़रूरत से ज़्यादा तवज्जह दी जाये। तरीक़ा ज़रूर है और ठीक है।

दूसरा तरीक़ा यह है कि यह तसव्वुर करे कि मेरा (यानी करने वाले का) सूक्ष्म शरीर सामने मौजूद है और उस के (यानी सूक्ष्म शरीर के) दिल पर ख़ुद तवज्जह दें। अगर यह ही करता रहा तो तरक़्क़ी होती रहेगी और अच्छी होगी। इसी की दूसरी शाख़ मुफ़स्सिल यह है। मगर यह हर एक का काम नहीं। बहुत संस्कारी और sensitive होने की ज़रूरत है। वो यह है कि पहले अपने जिस्मे

लतीफ़ के दिल पर तवज्जह देता रहे। जब उस में उस मक़ाम की फ़नाईयत आ जावे और उस के बाद बक़ा की हालत पैदा हो जावे, तब मक़ामे रूह को लेले। और जब उस में फ़ना और उस के बाद बक़ा पैदा होने लग जाये तब फिर उस के बाद ख़फ़ी और फिर अख़फ़ा को लेले। इस का फ़ायदा यह है कि सैर अच्छी और मुफ़स्सिल होगी। जब यह कैफ़ियत पैदा हो जाये, उस के बाद उस कुल हालत का connection ज़ोर के साथ दिमाग़ से अपने जोड़ दे। जिस को आलमे-कुबरा कहते हैं और फिर उसी तरीक़े से वुसअत पहुंचाने के लिये यहां से यानी कुबरा से अपने सुक्ष्म शरीर को तवज्जह दे। जब यहां पर भी फ़ना और उस के बाद बक़ा की हालत पैदा हो जाये तो इस कैफ़ियत को अपने ऊपर यानी उलिया में बढ़ा दे। और फिर इसी तरीक़े से अपने जिस्मे लतीफ़ को तवज्जह दे। जब वहाँ पर फ़नाये-फ़ना की कैफ़ियत पैदा होने लगे और बक़ा की हालत आने लगे तो इस को और ऊपर बढ़ा दे और वो ही अमल शुरु करे। इस से आगे ख़याल काम नहीं करेगा। और वहाँ पर ज़बरदस्त पीर की ज़रूरत पड़ेगी। मैं चाहता हूँ यह तरीक़ा मेरे यहां रायज हो जाये।

अगर कोई शख़्स ऐसा आ जावे जो तवज्जह में न बैठना चाहे और काम भी अपना बनाना चाहे, तो उस के लिए एक तरीक़ा हो सकता है। और यह तरीक़ा सन्यासी बेहतर तौर पर कर सकते हैं।

तरीक़ाः तीन रोज़ तक बरत (व्रत) रखे। खाने से क़तई परहेज़ करे। ख़ाली पानी पिया जा सकता है। नमक और सोडे का भी इस्तेमाल किसी हद तक ज़रूरतन् कर सकता है। ख़ुश्बूयात का

लिहाज़ रखा जाये, अगर मुमकिन हो। इस दौरान में यानी तीन रोज़ तक ज़रूरयात (यानी पाख़ाना, पेशाब, नहाना, धोना) से फ़ारिग़ होने के बाद मुर्दा आसन से पड़ा रहे। और यह तसव्वुर बांधे कि ज़ात की कैफ़ियत जिस का connection उसके दिमाग़ से है, दिल में शांत हालत में उतर रही है। और जहाँ तक हो सके यह ही शग़ल तीन रोज़ तक जारी रखे। उस के बाद यह ही अमल सुबह व शाम बल्कि दिन में कई मर्तबा किया करे। तीन महीने तक इस को करे और अपने ख़यालात शुद्ध रखने की कोशिश करे। तीन महीने के बाद फिर तीन रोज़ का और अगर हो सके तो एक हफ़्ते का ब्रत धारण करे। और उसी तरीक़े से मुर्दा आसन पड़ा रहे। और यह ख़याल बांधे कि दिल तो भर चुका है, अब रूह पर वो ही कैफ़ियत तारी हो रही है यानी नूरे ज़ाते-हक़ीक़त समा रही है। जब यह दोनों चीजें ठीक हो जायें तो तीन महीने के बाद फिर ब्रत धारण करे और उस की मियाद कम अज़ कम तीन रोज़ और ज़्यादा से ज़्यादा एक हफ़्ता । और अगर आदमी मज़बूत है तो पन्द्रह रोज़ तक हो सकती है। और यही ख़याल लतीफ़ाए सिर्रः पर बांधे। और उस के तीन महीने बाद ख़फ़ी पर और फिर उस के बाद अख़्फ़ा पर। अख़्फ़ा पर ब्रत की मियाद इक्कीस (21) रोज़ तक हो सकती है। मगर हर रोज़ मराक़बा उस को दिल ही पर करना होगा, यह ख़याल करते हुये कि जो जो मुक़ामात उस ने अपने ब्रत की रियाज़त से इस वक्त तक भरे हैं, सब भरे हुये हैं, और नूर ख़ूब आ रहा है। इसी तरीक़े से जब सुग़रा मुकम्मिल हो जावे तक कुबरा की तरफ़ रुजूअ हो सकता है। मगर वहाँ पर तरीक़ा जुदागाना होगा। वो यह कि इस कुल पैदा करदा ताक़त को ऊपर को

खींच ले और अपने पिण्डी मन को ब्रह्माण्डी मन में शामिल करने का तसव्वुर करे और वहाँ से ताक़त बराहे रास्त अख़ज़ करे। और फिर यह तरीक़ा और आगे चल सकता है यानी आगे और उस से और आगे।

(ख़िताब मदन मोहन लाल से) बाबू मदन मोहन लाल, मैं ने इस को (RC) एक बहुत सख़्त सवाल अभी हल करने को दिया। उसने बेहतरीन तरीक़े में फ़ौरन जवाब बिल्कुल ठीक दिया। यह बज़ातेख़ुद एक अलैहदा ही तरीक़ा है और ऊपर लिखे हुये अमल में भी सुग़रा के बाद शामिल किया जा सकता है। **तरीक़ा** : ब्रह्माण्डी मन में शब्द की गूंज हो रही है और वो ठोकर दिल पर पड़ रही है। मगर यह तसव्वुर थोड़ी-थोड़ी देर तक बांधना चाहिये। जितनी ताक़त पैदा होती जाये, उतना ही तसव्वुर बांधे। और जिस मक़ाम पर इस की ठोकर दी जायेगी, शब्द फ़ौरन खुल जायेगा। मगर इस तरीक़े को (शब्द वाला) आम तौर पर करने की मैं मुमानियत करता हूँ, तावक़्तेकि ब्रह्मचर्य ठीक न हो।

13-2-45

हज़रत क़िब्ला : आज तुम्हारे phase of life में एक नई बात यह थी कि बराहे रास्त तुम्हें ज़ात से फ़ैज़ मिला है। इस के मायनी यह हैं कि तुम ने ज़ात से बहुत गहरा और अटूट सम्बन्ध हासिल कर लिया है। बुज़ुर्गों से फ़ैज़ क़रीब क़रीब हस्बे इस्त-ताईयत सब को मिलता है। सब से मतलब ख़ुश एत्क़ाद और पीर परस्त लोगों से है।

मगर ज़ात से तुम्हीं को मिला है। मदन मोहन लाल, बड़े बड़े औलिया-अल्लाह इस बात को तरसते हैं।

वक्त 8 ½ शब : **श्री राधाजी** : तुम को **श्री कृष्णजी महाराज** से मुहब्बत है और वो तुम से अधिक प्रेम रखते हैं। इसलिये मुझ को अपनी माता समझो।

श्री कृष्ण जी : तुम को भगतों में सब से अव्वल जगह दी गई। तुम ने वो कमाल दिखाये हैं जिन का तुम्हें (RC) अभी पता नहीं। **राधा जी** को मुहब्बत तुम्हीं से पैदा हुई। कितने ख़ुश क़िस्मत हो। उन्होंने तुम से पुत्र भाव लेलिया है। तुम (RC) उन को माँ समझ कर मुहब्बत करो।

S.V.= We are leaping with joy, hearing these words from Lord Krishna Himself. You have gained the love of Radhaji. I will call that man blind, if he does not come to you for spiritual training.

हज़रत क़िब्ला : मेरी ख़ुशी की कोई इन्तहा नहीं । ईशर इस को (RC) मुबारक करे।

श्री राधा जी : जहाँ मुहब्बत की ज़रूरत पड़े मुझे रुजूअ हो जाना। मैं सिवाये इस के और कुछ नहीं जानती। ज़िन्दगी भर मुझे इसी से सरोकार रहा है।

हज़रत क़िब्ला : इस सिलसिले में यह नई निस्बत पैदा हुई।

14-2-45

S.V. = We are all along busy doing your work. Now the work comes of different nature. Your brethren have become the medium of instructions of Nannhey. (रघुवरदयाल उर्फ़ नन्हे) They are doing propaganda work for him and his son Brij Mohan Lal. This is the information I give you this time. When you go to Bhandara, remain alert to every point of the compass. Private work is coming to you. Devote most of your time in it, besides other important duties. Will of God is to overthrow the present juncture or the present state of affairs. You are the sole master of such duties. It depends upon you and you alone. You can issue orders to some proper persons whenever need be. There are some other agencies at work solely dependent upon you. There is a great difficulty that we are not finding any man (i.e. fully developed in spirituality like you.) So rush of work for you.

17-2-45

हज़रत क़िब्ला : हर ऐलान और मज़मून मदन मोहन लाल के दस्तख़तों से, जिन को मैं ने सैक्रेट्री मुकर्रर किया है, शाया होगा। और बाज़ाब्ता मोहर लगेगी। और यह आयन्दा किया जावे। वो अपनी इजाज़त से अपने असिस्टेंट सैक्रेट्री पण्डित रामेशर प्रसाद के ज़रिये से काम ले सकते हैं। बाक़ी सब helpers कहे जायेंगे। अगर कोई अशद

ज़रूरी काम आजावे और बाबू मदन मोहन लाल यहां मौजूद न हों तो असिस्टेन्ट सेक्रेटरी भी कर सकता है। मगर याद रहे कि आफ़िसर कमान्डिंग मैं ही रहूँगा। यानी हर बात बग़ैर मेरे हुक्म के नहीं की जावेगी और यह अहकाम बज़रिया medium उतरा करेंगे। रामेशर प्रसाद को एख़्तियार है कि वो अपने helpers इन्तख़ाब कर लें और बाबू मदन मोहन लाल को इत्तला दे देवें। Helpers वो ही रहेंगे जो बिल्कुल अपने हैं या मुझे अपना समझते हैं। मैं, ख़त्तोकिताबत के सिलसिले को और ज़रूरी बातों को जो तहरीर के मुतल्लिक़ हैं modernize किया चाहता हूँ। अगर मदन मोहन लाल को किसी काम के लिये बाहर रहने की इजाज़त दूँ तो उन से बज़रिया ख़त मेरे commands लिख कर sanction लेली जावेगी। Special Case मुस्तस्ना है। मगर उस काम की इत्तलाह ज़रूर दी जावेगी। सैक्रेट्री के पास एक रजिस्टर रहेगा। जिस में मुख़्तसर नोट हवाले के लिये दर्ज होंगे और उस की नक़ल असिस्टेंट सेक्रेट्री के पास रहेगी। इन इन्तज़ामी मामलात में जो लिखने पढ़ने के मुतल्लिक़ हैं, अज़ीज़ राम चन्द्र को मैं अलैहदा रखना चाहता हूँ। उस के दिमाग़ को इस तरफ़ फैलाना नहीं चाहता। वो सिर्फ़ फ़ैज़ का सरचश्मा रहेगा। और अहकाम उस के ज़रिये से मिलते रहेंगे। यह ड्युटी जिनके मैं ने सुपुर्द की है बिल्कुल अपनी ही समझें। ख़त्तोकिताबत के सर्फ़े के लिये मैं एक मद क़ायम कर दूंगा। जिन साहिबान को मैं ने यह ड्युटी देनी है, उन को मेरी ही समझ कर करें। और उस के यह भी मानी नहीं होंगे कि जिस काम के लिये मैं ने बनाया है उस को छोड़ देवें। वो foremost ड्युटी रहेगी।

बाबू हरनारायण साहब मग़फ़ूर यानी मदन मोहन लाल के वालिद बुज़ुर्गवार। फ़रमाया : मैं बद्री प्रशाद की क़िस्मत को सराहता हूँ। बिला मेहनत यह दर्जा मिल गया जो बहुतों को नसीब नहीं और न आगे उम्मीद है। अभी होश नहीं है, वरना साथ लाता। मेरी तबियत रामचन्द्र में फ़ना होने को चाहती थी मगर इस के कहने से जनाब लालाजी साहब (हज़रत क़िब्ला) ने रोक दिया कि यह पुत्तन (मदन मोहन) का हक़ है। इसलिये रोकना पड़ा। मैं तुम दोनों (MM & RC) को मए रामेशर के एक ही निगाह से देखता हूँ और सब को अपनी औलाद समझता हूँ। पुत्तन (MM) को लल्लन ने बहुत तंग किया। उसने इन्तहा कर दी। यह तकलीफ़ रंग लायेगी। पुत्तन, तुम एक काम करो। मैं ने जो क़िताबों का कसीर ज़ख़ीरा जमा किया है उस को मुन्शी जी की (यानी हज़रत क़िब्ला की) नज़्र कर दो। इस की ज़रूरत पड़ेगी और मुमकिन है उन्हीं की औलाद को इस का फ़ायदा पहुंचे। वरना सब ख़राब हो जायेंगी। मेरा मतलब संस्कृत के ख़ज़ाने से है। काम बहुत बढ़ेगा। और इस की ज़रूरत पड़ेगी। मैं भी अपनी क़िस्मत को सराहता हूँ कि वो (पुत्तन) मेरी रिहाई का ज़रिया बने। ज़रूरत हो तो फिर मुझे बुला लेना। (नोट : मदन मोन लाल को उन के वालिद माजिद पुत्तन कहा करते थे।)

हज़रत क़िब्ला : इस संस्कृत के ख़ज़ाने की जब ज़रूरत होगी मैं ले लूंगा। वो समझ लें, यह एक चीज़ थी जो उन्होंने मेरे नज़्र की। इस की क़द्र करना चाहिये।

सवाल : जिस्म से आज़ाद हो जाने पर बुज़ुर्गों को कैसे हर बात की ख़बर हो जाती है?

जवाब : उन के देखने की फ़ोर्स (क़ूव्वत) का उस में धक्का लगता है और चूंकि वो काफ़ी sensitive होता है, उस की ख़बर हो जाती है।

शरह (तफ़्सील) हज़रत क़िब्ला : जब कोई बुज़ुर्ग अपने जिस्म को छोड़ता है तो वो शक्तियाँ जो जिस्म से मिल कर काम करती हैं, गुमशुद्गी की हालत में अपने अस्ल में लय (फ़ना) हो चुकता है। और हर इन्द्रियां उस की ख्वाबीदा हालत में हो चुकती हैं। या दूसरे लफ़्ज़ों में यह भी कह सकते हैं कि हम आहंगी अपने अस्ल से हासिल कर लेती हैं (इन्द्रयाँ)। यानी जो परमाणु कि ज़ात में मौजूद हैं वो उस के जिस्म में कूट-कूट के भर जाते हैं। (लफ़्ज़ परमाणु सिर्फ़ समझने के लिये इस्तेमाल किया गया है। अगर इस को ज़ात की ख़ासियत कहा जावे तो ज़्यादा बेहतर होगा) और इस लिये उस का फैलाव ज़िन्दगी ही में इतना वसीअ हो जाता है कि जिस्म छोड़ने के बाद बजिन्सा क़ायम रहता है। इस को Infinite की हालत कह सकते हैं। इस लिये उस की मौजूदगी हर गोशे और हर चप्पे में मिस्ल आकाश या हवा के रहती है। अब अगर कोई शख़्स आवाज़ से या ख़याल से कोई काम करता है तो उस vibration में उस का वो फ़ेल लहर सी पैदा कर देता है। मिसाल के तौर पर यह है कि जब कोई शख़्स कुछ देखता है तो उस के देखने की फ़ोर्स का उस में धक्का लगता है और चूंकि वो काफ़ी sensitive होता है, उस

को ख़बर हो जाती है। पस इसी लिये हर बात की मोक्ष पुरुषों को ख़बर रहती है। यह जो कुछ अज़ीज़ रामचन्द्र ने लिखाया है, बिल्कुल इसी का मज़मून है और ठीक है। और यह राज़े-क़ुदरत भी है जो इस वक़्त इस की ज़बान से निकल गया। मगर इस को अल्फ़ाज़ ऐसे नहीं मिले जो इस को explain कर सकता। यह उन्हीं से ताल्लुक़ रखता है। और यह इस का मुझ से या ज़ात से हर वक़्त in touch रहने का नतीजा है।

आग़ाज़े आलम से पहले ज़ात की हालत या बज़ाते ख़ुद ज़ात को एक गेंद की शक्ल में समझने के लिये कहा जा सकता है। जब पैदाइशे-कायनात का वक़्त आया, उस में एक क़िस्म की, इरादा करते ही, हरकत पैदा हुई । हरकत पैदा होते ही ताक़तों के ज़र्रात और molecules (मोलिक्युल्ज़) यानी छोटे ज़र्रात Atoms की शक्ल में नमूदार हो गये और उस में मिस्ले माला के दानों के जमादात, नबातात, हैवानात पिरो गये। यानी इरादा करते वक़्त मख़ज़न से जो ज़ात के क़रीब था, कुल चीज़ें बरामद हो गईं जो ताक़त को साथ लाईं। और वो क़ुदरत जो धार में मिस्ल गुत्थी के नमूदार थी, वो ताक़त से पुर थी। जितनी ही वो लड़ियाँ ज़ात के क़रीब थीं, उतनी ही ताक़त उन्होंने ज़्यादा ग्रहन की और ज़ात का सूक्षमपना उन में ज़्यादा आया। अब इन्सान में, जिस में कि यह धारें पैवस्त हैं और अहाता किये हुये हैं, उस हद तक ताक़त अपने साथ लाया जिस हद तक कि धार नीचे उतरी हुई थी। इसी धार की लतीफ़, लतीफ़तर और लतीफ़तरीन, कहने के लिये क़िस्में कर दी गईं। इस की (इन्सान की) वापसी धार द्वारा जो नीचे उतरी है, नीचे से ऊपर को जायेगी यानी उल्टी चढ़ाई

करने में, उस लतीफ़तरीन हालत में जो ज़ात के क़रीब है, पहुँचेगा और उस की ताक़त, जितनी ही ऊपर चढ़ता चला जायेगा, बा-असूल मज़कूर बढ़ती चली जायेगी।

सवालात : (1) रूहानी stages कैसे क़ायम हुये और उनके ऐसे division क्यों किये गये? क्या और divisions नहीं हो सकती थीं। डिविज़न से मेरा मतलब मोटे-मोटे डिविज़न से है। (2) हट (हठ) योग की बुनियाद कैसे पड़ी और उस के बाद राज योग कैसे ज़हूर में आया? Human Psychology का ताल्लुक़ नेचर से किस तरह का है? उस के क्या क़वायद हैं? (3) इन्सान को ज़िन्दगी कहाँ से मिलती है यानी उस में शक्ति कैसे पैदा होती है? ताकि वो अपनी ज़िन्दगी क़ायम रख सके। (4) Brain के cells का ताल्लुक़ किस मण्डल से हैं और उस मण्डल की क्या कैफ़ियत है? (5) आदमी की नेचर कैसे तब्दील हो सकती है? (6) क़ुदरती असरात for और against कैरेक्टर (character) बनाने में क्या मदद् देते हैं? (7) उनके ज़र्रात का ताल्लुक़ कहाँ से है और उन के ज़र्रात कैसे तब्दील किये जा सकते हैं?

यह सवाल हैं जो मैं अज़ीज़ रामचन्द्र को हल करने के लिये दे रहा हूँ । भण्डारे के बाद इस पर रुख़ करें। कुछ point अगर समझ में आजायें तो नोट करते चलें। ज़्यादा तवज्जह की ज़रूरत नहीं।

सवाल वक्त 9 ½ बजे रात के : इस वक्त जो 9 ½ बजे रात को दाहिने और बायें तरफ़ जो हरकत अज़ीज़ रामचन्द्र के हुई थी,

उस पर कुछ वो लिखें। नोट :आपस में हम लोग बातचीत कर रहे थे। अस्नाए गुफ़्तगु में जब कि symbol (यानी लक्षण, चिन्ह) का ज़िक्र हो रहा था उस वक्त हज़रत क़िब्ला ने यह शेर पढ़ा।

शेर : **सर बसर महवे तजल्ली-ए-रुख़े जानाना बाश।**
आश्नाये यार चूं गश्ते ज़ख़ुद बेगाना बाश।।

अर्थात : महबूब (प्रेमी, प्रमिका) के चहरे की चकाचौंध कर देने वाली रोशनी (प्रभा) में सिर से पाँव तक (कुल) डूबे रहो। जब यार (प्रेमी) से जान पहचान हो जाये तो अपने आप से बेगाना (अन्जान, अपरिचित) बन जाओ।

18-2-45

हज़रत क़िब्ला: तुम्हारी माँ (चची साहिबा) ने ख़ूब चरका खाया। ख़ूब सब्जबाग़ दिखाये गये। रुपये का लालच बहुत बुरा है। वक्त 1बजे दिन : मैं बहुत ग़ोरोख़ोज़ के बाद इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि बिरजू को मुतलक़न् सलब कर लिया जावे। उन के सब चक्र ख़ामोश कर दिये जावें। (तामील हुक्म कर दी गई।) उन को बिल्कुल ठस कर दो।

S.V. When we are acknowledging your superiority, and the renowned sages of the world, there is no reason why your brethren may slack in their duties. We will remove all such things coming in the way. Let these vagabonds disappear altogether.

बजवाब प्रार्थना मुश-इर सुधार सतसंग, **भगवान् कृष्ण** ने फ़रमाया: तुम्हारे सतसंग की हालत ख़राब है। लोगों पर असर ख़ूब पड़ चुका है। मैं इस को उलट देने का हुक्म दूँगा। यह नहीं हो सकता कि इतने बड़े बुज़ुर्ग की बदनामी हो।

आख़िरी ऐलान : मैं तुम को इत्तला देता हूँ। आप लोगों की आप के गुरु महाराज ने कमज़ोरी दूर कर दी। हिम्मत बढ़ाने और रूहारी रोशनी देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। आपको एख़्तियार है कि आप इस बात पर आरूढ़ हो कर अमल करें या न करें।

हज़रत क़िब्ला: अज़ीज़ रामचन्द्र ने जब **कृष्ण भगवान** को उन के घर (सहज मार्ग उर्फ़ सत् पद पन्थ) की हालत बताई, और प्रार्थना की कि हमारे बिरादरान जो हमारे हज़रत क़िब्ला से बैअत हैं और अपने आप को वाबस्ता समझते हैं, संभल जायें। ऐसा न हो कि जब किसी बुज़ुर्ग के सामने जायें तो उन की हालत कश्फ़ कर के मेरे पीर के नाम पर हरफ़गीरी करें।

श्री कृष्ण भगवान ने जवाब दिया कि ऐसा नहीं हो सकता कि इतनी बड़ी बुज़ुर्ग हस्ती बदनाम की जा सके। और अपनी तरफ़ से ऐलान finally dictate करा दिया। अब इस को हुक्मे ख़ुदा समझो। वो यह है।

Final ऐलान : मुज़्दाबाद कि आप लोगों के संभालने और सुधारने के लिये हमारे हज़रत क़िब्ला ने हर मुमकिन कोशिश की और

तकलीफ़ें उठाईं मगर आप लोगों पर (ख़ुदा न करे इस ऐलान की नौबत आये) जूँ नहीं रेंगी। और न कुछ कहने और ऐलान का असर हुआ। इस के मानी मैं **यह समझता** हूँ कि आप लोग जो मौजूदा हालत लिये बैठे हैं, इस से **हमारे** गुरु महाराज के नाम को बट्टा लगाना चाहते हैं। आप यक़ीन रखिये कि मैं ऐसा नहीं होने दूँगा। बख़ुदा कहता हूँ कि ऐसा नहीं होगा। **मेरे** हज़रत के इन्तिहाई रहम से आप लोगों ने फ़ायदा न उठाया। **अफ़सोस** है। अब ज़रा दूसरी तरफ़ की side जो इस के बरअक्स है, ख़याल में लीजिये और असर देखिये। फ़क़त।

19-2-45 वक़्त बाद 7 बजे शाम

S.V. = The man (B.Ajudhia Nath Sahai ji) sitting before you may be trusted as the necessity demands. Never mind if the secret is out. It has to be opened some day or the other. This is my opinion. Consult your Guru, the Governing Head.

हज़रत क़िब्ला : मेरी राय भी है कि भेद खोल दिया जाये। सवाल किया कि किस तरीक़े से।

S.V. = Tell him plainly that my Master has made arrangement of his work and satsangh and it is I who is its head.

हज़रत क़िब्ला : खोल दो। देर करने की ज़रूरत नहीं।

S.V.= Tell him that I receive the orders direct from Him as well as from me. If he doubts my sincerity, he can put me to trial. Add that it will remain confidential till it is announced in Bhandara. He is also working in place of me.

हज़रत क़िब्ला : अज़ीज़ रामचन्द्र और मदन मोहन लाल 29 मार्च सन् 45 ई० को फ़तेहगढ़ पहुँच जायें। बाबू मदन मोहन लाल 28 मार्च को फ़तेहगढ़ पहुँचें। अगर इन्स्पेक्टर साहब उन के साथ ज़ा सकें तो अच्छा है, वरना भण्डारे में ज़रूर शरीक हों। मेरी तरफ़ से दावत है।

20-2-45

S.V.= I have been to Fatehgarh this very time. Your aunt is lamenting the loss of **Jaggu**. There are some agencies at work against you. They have filled in the air of inhospitability to you all, I mean Shahjahanpur. I assure you that this will not happen. The wave of Almighty is moving towards destruction altogether. We are to some extent obliged on account of your checking us from doing so. Your Guru is a bit perplexed, considering the situation before us. What is the news I brought for your information. What is to be done, do soon. Don't waste time. We won't hear even a word after Bhandara, and what we order, it will be incumbent upon you and your subordinates, unhesitatingly. Tell him (इन्सपेक्टर साहब) to be cautious. He will get reward of his doings. I trust him much as he is related to my Lord, the

Supreme Authority. We have been busy to handle the situation all night long. But they move on to some other way, that is the difficulty on account of you. Because you are kind-hearted to them, we don't desire. For this very reason, we are giving allowance. I am a man of dynamite spirit, and cannot bear such things and happenings. That is why your Guru has given me charge of his work. (I tell you the truth, had it been the case with me, I would have annihilated the wrong persons altogether) I have taken you as my medium, who to some extent in this matter, follows the footprints of his Guru, the Kind one. I will make you alright. I mean to bring you on the path I follow, if opportunity presents itself. I pray that such things we are neglecting may not happen. Let us wait the result of Bhandara. Doom is sealed.

22-2-45

हज़रत क़िब्ला : कुछ इस ज़माने में ऐसा हो रहा है कि अपने आप को बेदाग़ बचाना बहुत मुश्किल है। मर्द वो है जो बेहुमा और बाहुमा की ज़िन्दगी बसर करे। संस्कारों का असर atmosphere में इस हद तक पड़ गया है कि लोगों के ख़यालात साबित रहने नहीं देता और यह क़सूर अपना ही है। Will अपनी इस क़दर कमज़ोर कर दी गई है कि बचाव की सूरत पैदा नहीं होती। वजह यह है कि ख़यालात को तित्तर बित्तर रखने में लोगों को लुत्फ़ आता है। यह किसी से भी नहीं होता कि एक काम ख़त्म करने के बाद उससे अपने आप को आज़ाद समझ लें। और उस के बाद दूसरा काम लें। दिल की

परेशानी की वजह आम तौर पर ज़्यादातर यह ही होती है कि बहुत से ख़यालात एक दम से बांधे जाते हैं। या किसी ख़याल पर इस क़दर ज़ोर दे दिया जाता है कि वो दिल पर असर करे। इस से बचने की तरकीब यह है कि किसी काम को जो ईशर (ईश्वर) से मुतल्लिक़ है उस को गहरा पकड़े और उसी को अपनी निजात का ज़रिया बना लें। यह ही तल्क़ीन हमारे यहाँ सब को दी जाती है। ज़्यादा कामयाब वो ही होता है जो इस नुस्ख़े पर अमल करता है। सूरत कोई भी एख़्तियार की जावे, इस में चन्दाँ हर्ज नहीं। मतलब, मतलब से है। एक बात और ज़रूरी है जो हर शख़्स को करना चाहिये । वो यह है कि अपने आप को ऐसा बना ले और मुहब्बत और भक्ति में ऐसा गर्वीदा हो जावे कि इसी को मुख्य समझे। अब सवाल यह पैदा होता है कि यह बात कैसे नसीब हो सकती है। इस का जवाब यह है कि ईश्वर का रूप किसी भी-रूह में जिस को वो मुकम्मिल समझता है, समझ ले। और उस से मुहब्बत करना शुरू कर दे। एक बात फिर भी बाक़ी रह जाती है कि यह जज़्बा पैदा कैसे हो। इस का जवाब नेक एमाली है। यह सवाल फिर भी हल नहीं हुआ। इस लिये कि यह ख़याल पैदा होता है कि हम नेक एमाल कैसे बनें। इस का जवाब प्रार्थना है। और दूसरों का अदब और लिहाज़ की आदत है। एक सवाल और पैदा होता है कि हम इस हालत पर कैसे आवें। इस का जवाब नेक सोहबत है और बुज़ुर्गों के और भगतों के क़िस्से भी इस के जवाब में शामिल हैं। Will power बिला किसी अमल और शग़ल के कैसे मज़बूत हो सकती है? इस का ज़वाब यह है कि किसी मुख्य काम को ले लें बाक़ियों को दूसरे और तीसरे दरजे पर समझे। यह सवाल फिर भी हल नहीं हुआ। ऐसा अपने आप को कैसे बनायें जो यह बात सरज़द

होने लगे और आदत पड़जाये? इस का जवाब यह है कि पहले यह इरादा कर ले कि हम को अपनी will या इच्छा शक्ति मज़बूत बनाना है। उस के बाद फिर उस काम को लें। इस का नतीजा यह होगा कि वो फ़िलास्फ़ी जो अज़ीज़ राम चन्द्र ने **कारण** की निस्बत कभी कही है, उस में नक़्श बन जावेगा। और वो काम जो इसी के नुक़ए निगाह से लिया गया है, मददगार होगा। अब सवाल यह पैदा होता है कि इस का नक़्श **कारण शरीर** में कैसे बनायें। इस का जवाब यकसूई है। सवाल फिर भी हल नहीं हुआ। वो यह कि यकसूई कैसे पैदा हो। इस का जवाब यह है कि अपने आप को पहले यकसू समझ ले। इस को फ़र्ज़ करना कहते हैं जो अज़ीज़ रामचन्द्र ने शग़ले राब्ता में अकसर कहा है। और यह उसी की ईजाद है। फ़र्ज़ करने का तरीक़ा यह है कि उस वक़्त उस के ख़िलाफ़ ख़याल पैदा न करे बल्कि वही ख़याल बांधे जो उस को करना और कामयाबी चाहता है। यह अमल दुनियाँदारी के हर काम में किया जा सकता है बशर्ते कि नेक हो।

वक़्त 5-45 बजे शाम

हज़रत क़िब्ला : बड़ी ख़ुशी का मक़ाम है कि अज़ीज़ रामचन्द्र ने इतना घना सम्बन्ध ज़ात में जोड़ लिया कि बराहे रास्त एहकामे ईज़दी बशक्ल श्रुति सादर होने की आज से शुरुआत हो गई। मैं ने अज़ीज़ रामचन्द्र को जैसी तालीम और जिस तरीक़े की दी है, इस की मिसाल नहीं मिलेगी। बड़े-बड़े लोगों के (मुराद फ़ुक़रा से है) वहमो-गुमान में नहीं आसकती। और सच पूछो तो यह उस के अहल भी था। बिल्कुल नये ढ़ंग की तालीम की है। मैं ने जो ताक़त इस में

(RC) भरी थी लोगों की तवज्जह उस से लग कर उछल जाती थी। मगर यह काम कुछ अरसे के बाद किया था जब कि मुझे यक़ीन कामिल हो गया था कि यह इस के अहल है। और मेरी सज्जादा नशीनी के क़ाबिल है। ज़ाहिरा परदे पर तवज्जह का लोगों के असर होता था और जब कोई अन्दरूनी परदे का इन के ख़याल बांधता था तो वो ख़ुद Hypnotize होने लगता था। एक छुपी हुई बात और बताता हूँ कि जो शख़्स इन को तवज्जह देता था वो ख़ुद मुस्तफ़ीज होने लगता था और समझा यह जाता था कि मेरी तरफ़ से फ़ैज़ है। बाबू मदन मोहन लाल **ऐसी तालीम सिर्फ़ एक शख़्स को दी जा सकती है**। और यह उस हालत में हो सकती है कि जब दोनों में काफ़ी हम आहंगी पैदा हो गई हो। यह ख़ुदादाद नेमत है। अपने बूते का नहीं। इस शख़्स को वाक़ई तौर पर किसी ने सही गाइड नहीं किया बल्कि धोका ही देना चाहा। शग़्ले-राब्ता में जो इस बेचारे को किसी ने नहीं बतलाया, बल्कि मना किया गया, इसी की ईजाद-हन्दा रही और वो सही उतर गई। चूंकि ख़ुदा को उन को (RC) मौजूदा हालत में लाना था, इस लिये यह अमल ख़ुद बख़ुद शुरु हो गया। बाबू मदन मोहन लाल ! एक बात बड़ी बदतमीज़ी की है कि जो लोग (मुराद मुरीदों से है) आम तौर पर किया करते हैं। शग़्ले राब्ता में हिस्सा जिस्म यानी सिर का ख़याल बांधते हैं। **अलैहदा तसव्वुर में कुल जिस्म का ख़याल करना चाहिये**। और यह ही अज़ीज़ रामचन्द्र ने किया था। लुत्फ़ यह है कि अज़ीज़ रामचन्द्र को यह गिलान ही रहता था । मुकम्मिल हो जाने पर भी कि मैं शग़्ले राब्ता ठीक तौर पर नहीं कर पाया और इसी ख़याल को ले कर मुझ से इस ने दरियाफ़्त किया था कि मुझ से शग़्ले राब्ता नहीं होता। मैं

ने सिर्फ़ इतना जवाब दे दिया था (ज़्यादा कहना मसलेहत न समझा) कि तुम से नहीं होगा, इस लिये कि तुम में फ़नाइयत मौजूद है। मगर फिर भी इस को चैन न आया। इस ने उस की लतीफ़तरीन सूरतों में मेरी याद की और जब याद भी भूलने लगी तो अपनी theory के मुताबिक़ जो इस से पहले ईजाद कर चुका था, फ़र्ज़ कर लिया था कि मैं अपने पीर की याद में हूँ। और उस के बाद भी उस ने बहुत सी सूरतें इस की बदली और कोई न कोई तरीक़ा ऐसा ईजाद कर लिया कि किसी न किसी शक्ल में शग़्ले राब्ता होता रहे। यह बात उस की उस रोज़ तक रही जब कि मैं ने बन्दिशें तोड़ी हैं। इस के बाद भी इस ने उन बन्दिशों की ताक़त से उसी बात के ताज़ा करने की कोशिश की और करता रहा। जिस का नतीजा यह हुआ कि मुझ को बाबू मदन मोहनलाल के दिल में यह बात डालना पड़ी कि इस को ऐसा करने से रोक दिया जावे। वजह यह थी कि उस पूरी ताक़त से जो बन्दिशें तोड़ने पर इस के अहसास में आई, रुजूअ हो गया था। यह ही शग़्ले राब्ता की आख़री हालत थी जो इस ने क़ायम रखी। इस की आदत भी मुद्दतों से पड़ी हुई थी, लिहाज़ा इस ताक़त का इस्तेमाल उसी की तक़वीयत देने के लिये कर दिया।

मैं ने ख़ुद आज **एक तरीक़ा** ईजाद किया, वो यह है कि एक शख़्स कोई शेर लेले और उस को बार-बार पढ़ता रहे। शेर ऐसा होना चाहिये जिस से मुहब्बत में फुरना हो। जो (शख़्स) शेर पढ़े, वो उस को भरता रहे और दूसरा शख़्स जो काफ़ी ज़बर्दस्त होना चाहिये, उस असर को हल्के-हल्के खींचता रहे। मगर उस वक़्त खींचे जब कि लहरा शुरू हो जाये। वो इस तरह पर कि जो कैफ़ियत या जज़्बा जो

उनमें (लोगों में) भरा जा रहा है, वो भरने के बाद आहिस्ता-आहिस्ता मेरी (खींचने वाले) तरफ़ आ रहा है। बहुत करी will बांधने की ज़रूरत नहीं। इस लिये कि भरने वाला इस हद तक नहीं भरता और न भरना चाहिये। इस से फ़ायदा यह होगा कि वो लताफ़त का मज़ा चख चुकेंगे और हल्का सेंक उनके चक्रों पर बैठ जायेगा। मगर यह तरीक़ा हर कस व नाकस के करने की ज़रूरत नहीं। बाबू मदन मोहन लाल इस को कर सकते हैं मगर उस वक्त अज़ीज़ रामचन्द्र को सलब करने के लिये बिठालना पड़ेगा। और जब अज़ीज़ राम चन्द्र ऐसा करें तो उन को ख़ुद (मदन मोहन) बैठना पड़ेगा। इस से मतलब यह है कि दोनों हस्तियां इस के लिये ज़बर्दस्त होना चाहिये । इस की हर शख़्स को इजाज़त नहीं देना चाहिये। नुस्ख़ा मुजर्रिब है। और यह भी हो सकता है कि जब दो शख़्स ऐसे इकट्ठे न हो पायें तो करने वाला ख़ुद ही भरता चले और ख़ुद ही सलब करता चले। इस काम में राम चन्द्र का तरीक़ा मुझे पसंद आया। वो यह है कि जो दौर शुरु करे, वो अभ्यासियों से pass होता हुआ अपने ही में लेता रहे। यह बेहतरीन तरीक़ा है। ऐसी हालत में जब कि दूसरा शख़्स बड़े पाये का मौजूद न हो।

23-2-1945

हज़रत क़िब्ला = मैं ने इस क़लील अर्से में, जिन्होंने मुझे इमदाद दी और मददगार साबित हुये और वाक़ई मदद् की, उन को एक अच्छे स्टेज पर जो दूसरे को (करना) मुहाल था, खड़ा कर दिया। अब सवाल पैदा होता है कि मैं ने ऐसा क्यों किया? क्या मेरी

ख़ुदगर्ज़ी कही जाये या इस को हुक्मे ख़ुदा समझा जाये? यह दोनों बातें अपनी-अपनी हालत में सही हो सकती हैं। बनाने का मक़सद वाक़ई तौर पर कुछ और था, और है। ख़ुदाई काम में इन लोगों को मदद् देना चाहिये, और मदद् देते भी हैं। पहली बात तो यह ख़त्म हुई। अब दूसरी बात शुरु होती है। वो यह है कि मेरे सतसंग की हालत बहुत बिगड़ी हुई है। इस को तुम सब जानते हो और मैं कहता चला आया हूँ। बस इस का संभालना अपना फ़र्ज़ समझें। तरीक़े मुझ से पूछते जायें। मगर इस काम के लिये रहबर की भी ज़रूरत है। और वो ऐसा शख़्स होना चाहिये जिस का बराहे रास्त मुझ से ताल्लुक़ हो ताकि अहकामात उन तक पहुंच सकें। और मेरी तामीले-हुक्म कर सकें। अब इस के लिये यह लाज़िम आया कि हर बात जिस से मक़्सद हल होता हो, मुझ से दरियाफ़्त कर लेना चाहिये। मेरा औज़ार मौजूद है, इस के बार-बार कहने की ज़रूरत नहीं। अब जो इन्तज़ाम मैं ने सोचा है, ज़ाहिर करता हूँ। वो यह है कि बाबू मदन मोहन लाल बदायूँ रहें और रामेशर् ज़िले (शाहजहाँपुर) का काम करें। मगर यह याद रहे कि इन में से हर शख़्स एक दूसरे के सर्कल में काम कर सकता है । वाक़ई तौर पर कोई सर्कल नहीं है। इन्तज़ामन् बना लिया गया है ताकि लोगों को सहूलियत हो। लोगों से मतलब मेरा सीखने वालों से है। इख़लाक़ की दुरस्ती उनका (मदन माहेन और रामेशर) फ़र्ज़ होगा और साथ ही साथ रूहानियत की भी तालीम होगी। अब सवाल यह पैदा होता है कि इख़लाक़ कैसा होना चाहिये। इस का जवाब यह है कि मोअल्लम ख़ुद मेरी रहनी सहनी अख़्तियार करें और इस तरीक़े की तालीम उन को देवें।

सवाल : यह बात कैसे मुमकिन हो सकती है?

इस का जवाब यह है कि ख़ुद उस (इख़लाक़) के नमूने बन जावें जो मेरा था। इस बात की तरफ़ बहुत ज़ोर देना चाहिये और प्रार्थना के तरीक़े इस की कार-बरारी के लिये इस्तेमाल करना चाहियें। **यह मैं सब से कहता हूँ।** रामेशर को ज़िले में और जहाँ मैं भेजूँ, दौरा करना पड़ेगा और करुणा शंकर की मदद् करना पड़ेगी। बाबू मदन मोहन लाल भी जहाँ मुनासिब हो, इस को (रामेशर प्रशाद को) और करुणा शंकर को भेज सकते हैं। यह सब काम मेरा ही होगा। इस के आगे मैं जिस वक़्त, जो मुनासिब समझूंगा, हुक्म दूँगा।

25-2-45

S.V. = I have been intending to reach you by this very train instead of Pt. Rameshwar Parshad who is busy with his mother. You can call me or any (one) of us when you require help. We are all busy with the work of an important nature, so can't leave station. Drop this letter at once.

(नोटः यह ख़त बाबू करुणा शंकर के वास्ते डिक्टेट कराया गया था)

हज़रत क़िब्ला: गाना मेरे सतसंग में रायज कर दो। मगर गवईयों और ढ़ोल-ताशे वालों को बुलाने की ज़रूरत नहीं और न क़व्वालों को invite इस काम के लिये करना चाहिये। सिर्फ़ तवज्जह

देने वाला गा सकता है। आम तौर पर सब कोई सतसंग या महफ़िल में नहीं गा सकता। अगर तवज्जह देने वाला ज़रूरी समझे और लोगों की तबियतें उचाट हों तो एक दो ख़ास प्रेमियों को गाने के लिये हुक्म दे सकता है मगर हर मौक़े पर नहीं। जिस शख़्स को तवज्जह देने की क़ाबलियत है वो ही क़ाबिले तरजीह हो सकता है और उसी को तरजीह दी जा सकती है। महफ़िल में या समाधि पर, ख़्वाह मेरी हो या तुम्हारी, तवायफ़ें कभी हरगिज़ न बुलाई जावें। इस की काफ़ी एहतियात रखी जावे।

26-2-45

हज़रत क़िब्ला : मैं फ़तेहगढ़ से आ रहा हूँ। Situation स्टडी (Study) कर चुका। वक़्तन फ़वक़्तन् तुम को बतलाता रहता हूँ। एक ख़ास हस्ती, स्वामी विवेकानन्द जी को, इस काम के लिये छोड़ दिया है। जो अब तक असल भण्डार में वापस नहीं हुये। और न वापसी का इरादा है, जब तक कि काम ख़त्म न हो जाये। यह ऐसी बुज़ुर्ग हस्ती हैं जिस का सानी नहीं। अब नफ़्से-मतलब पर आता हूँ। लल्लू (इन्सपेक्टर साहब) को मैं एक काम सुपुर्द करता हूँ जो उन्हीं के करने का है और उसका उजर दूंगा। वो यह है कि वो जिस वक़्त फ़तेहगढ़ पहुँचें तो अपनी चची से इस तरह पर हमकलाम हों कि उन को अब तक जो कुछ समझाया गया है, या मुख़ालफ़ीन ने कहा है, वो बिल्कुल ग़लत है। जिस शख़्स के बारे में या जिन अश्ख़ास के बारे में जो शाहजहाँपुर के साकिन हैं, ख़याल दिलाया गया है, या जो कुछ भी कहा है, उस का मतलब कुछ और है जो अन्क़रीब उन को रोशन हो

जायेगा। फ़िलहाल उन के दिमाग़ को जो Poison किया गया है, उस को दूर करें और जो नफ़रत उन को पैदा हो गई है, उस को हटा लें। और इस के मुतल्लिक़ जो ज़रूरी बातें हों, वो भी करें। मतलब यह है कि उन को इस हद तक हमवार कर लिया जाये कि मामला खोलने से पहले वो राहे रास्त पर आ जावें। हां इतनी उनकें (चची साहिबा) लिये इजाज़त है कि जब यह मामला खोला जाये और जिस शख़्स की निस्बत हो, उस को अच्छी तरह से तोल लें कि जो आया वो उन से ऐसी मुहब्बत रखता है जो एक पुत्र को माता से होना चाहिये। एक एहतियात ज़रूर रखें कि यह मामला, जब तक रामचन्द्र न पहुंच जावें, और मैं हुक्म न देदूं, उस वक्त तक उन से और सब से पोशीदा रखें। जिस वक्त यह मामला खोला जाये, लल्लू (इस्पेक्टर साहब) की मौजूदगी लाज़मी है। और ऐलान के वक्त उन को होना चाहिये। और बेहतर तो यह है कि वो इस कारे-ख़ैर को जो राम चन्द्र के मुतल्लिक़ है, अपनी ज़बान से ऐलान करें। अगर इस काम को उन्हों ने कर लिया तो यह बात मेरी बायसे - ख़ुशनूदी होगी। और उनका नाम उस तवारीख़ में जो राम चन्द्र के बाद लिखी जायेगी, मोटे हरूफ़ों से तहरीर होगा। मैं यह नोट जो बना रहा हूँ, राम चन्द्र की जीवनी में शामिल होंगे। सब बुज़ुर्गों का मन्शा इस की जीवनी लिखने का है। और मेरी भी जीवनी इस के साथ-साथ रहेगी। क्यों कि इस से ज़्यादा मुझ को कोई न समझ सका। मैं फ़तेहगढ़ फिर जा रहा हूँ। स्वामी विवेकानन्दजी ने क़सम खाई है कि मैं असल भंडार में उस वक्त वापस हूँगा जब कि काम को ख़त्म कर लूंगा।

S.V. = 7 ½ PM Here is a very big soul before you.

called **Guru Nanak**. He wants to give you a sitting. He is going to merge in you. He has merged in you. He has brought a great work for you which he will himself dictate.

गुरु नानक देव: मेरी प्रार्थना आज बर आई। मैं तुम्हारे गुरु को धन्यवाद देता हूँ कि उस ने तुम को ऐसा बनाया कि सब की निगाहें अब तुम्हीं पर जाती हैं। मेरा काम बहुत बिगड़ा हुआ है। जहालत बढ़ रही है। रूहानियत से सरोकार नहीं रहा। सिख एक पोलिटिकल क़ौम बन गई। जौहर दिखाने का वक्त नहीं रहा। उस वक्त में यह ठीक था, जब कि मुसलमानों से युरिश शुरू हुई थी।

S.V. = I give you authority on his behalf to train his disciples.

गुरु नानक : बस इस वक्त मुझे इतना ही कहना है। तुम इस वक्त अपने काम में बहुत मसरूफ़ हो। इस के बाद देखा जायेगा। एक बात मैं ज़रूर कहूँगा कि तुम ज़िन्दगी में उस को सुधार नहीं सकते। तुम्हारा काम ज़िन्दगी के बाद शुरु होगा। लेकिन इस के यह मानी नहीं हैं कि अपनी ज़िन्दगी में ऐसा करने से बाज़ रहो।

S.V. = Now you will receive dictates direct from him as well. I am going back to my work, which your Guru is conducting during my absence. I don't want to trouble Him any more. Going back.

हज़रत क़िब्ला : मदन मोहन लाल! इस वक्त इस ने कितना

अच्छा इख़लाक़ बरता। जिस वक्त गुरु नानक साहब ने इस को इजाज़त दी, मैं मौजूद न था। अगर उस वक्त गुरु नानक के कहे हुये को स्वामी विवेकानन्द जी की मौजूदगी में मुझ पर रख देता तो उन की कितनी तोहीन होती। इसने बजाये मेरे उस वक्त उन्हीं से काम लिया, और यह ही अदब था। मुझ (हम) दोनों को इस के ऊपर बराबर हक़ है। इस को ऐसा ही करना चाहिये था। मेरा जी ख़ुश हुआ। और **जब यह ध्यान में बैठा** तो **मेरा ख़याल** था, उस वक्त यह इख़लाक़ बेहतरीन था। मैं ऐसे लोग जमायत में चाहता हूँ मगर अफ़सोस तमन्ना बाक़ी ही रह जाती है। यह बात कोई मुश्किल नहीं गो बादी-उन-नज़र में मुश्किल मालूम होती है। बस थोड़े से चिपकने की ज़रूरत है। मगर वो चिपकना ऐसा हो कि फिर न छूटे। यह मन्त्र आज मैं बहुत अच्छा बताता हूँ। हर शख़्स के लिये मुफ़ीद होगा। मदन मोहन लाल अपने मुरीदों को हिदायत फ़रमावें कि ऐसा बनने की कोशिश करें। और मुझ को ऐन ख़ुशी होगी, अगर सब लोग ऐसा कर दिखावें। मैं समझूँगा कि मेरा मिशन पूरा हो गया और कुछ करना बाक़ी नहीं रहा।

1st March, 1945

श्री कृष्ण जी महाराज : स्वामी विवेकानन्द जी अब तक भण्डार में वापस नहीं गये। क़सम खाई है कि भण्डार में वापसी उस वक्त होगी जब काम ख़त्म कर लूँगा। ख़्वाह ता-क़यामत हमें रहना पड़े। गो ऐसा नहीं होगा। एक बात और है कि मैं ने तुम्हें अपनी पूरी ताक़त का इज़्हार करा दिया। इस को अपनी ही समझो। तुम्हारे पीर

के विसाल के वक़्त उन्होंने भी यह ही तरीक़ा किया था। उन को एहसास हुआ था। वोही मैं ने किया है। इस को अपनी ही समझो। इसका ताल्लुक़ या connection बराहे रास्त हो चुका है। इस को मुन्तक़िल समझो।

S.V. = I am leaping with joy that from this day you are the master of such a great power. Utilize it in Bhandara. I will tell you the method for its utilization and also the point. Nobody can stand before such a great power. You can make it a destructive weapon.

2-3-45

S.V. = I have been working all along day and night, making your way smooth and glossy. I have taken up the work practically since this morning, and selected a few persons for destruction. One thing is pricking me to a great extent, that a great havoc is wrought by the persons, whom the Lord thought as his own. His brother too is an example. Next comes His nephew in one sense and the next nephew in other sense. You have made them target leaving one. I am postponing the destruction of Mathanni Babu for the time being and Brij Mohan Lal too. There is a great idiot in your society called Rajendra Kumar. Have no hopes from him. He is going his own way and follows nobody. I will see you in Bhandara. Till that time I remain there. Hypnotize my Lord's Samadhi with full power as soon as you reach there. I want

Samadhi, **"The Rising Sun"** better than anything in the world. I will be there with whole sole destructive power, move it when necessary. You can knock it down at any moment, that is the only work I took up now and the Shakti of Daya (दया) will rush up from your Lord. You can utilize it if so required. Have this note with you. **Lord Krishna** has ordered me just now to annihilate the persons we don't require.

हज़रत क़िब्ला : बाबू मदन मोहन लाल ! **हुकम ख़ुदा से मजबूरी है, जो उस को मन्ज़ूर है, वो हो कर रहेगा। फ़क़ीर को रिश्ते से कुछ ताल्लुक़ नहीं।** यह मैं तुम लोगों को भी तल्क़ीन करता हूँ। इस का ख़याल इस ज़िन्दगी में और इस के बाद भी रखें।

S.V. = I have made Mathanni Babu as target for destruction. One chance is given by your Guru. I remember the letter and the words of my Lord. There is one remedy for him that if he prostrates himself before you, begging pardon for his letter. Then the least punishment may be awarded. Punishment he will get. These are my Lord's words given in the letter. I can bear everything, but not the words touched in the heart of my Lord, your Guru. How this happens? When anything touches you. These are the words of Lord Krishna made direct to me. Unless he comes down on his knees, I won't excuse him.

3-3-45 वक्त 2-40 PM

हज़रत क़िब्ला : नन्हें इस वक्त भी न चूके। चाहा कि यह तकलीफ़ रामचन्द्र की तरफ़ मुन्तक़िल कर दें, मगर कुछ न हुआ।

4-3-45

हज़रत क़िब्ला : इसने वो मसला जिस को काया पलट कहते हैं, इतना अच्छा हल किया है कि ऐसा हल होना मुश्किल था। मैं अपनी क़िस्मत को कहाँ तक सराहूँ कि मुझ को ऐसा शख़्स मिला। जितनी जल्द इस ने यह मसला हल किया है, अगर फ़िलास्फ़र भी इस को हल करना चाहते तो उन की ज़िन्दगी का गिराँमाया हिस्सा सर्फ़ हो जाता और मुमकिन था कि हल न होता। इस की (RC) निगाह हमेशा point ही पर जाती है और वहीं hit होती है, जहाँ पर कि ज़रूरत है।

S.V.= I am leaping with joy hearing the news from your Guru, my Lord, of a new invention, difficult to creep in one's brain. I prophesy that such a man will never born again. Happy are those, who make use of time. Can anybody claim to be so, among your brethren, who dream of my Lord's place. I say the same thing to my missionaries. Congratulations. Let me finish my work. You will get reward for it. I will speak up to Lord Krishna and my Guru, too.

ख़ते आमदा सुनने के बाद : **S.V.** = 5.00 PM Your Guru has gone to Sikandarabad. He is doing havoc. Check Him,

Check Him soon.

(नोट : हज़रत क़िब्ला से फ़ौरन प्रार्थना की गई। हज़रत जो काम उस वक़्त कर रहे थे, उस से रुक गये।)

श्री कृष्ण जी महाराज : 5.25 PM इस वक़्त के ख़त की ख़बर मुझ को भी पहुँच गई।

S.V. = I have been studying the situation so far, doing my work at the same time. A few persons must see the end, disturbing my Lord's work. My step will be serious after Bhandara. They have troubled my Lord to a great extent. I will take revenge, and made my nature so. Then comes my work. There are a few gentlemen among you who yield to some extent. Others are going the same way akin to Sri Krishna (डा० श्री कृष्ण). He is a man of mean nature and not fit for the society. It was my Lord's ability that He rose him to the level of polished man. This is the only person who can pounce upon you. You did your duty, don't fear. If he comes in Bhandara, remain alert. You should be guarded in every way. There is a fear of your life but it will not happen. Your Guru has given you sufficient directions. I suggest one thing more, when you go to sleep in the night, one of you must (remain) awake as long as you are sleeping. The man selected for this work should be strong and healthy and all of you should remain near, in the same room or compound. I won't allow you to go anywhere.

हज़रत क़िब्ला : स्वामी जी ने जो कुछ फ़रमाया है, इस की एहतियात लाज़मी है। हालांकि किसी की ताक़त नहीं जो मेरी मौजूदगी में ऐसा कर सके। शान्तिपाठ में वो लोग जो workers हैं और जिन के ताल्लुक़ रामचन्द्र की हिफ़ाज़त है, शरीक न हों। इस में मदन मोहन लाल और रामेशर भी शामिल हैं।

5-3-45

हज़रत क़िब्ला : आयान्दा से मैं मुमानियत करता हूँ कि यह तरीक़ा काया पलट अगर किया जावे तो मेरे सामने किया जावे। या अज़ीज़ राम चन्द्र के सामने। अपने शिष्यों पर यह तरीक़ा हरगिज़ न किया जावे। अगर ऐसी ज़रूरत पड़ जावे तो अज़ीज़ राम चन्द्र के पास भेज देवें। इस में अन्देशा इस बात का है कि कहीं संस्कार उतर कर एक जगह इकट्ठे न हो जावें। और भोग की शक्ल फ़ौरन अख़्तियार कर लें। बस इस में यही ख़तरनाक हिस्सा है।

6-3-45

हज़रत क़िब्ला : मेरी लाइफ़ में नन्हें का नाम कहीं पर नहीं आयेगा। **<u>मुतल्लिक़ा राम सन्देश</u>** : मुतल्लिक़ा जीवनी (1) मगर ज़माने ने ऐसा पलटा खाया .....

(2) और इस क़लील तन्खाह में ईमानदारी से गुज़र किया .....

इस की कितनी जिल्दें छपी हैं और उस में से कितनी, फ़रोख़्त हो चुकी हैं। मैं समझता हूँ कि जितना लिट्रेचर अब तक छपा है, सब तुम्हारे पास आना चाहिये। और बेहतर तो यह होगा कि जिन लोगों ने कि यह किताबें ख़रीदीं हैं, तुम को वापस कर दें। और चाहें तो उस की क़ीमत भी ले सकते हैं। बहुत गड़बड़ शक्ल में छापी गई हैं। मैं चाहता हूँ कि मेरा दस्ती लिट्रेचर सब एक जगह जमा कर लिया जावे और वो सब मुझ को सुनाना चाहिये। मैं बता दूँगा कि यह हिस्सा छपने के क़ाबिल है। रामचन्द्र से मैं इस काम में पांच सौ रुपया लूँगा। और वो सब इसी में सर्फ़ किया जायेगा। इस की आमदनी जो होगी वो सतसंग के काम में जमा होगी। और इसी काम में सर्फ़ होगी। मैं इस मामले में क़दम-क़दम पर बताता जाऊंगा। और यह भी बता दूंगा कि मज़मून में यहां पर मेरी originality है। और यह भी हो सकता है कि वो मुश्किल मज़ामीन जो मैं ने मुख़्तसरन् लिखें हैं, मुशरह भी किये जा सकते हैं। अगर वो सब चीज़ें यहाँ (शाहजहाँपुर) आजायें तो बड़ी आसानी से यह किताबी सूरत में हो सकेंगी। मैं अपना वक्त दो घन्टे रोज़ दिया करूँगा। अपनी चची को यक़ीन दिला देना कि यह चीज़ें जो मेरे पास रहेंगी, किसी के पास जा नहीं सकतीं। और हमारा हक़ भी है और फ़र्ज़ भी है। हमेशा सज्जादानशीन ही के ज़रिये से यह बातें तकमील को पहुंचती हैं। तारीख़ शहिद है।

सवाल मदन मोहन : क्या तरीक़ा ऐसा है कि जिस से अपना जो ख़याल पैदा हो वो फ़ौरन गुरु को strike कर जाये?

फ़रमाया : पीर से कमाल हम आहंगी करने से। **तरीक़ा** यह है

कि अपने आप को बिल्कुल साकित करता चले। इस तरह पर कि कोई मद्दो जज़र बाक़ी न रहे। यह बात अभ्यास से ताल्लुक़ रखती है। उसी से समझ में भी आ सकती है। इस को **मुर्दा की कैफ़ियत** कहते हैं। यह ही सही मायनों में जीवन मोक्ष है। बशर्ते कि सही मायनों में मुर्दा कैसी कैफ़ियत हो गई हो। यह बात मदन मोहन लाल, किसी में पैदा नहीं हुई और मुझ को आरज़ू ही रह गई। रुहानियत का लुत्फ़, गो बहुत कुछ इस से पहले आचुकता है, मगर वाक़ई इस के बाद है। मेरी हालत यह पैदायशी थी और अज़ीज़ रामचन्द्र की भी। **सवाल** : अब यह बात पैदा कैसे हो?

मुख़्तसरन् यह अभ्यास बताता हूँ। अपने आप को ज़ाहिरी स्वभाव से, जो आम तौर पर हुआ करता है, उस को साफ़ करता चले। यह चीज़ इस में मददगार होगी। मदन मोहन लाल! यह बहुत बड़ी बात है। इस हालत को फ़नाए-मुतलक़ भी कह सकते हैं। इस के बाद इन्सान को कुछ करना धरना बाक़ी नहीं रह जाता। बन्दगी ज़रूर फ़र्ज़ है और मेरा यह वतीरा तमाम उम्र रहा है। और तुम लोग भी न छोड़ना । अपने आप को बन्दा ही समझना। ख़्वाह रुत्बा कितना ही आली हो जाये। अज़ीज़ राम चन्द्र की तालीम इस के आगे से शुरु हुई थी। इतना वो अपने साथ लाये थे। इतनी किसी की निगाह भी न थी जो इस को अन्दाज़ करके उस को तालीम देता। और मेरे भी यह बात एक अरसे में समझ में आई थी।

7-3-45

हज़रत क़िब्ला : मदन मोहन लाल : तर्ज़ गुफ़्तगू मेरा सा होना चाहिये। वो यह कि गुफ़्तगू में rise और fall और pitch नहीं होना चाहिये। बल्कि इस सूरत में होना चाहिये कि जैसे ईशरी धार सरल रूप में आग़ाज़ से अब तक यकसार बह रही है। मैं ने इसी की नक़ल की थी। इस के बेशुमार फ़ायदे हैं। कहाँ तक कहे जायें। यह एक फ़ल्सफ़ा है कि जब गुफ़्तगू की रवानी असल से मुताब्क़त करती हुई चलती है तो इन दोनों में हम आहंगी पैदा हो जाती है। और उसी के द्वारा क़ुदरती तर्ज़ ख़ुद बख़ुद पैदा होने लगता है। और असर पैदा होता है। जो बात कही जाती है, गड़ती चली जाती है। दूसरे मायनों में इस से एक क़िस्म की निस्बत असल धार से पैदा हो जाती है। और जब निस्बत पैदा हो जाती है तो असर होना ही चाहियें। अगर कोई शख़्स इस की नक़ल करे तो अस्नाए गुफ़तगू में वो ही लफ़्ज़ बरामद होंगे जो उस का मन्शा है। और ठीक हैं। यह बात मेरी जीवनी में भी लिखी जायेगी। इस की तरकीब यह है कि गुफ़्तगू में पहले rise और fall जिस को तेज़ी भी कहते हैं, सब से पहले दूर करने की कोशिश करना चाहिये । जितनी कमी इस में होती जायेगी, उतनी ही यह धार उस से हम आहंगी एख़्तियार करती जायेगी। तेज़ी से मतलब मेरा सिर्फ़ ग़ुस्सा से ही नहीं है, यह तो बहुत ठोस चीज़ है। इस को तो इस मौक़े पर पास आने ही न देना चाहिये। बल्कि यह है कि उस रवानी में किसी क़िस्म का बोझ न हो। इस की मिसाल ख़ामोश हवा की लहर ही हो सकती है। यह बात बहुत मुश्किल भी है। मगर कोशिश और हिम्मत से, अगर गुरु कृपा शामिले-हाल है, तो सब कुछ हो जाता है।

शेर : **मुश्किले नीस्त कि आसाँ न शवद।**

मर्द बायद कि हिरासाँ न शवद।।

(अर्थात : ऐसी कोई मुश्किल नहीं है जो आसान न हो जाये। मर्द वो है जो (कभी भी) हताश न हो।)

S.V. = I am taking very serious step against Mathanni. He is poisoning the brains of all the people owing allegiance to our Lord. I am trying to make them better. We are doing our best.

हज़रत क़िब्ला: श्री कृष्ण के आने की भी ख़बर है। और वो कम्बख़्त भी आवेगा। सल्वातें सुनते जाओ और ख़ामोशी से काम करते जाओ। ताक़तें इस्तेमाल करो मगर जो, या जिसके लिये हुक्म हो। एक बात मैं बतलाता हूँ, यह निहायत मुफ़ीद होगी कि ऐलान के वक्त तक और अगर इस के बाद भी ज़रूरत हो तो अज़ीज़ राम चन्द्र की पावर (Power) से जो उस को मिली है connection जोड़ लो। मगर देखो भण्डारे के बाद इस की इजाज़त नहीं देता। तुम सब में मेरी ही ताक़त दौड़ने लगेगी। मगर हर शख़्स ज़बान पर control रखे। ज़ाहिरन् आदाब की मुमानियत नहीं। अपना फ़ेल अपने साथ है। दूसरे का वो ख़ुद ज़िम्मेवार है। मेरा मतलब ज़ाहिरन् आदाब से यह है कि अपनी तरफ़ से किसी को यह तरशेह न हो, चाहे वो कम्बख़्त ही क्यों न हो कि मैं ख़िलाफ़ हूँ। बल्कि अपने आप उसी तरीक़े से मिलने की कोशिश करे और ठीक यही है कि तुम फ़र्ज़ अदा कर रहे हो। मैं ने अज़ीज़ राम चन्द्र को आज इस वक्त (9 बज कर 40 मिनट वक्ते शब)

अग्नि पर control दे दिया। इस का ठंडा मिज़ाज बहुत है, इस लिये इस की ज़रूरत पड़ गई। इस तत्व पर क़ाबू देने की मुमानियत है और मैं ने भी रख छोड़ा था। तुम भी इस पर क़ाबू किसी को न देना। इस की ताक़ते-बर्दाश्त लोगों में अक्सर नहीं होती बल्कि ज़्यादातर नहीं होती।

S.V. Congratulations. Some more powers are coming to you. They are reserved. These powers are the special gift of Lord Krishna in pursuance of the duty you have done in Southern India.There is an inexhaustible store for you by Lord Krishna. The pleasure seekers (नफ़्स परस्त) don't require you nor your help. Your authority: the world will agree, but after you. I have been working at Jeypur since 5 'O clock in the evening. It is about 10 now.

8-3-45

हज़रत क़िब्ला : श्री कृष्ण जी महाराज का मन्शा राम चन्द्र में कुलियतन् फ़ना होने का था मगर मैं ने इस ख़याल से कि कहीं जिस्म न छूट जाये, प्रार्थना की कि ऐसा न किया जावे। स्वामी विवेकानन्द जी ने भी मेरे इस ख़याल से मुताब्क़त की, ताहम उन्होंने एक ज़ख़ीरा इन के लिये मेरे पास reserve कर दिया है। यह जनूबी हिन्द के काम का सिला है।

9-3-45

श्री चैतन्य महा प्रभु : मैं ने भी तुम्हारे सतसंग का मुआयना किया, हालत ख़राब पाई। तुम्हारे सतसंग में तुम्हारे गुरु महाराज के

जाते ही यह बात पैदा हो गई कि असल चीज़ के समझने का माद्दा नहीं रहा। वजह यह थी कि ऐसी तवज्जह जैसी कि आप की ज़िन्दगी में मिलती थी उन को नहीं दी गई। तवज्जह में ग़रज़ शामिल हाल रही। जहाँ यह है वहाँ असलियत का पता कहाँ। मेरी आरज़ू थी कि अपना काम संभाल कर मेरे मिशन पर भी तवज्जह करते। तुम्हारे गुरु महाराज भी इस से मुवाफ़क़त करते हैं। मैं तुम्हें अपनी जगह दे चुका हूँ। एक बात मैं अपनी ज़िन्दगी की तुम को बताता हूँ कि मैं ने अपनी ज़िन्दगी में **श्री कृष्ण जी महाराज** से बहुत घना सम्बन्ध कर लिया था। उनकी शक्ल सामने रहती थी। अब वो ही सिलसिला दूसरी शक्ल में क़ायम हो गया। यह सिलसिला तरक़्क़ी करेगा। तुम्हारा काम एक बहुत बड़ी आत्मा, जिस की मिसाल नहीं, कर रही है। अभी तक यह कोशिश हो रही है कि कम अज़ कम नुक़्सान में काम बन जाये। आगे जैसी ज़रूरत होगी, किया जावेगा। भण्डारे में अगर ज़रूरत हो जाये तो मुझ को भी बुला लेना। मेरी ताक़त तुम्हारे साथ है, इस का एहसास नहीं होता। क़रीब-क़रीब सब बुज़ुर्गों की निगाहें तुम पर घूम चुकी हैं। और भण्डारे का इन्तज़ार सब कर रहे हैं।

S.V. Chaitanya Maha Prabhu is before you. He is absorbed in you. It has the idea of merging. Feel that he is within you. You can ask anything if so required. When you take up his work, his dictates will run through you.

चैतन्य महाप्रभु : स्वामी विवेकानन्द जी ने जो कहा वो ठीक है। जब तुम आवाहन करोगे, मेरी ताक़त काम करना शुरु कर देगी। तुम्हारा जुनूबी हिन्द का सफ़र बहुत अच्छा रहा।

हज़रत क़िब्ला : बाबू मदन मोहन लाल ! काम बढ़ता चला जाता है। यह ज़रूर है कि मेरी कामयाबी का सब इन्तज़ार कर रहे हैं। मुझे इस की (RC) तन्द्रुस्ती का ज़्यादा ख़याल है। जहाँ तक हो सकता है, इस से काम कम लेता हूँ। और यह ही नहीं, बहुत से बुज़ुर्ग मेरे पास चले आरहे हैं। मक़सद सब का इन से काम लेने का है। मैं श्री कृष्ण को भी एक चीज़ बना देता, अगर इस तरफ़ रुख़ करते। और उस मुहब्बत का एवज़ दे देता जो उसने मुझ से ज़िन्दगी में की थी। अगर बाबू मदन मोहन लाल मुनासिब समझें तो यह नोट सिर्फ़ इतना उन को दिखला देवें। और कह देवें कि अरें तजुर्बा ही कर के देख ले। अगर हालत पसन्द न आवे तो मैं फिर उस को वापस ले लूँगा।

बाबू मदन मोहन, मैं फिर कहता हूँ कि ऐसा मौक़ा बार-बार नहीं आयेगा। यह ऐसा मौक़ा है कि जिस ने ज़रा भी मेरा साथ दिया, मैं ने उस का एवज़ सैंकड़ों गुना ज़्यादा दे दिया, और आयंदा दूंगा। मेरी आँख जब बदल गई, फिर इन से कुछ फ़ायदा न होगा। अभी वक़्त है। **वक़्त 5.53 PM** मैं इस वक़्त **श्री कृष्ण जी महाराज** के पास से आ रहा हूँ। उन की राय है कि तुम को हरद्वार में कुंभ पर भेजा जावे। लिहाज़ा यह बात टल नहीं सकती। भण्डारे से वापसी पर इरादा कर दो।

10-3-45

हज़रत क़िब्ला : मैं ने बहुत टाला कि यह **हरद्वार** न भेजा

जावे। आख़िर को यह ही तस्फ़िया हुवा और मुझ को भी मानना पड़ा कि ज़रूर भेजा जावे। **श्री कृष्ण जी महाराज** का यह ही हुक्म है। इस का इरादा **ऋषिकेश** में रहने का था मगर यह मुनासिब नहीं। इस को हरद्वार ही में रहना चाहिये। और वहाँ से कुल पर अपना कन्ट्रोल रखे। कुछ लोग ऐसे भी होंगे, क्योंकि फ़ुक़रा का भी जमघट है मगर फ़क़ीर शाज़ोनादर, कि अपनी सिद्धी शक्ति से काम लें। अगर तकलीफ़-देह हो तो शक्तियां सलब कर लेना। पिछले कुम्भ में जिस को एक अरसा हो गया, एक शख़्स आ गया था। जिस ने पब्लिक को दुःख दिया। अगर वो शख़्स फिर वही हरकत करे या करने पर आमादा हो तो उस को ज़रूर सलब कर लेना। **अब्दाल मथुरा** की ड्युटी तीन माह के लिये लगाई गई थी उस से एक महीने ज़्यादा काम लिया गया। कल रात जब वो मुख़ातिब हुवा तो उस से ड्युटी छुड़वा दी गई। उस ने ख़िदमत का सिला चाहा जो उस वक़्त टाल दिया गया। आज बवक़्त शाम उस को सिला दे दिया गया और अच्छा दिया गया। उस के मुक़ामात सुग़रा और कुबरा अच्छे तरीक़े से खोल दिये गये। सुग़रा उस का पहले से खुला था। अब्दाल हालत को समझ कर रो पड़ा, यानी वो हालत जो उस में पैवस्त की जा रही थी और कहा कि ज़िन्दगी इस क़दर हो गई मगर इस बात के लिये जो आज हासिल है, तड़पता ही रहा। उस ने अज़ख़ुद ख़ुश हो कर एक महीने के लिये और अपनी ड्युटी बढ़ा दी। पन्द्रह दिन का मैं इज़ाफ़ा कर दूँगा।

S.V. 8 PM I am now at Fatehgarh with your Guru. He (इन्स्पेक्टर साहब) is doing well. I will give you notes after Bhandara. I have kept a few persons for destruction.

12-3-45 वक्त 11.15 बजे दिन

हज़रत क़िब्ला : कोई वार कर रहा है। होशियार हो कर बैठो। अब कुछ नहीं। जिस शख़्स ने यह किया, उस में यह ताक़त ही नहीं। उसने ब्रह्मांण्ड की ताक़त को हरकत दे कर तुम्हारे दिमाग़ पर उतारना चाहा। यह अमल कहीं किताबों में बिरजू ने पढ़ा था। इस की वो क़ाबलियत ही नहीं रखते। फिर कोशिश की, मगर उन से होता ही नहीं। तुम्हें सजग (कर) गये हैं।

(नोट : हुक्म **हज़रत क़िब्ला** हुवा कि फ़ारस में एक मर्द-ख़ुदा दम तोड़ रहा है, रुजूअ हो जाओ। चुनाँचें तक़रीबन 5 मिनट तक रुजूअ रहा। जब दम तोड़ दिया तो तवज्जह बन्द कर दी। (RC) वक्त 11.30 दिन।

S.V. 9 PM = I am doing my work at Fatehgarh. I want to come to you but I can't leave the work.

हज़रत क़िब्ला : बाबू मदन मोहन लाल! इस वक्त अज़ीज़ रामचन्द्र ने कमाल कर दिया। मेरी ख़ुशी की इन्तहा न रही। स्वामी जी महाराज ने जब यह फ़रमाया कि मैं तुम को देखना चाहता हूँ, मगर काम नहीं छोड़ सकता। यह फ़ौरन वहाँ मौजूद हो गया और उन के पैरों पर अपना सिर रख दिया। कितने इख़्लाक़ की बात थी जो इस को फ़ौरन् सूझ गई। ऐसी मिसाल कम मिलेगी।

S.V. = I have not seen such an example anywhere. My

heart is leaping with joy to see such a soul of acute understanding. You (RC) have got such an instinct naturally. I have prepared notes for you. The work is coming. I am so glad with you that I will not keep a shell reserved; all will be transferred to you; what remains with me. Lord Krishna wants to come.

श्री कृष्ण जी महाराज : मैं ने तुम्हारे सतसंग की हालत इन दिनों ख़ुद देखी है। ऐसा ख़राब किया गया है, जिसकी मिसाल नहीं। ऐसे बुज़ुर्ग की मेहनत पर पानी डाला गया। इस ख़ता को ईशर भी मुआफ़ नहीं कर सकता। मैं ने अपना **चक्र** इस काम के लिये रख छोड़ा है। आख़िर में यह ही औज़ार होगा। अब मैं जा रहा हूँ और (श्री) राधा जी जो मेरे साथ हैं, तुम को दुआ दे कर कि मिशन में कामयाबी हो जाये, जा रही हैं।

S.V. Look here, a very big soul is before you. I mean Radhaji Herself. Her words can't go unobesainced.

हज़रत क़िब्ला : बाबू मदन मोहन लाल, इस वक्त बड़ी ख़ैरियत हो गई। **श्री कृष्ण जी महाराज** इन में (RC) लय होने के ख़याल से तशरीफ़ लाये थे। बाज़ बात इस की इस क़दर ख़ुशनुमा होती है कि ज़न्जीर की आख़िर कड़ी हिल जाती है। यह अभी का वाक़या जो मैं ने अज़ीज़ राम चन्द्र और स्वामी विवेकानन्द जी की निस्बत लिखाया था, अगर ग़ौर किया जाये तो मामूली वाक़या नहीं है। इस अक़्ल को विवेक बल्कि इस से ज़्यादा समझ सकते हैं । वाक़या यह है कि इस

के पास कुछ नहीं रहा। यह सब कुछ दे बैठा। यह ही वजह है कि ऐसी बातें ख़ुद बख़ुद सरज़द होती हैं। ख़ुदा करे कि मेरी आगे की आने वाली औलाद इस की नक़ल करे। और मौजूदा औलाद के लिये मैं अभी क्या कहूँ। जब वो वक्त आवे तो उन से भी मैं यह ही कहूँगा। जो तुम से (मदन मोहन) कह रहा हूँ। बाबू मदन मोहन लाल! **यह बात इस से आगे आने वालों में दिखलाई नहीं देती।** इसी वजह से मैं यह चाहता हूँ कि यह कुल काम तकमील कर के जिस्म छोडे। यह ख़ुदादाद नेमत है जो वक्त के लिहाज़ से उतरती रहती है। इस में हर शख़्स का हिस्सा नहीं। ....(यह छुटी हुई इबारत confidential नोट में तहरीर है।)

अगर मैं इस शक्ति को ज़रा हरकत दे दूं तो मज़ा आकर रह जाये। मतलब भण्डारे से है। कोई मिनट मेरा ख़ाली नहीं जाता कि इन की निगरानी न करता हूँ और किसी हालत में उभरने नहीं देता बल्कि पस्पा रखता हूँ। बाबू मदन मोहन लाल! मैं फिर कहता हूँ कि यह शक्ति अब नहीं आ सकती।

13-3-45

हज़रत क़िब्ला : जग्गू की राय यह है कि एक दम से सब को सलब कर लिया जावे। इस में **मुथन्नी** भी शामिल है। इन्सपेक्टर साहब (लल्लू) को छोड़ता हूँ। यह काम आज रात में तुम दोनों करो।

S.V. = I agree with the proposal.

हज़रत क़िब्ला : जब वो (मुथन्नी) तुम्हें admit करलें तब

वापस कर देना। कोई शख़्स न छूटे। चाहो तो इस में से कुछ काम रामेशर को भी दे देना। अपनी माँ और जग्गू की दुल्हन को छोड़ देना। और अपने सब मौतक़दीन को छोड़ देना।

बिरादरे-अज़ीज़ **जगमोहन** : इस में दीनानाथ और जो हमारे शिष्य हैं, सब शामिल हैं। मुथन्नी चचा को ख़ास तौर पर लेना। दोनों (MM & RC) से कहता हूँ।

हज़रत क़िब्ला : इस की ज़िन्दगी का ख़ुदा ही हाफ़िज है। हत्ताउल-वसाअ रोकने की कोशिश करूँगा।

S.V. = It is your duty to give power to Hindu Rishis scattered all over. Nobody could balance you upto this time. Your love is like a secret fire in the wood. I can daresay, she should have experience, nobody can love her (चची साहिबा) more than you do and have done in the past. Her relations will go away leaving her after sometime. This is my unshaking experience. **Lord Krishna** was sitting before you. You played the part well. It was the necessity of time. We were there to save you. A very big authority He is, we can't deny. We have snatched a part of the thing which was given to you. You did well that you opened yourself and stressed (stretched) yourself in every particle of God's worlds. That was the only method to save you. We were glad to see this acute weapon of wisdom - this acute weapon of wisdom and understanding. The method should be written with circumstances in secret diary.

हज़रत क़िब्ला : बाबू मदन मोहन लाल : सिवाये इस के और कोई तरीक़ा बचने का हो ही नहीं सकता था। रामचन्द्र को ख़ूब सूझा। एक मुश्किल यह है कि अज़ीज़ रामचन्द्र से क़दम-क़दम पर वो बातें सरज़द होती हैं कि वो क्या मुझ से भी रहा नहीं जाता। आज ही का एक वाक़या है कि जब मैं परेशान था तो यह फ़ौरन मेरे पास आकर मौजूद हो गया। मैं नहीं समझता कि इस के आते ही मुझ को क्यों तसल्ली होगई। यह एक ऐसी बात थी कि जिस से मैं भी दिल खोल कर सामने हो गया और **कृष्ण जी महाराज** से भी रहा न गया।

S.V. = These things are pleasing me so much that even I could not tolerate. I will, as I have said, transfer what I have after Bhandara. If you (RC) go deep into yourself, you will find one and the same in perfect harmony. These powers are being given to you for the work after your life. Everybody is going to transfer his powers into you, although we are checking them from doing so. Had your Guru made you not of this capacity, you would have gone up. So many powers cannot remain in human body. You are something else which we do not want to disclose in your lifetime. If we develop a little your powers especially given to you and to you alone, nobody can stand; I mean the higher sages. This is a very petty matter going on this time, having regard to the powers you enjoy. Powers are destructive ones. The question arises, why we do not develop them? The answer is, as you are a married householder, they will all be in working order after your life. We have not yet used our special powers in your work. We are only trying to mend the way. Weapon comes in

the last. This is the order of your Guru, otherwise I would have thrown them altogether in some gloomy dungeon. By gloomy dungeon, I mean the hell, but still some people will go towards it. I wanted to take those persons under destruction; they who have poisoned your mother's brain, but your Guru refused. I will tell you all when you reach Fatehgarh. Keep a dictator with you, when you go to Fatehgarh. Every moment the situation will be coming to you. Everybody will be devoid of spiritual benefit before you are proclaimed at my Lord's place and it will be the duty of your brethren sitting here to check everybody who thinks himself extra-ordinarily bestowed by Nature.

15-3-45

S.V. = Lord Krishna is waiting for your success. Call Him if need arises but in a very rare case. (11.40 AM)

हज़रत क़िब्ला : शान्ति क्या है?

मुकम्मिल शान्ति उस को कहते हैं कि ग़ैरों की ताअन व तिश्ना, धींग मुश्टी, सब गवारा हो जायें। और ऐसे उतर जायें जैसे चिकने घड़े के ऊपर से पानी उतर जाता है। उस में कुछ असर नहीं होता। जबरन् बरदाश्त करना इस की तारीफ़ में नहीं आता। (इबत्दान् आदत डालने के लिये जब्र करना पड़ता है)

वस्ल क्या है? वस्ल उस शै को कहते हैं जहाँ तड़प और

झड़प सब ग़ायब हो जाये। न मिनले की तमन्ना रहे, न जुदाई का अफ़सोस। मगर यह बात कोई शुरु में इख़्तियार करे तो निहायत ग़लत और गुमराहकुन। जज़्बा मिलने ही का रहना चाहिये। यह बन्दे का फ़ेल है और वो रहमतें इलाही है कि उस को ऐसा बना दे। यानी इस (तड़प, झड़प) से सुबकदोश कर देना।

रुहानियत : रुहानियत हलकेपन को कहते हैं। यह मुख़्तसर बात है जो एक लफ़्ज़ में आती है। वरना इस की मुकम्मिल तारीफ़ मैं अपने नोट में किसी जगह कह चुका हूँ।

जज़्ब क्या है? इस की दो क़िस्में हैं। एक अदना और एक आला। अदना दरजे का जज़्ब यह है कि तबियत उभरती ही चली जाये और यह शुरु में ज़्यादा मुफ़ीद है। आला दरजे का जज़्ब यह है, जैसे कल एक मिसाल स्वामी विवेकानन्द जी ने दी है कि your love is like a secret fire in the wood. मतलब यह है कि अन्दर-अन्दर इश्क़ में सुलगा करे। और कोई उभार बातिनी पैदा न हो। जज़्ब के अस्ल मानी लगाव के हैं। जितना घना ताल्लुक़ (सम्बन्ध) है उतना ही ज़्यादा लगाव कहा जा सकता है। (लगाव से मतलब निस्बत यानी ज़ुड़ाव)

सलूक क्या है? सलूक क़िस्म अव्वल यह है कि हर बात ख़्वाबीदा सूरत में मालूम हो। इस से मुराद अपनी हालत है। उस के बाद क़िस्म दोयम है। ऐसा सलूक यानी क़िस्म अव्वल बहुत कम पाया जाता है। कमयाब है।

एत्क़ाद = पुख़्ता होना उस को कहते हैं कि अपनी कड़ी उस से ऐसी जुड़ जाये कि हट ही न सके। और अपने आप को ऐसा करने से बेक़ाबू पाये। ऐसे एत्क़ाद के हासिल करने की कोशिश करना चाहिये।

भरोसा =(मुख़्तसरन्) उस को कहते हैं कि किसी वक्त पर सिवाये उस के और उसी की मदद् के कोई चीज़ दिखाई न पड़े।

शुक्र = हर हालत में ख़ुश रहना शुक्र कहलाता है।

एहसान = उस को कहते हैं कि किसी वक्त उस की याद से ग़ाफ़िल न हो और हर लम्हा उसी को अपना समझे। उस से मतलब ईशर से है। दुनियावी एहसान से मतलब नहीं।

सब्र = हर हालत में क़ानाअ रहे और उस से बेहतर सूरत की याद न आवे।

तलब = सिवाये ख़ुदा के किसी को न चाहे।

तड़प = इस के मानी बेक़रारी के हैं और यह इश्क़ की हक़ीक़त तक पहुँचती है। यह तो मानी रहे, अब तारीफ़ सुनिये। असल तड़प उस को कहते हैं कि सिवाये इस लहर के दूसरी चीज़ दिल में न उठे।

दुनिया = उस को कहते हैं जहाँ हर शख़्स अपना बदला चाहे।

उक़्बा = उस को कहते हैं जहाँ कोई एक दूसरे से ताल्लुक़

(interdependence) न समझे। यानी लगाव महसूस न हो।

S.V. Interdependency is the idea of my Lord regarding world. **उक़्बा** comes just in opposite of it. **Heaven** is nothing but devoid of these two things. I mean by **heaven** the condition itself.

हज़रत क़िब्ला : बाबू मदन मोहन लाल! अब मेरा एक शेर लिख लो।

बहिश्त आँजा कि आज़ारे न बाशद ।

कसे रा या कसे कारे न बाशद ।।

(अर्थात् स्वर्ग वो है जहाँ कोई तकलीफ़ (आज़ार) नहीं है । और किसी को किसी से न कोई काम, न कोई मतलब।)

S.V. = **Maya (माया)** is nothing but the dark side of God. **Purush** is the bright side. Think the burning point of a lamp as **Purush** and shedding light as **Maya**. You swim across this light to reach the burning point. Where the lustre ends, there the darkness prevails making a horizon. It is called **ठोस माया,** I mean where the light reaches in points, not in a shedding way. The people are generally enveloped in this part of the big circle. Guru brings light from the burning point to this circle making it all the same in the long run. The question arises wherefrom the Guru brings such light when he is born in the third circle of darkness. The answer is, as

the word itself says, that he is always near and nearer to the burning point wherefrom he takes up light directly, and leaves the veil behind it in utter darkness.

हज़रत क़िब्ला : मैं इस वक़्त अज़ीज़ रामचन्द्र के इख़्लाक़ से बहुत ख़ुश हुवा। और यह ही लाज़िम था। वो यह, चूंकि रामचन्द्र के लिये मैं और स्वामी विवेकानन्द जी दोनों बराबर हैं, और वो काम छोड़ कर आ नहीं सकते, इस लिये उस ने प्रशाद के लिये मिठाई वहीं पेश कर दी। यह ऐसी बातें हैं जो हर बुज़ुर्ग को मजबूर कर देती हैं।

S.V. = I am so glad with Ram Chandra that I have no words to praise him. Swim and swim in the real spirituality. Swim and swim in the ocean of spirituality across, is my prayer and it is bound to come.

16-3-45

हज़रत क़िब्ला : बाबू मदन मोहन लाल ! इस (RC) से अभी थेड़ी देर हुये एक बात और सरज़द हुई। **स्वामी विवेकानन्द जी** इस को मौजूदा शक्ल में अपने क़रीब देखना चाहते थे। इस से वही बात फ़ौरन् सरज़द हो गई। इन बातों के लिखाने से मेरा मन्शा यह है कि लोग हम-आहंगी की नक़्ल करें। और यह बातें मिसाल के तौर पर उन के सामने वक़्तन् फ़वक़्तन् रखी जावें ताकि उनको भी शौक़ पैदा हो।

S.V. You are setting an example for the persons already in Society and also coming after you. These things, I mean to

hit correctly are very difficult. How to acquire them is the question? It is very difficult to answer the question in one word. Still I try to sum it up - **Love for Guru to the extreme**.

हज़रत क़िब्ला: बाबू मदन मोहन लाल! अज़ीज़ रामचन्द्र ने मुझ से तो हम आहंगी हासिल की ही थी, अब उस का स्वामी जी साहब के साथ भी वैसा ही हाल है।

S.V. = The reason is that you took both of us in a whirl.

17-3-45

चैतन्य महा प्रभुजी : मैं ने इस वक्त वो शक्ति प्रदान की है जो मुझ में थी। तुम्हारे गुरु और स्वामी विवेकानन्द जी महाराज काम में मसरूफ़ हैं, लिहाज़ा मैं ने अपनी ड्युटी समझी कि मैं तुम्हारे पास आऊँ। तुम अपने आप को तन्हा न समझो, मैं भी मौजूद रहता हूँ। तुम्हें एहसास इस लिये नहीं होता कि तुम्हारा ख़याल उन्हीं दो की तरफ़ रहता है। रात का वाक़या तुम्हें याद होगा। तुम्हें उभार देना एक मिनट के लिये, उस शख़्स की बेअदबी पर, मेरा ही काम था।

वाक़या शब गुज़श्ता: बाबू राम ने कहा था कि तुम्हारे सतसंग में मुझ को कुछ फ़ायदा नहीं हुआ। गुरु को ईशर की तरह पूजना कुफ़्र की हद को पहुँचता है। मैं जब यहां से उठ कर यानी सतसंग

कर के जाता हूँ तो कुछ अरसे तक तबियत साफ़ और ख़ुश रहती है। और फिर गन्जलक पैदा हो जाती है। यह रूहानियत नहीं है बल्कि मिस्मरेज़म है। इस से मुझ को रामायण पढ़ने से ज़्यादा आनन्द आता है। वो सब वेद और शस्त्रों का सार है, वगैरः। तुम्हें अपनी हालत का पता नहीं। अगर पता हो जाये तो रूह की परवाज़गी यक़ीनी समझो। मैं ने यह बात किसी में नहीं पाई। और न ऐसा दिल पाया जिस में इतना बड़ा ख़ज़ाना रह सके। यह सब तुम्हारे गुरु महाराज की कृपा है।

ऐसी **(हज़रत क़िब्ला)** बुज़ुर्ग हस्ती कभी नहीं आई। एक बात मैं अपने तजुर्बे की बतलाता हूँ कि वाक़ई तौर पर इस विद्या के अधिकारी बहुत कम मिलेंगे। **और जो अच्छे अधिकारी मिलेंगे, उन की हालत शुरु से ही समासम की होगी। यह पहचान है।** यह विद्या आलोप हो रही है। और बहुत कुछ हो चुकी है। अब क़ुदरत का मन्शा इस के ठहराव का है। इस के बाद स्वामी विवेकानन्द जी का काम शुरु होगा। उस के बाद मेरी बारी है। और बुज़ुर्ग लोग भी इन्तज़ार में हैं। तुम जब Cape Comorin गये थे और जगह सुहावनी और प्रिय मालूम हुई थी। मुझ को भी यह जगह बहुत पसंद आई थी। और मैं ने उस को मौस्सर कर दिया था। Cape Comorin में कुछ काम न था। मेरा मन्शा था कि जिस बात को मैंने क़ायम किया है उस को ज़िला देदें। इस लिये गुरु महाराज और ऊपर के बुज़ुर्गों ने तुम को हुक्म दिया था। अब इस का असर हट नहीं सकता।

S.V. = It is a big soul. Blessings are always pouring over you. I call him a fortunate being who keeps company with you. The period is worth remembering. Happy are those who avail of the time. We are busy all along and **Jaggoo** too, at Fatehgarh. I have given the duties. Guests will begin pouring in this year. Before the time fixed for Bhandara, they may be in a small number at the first time but the number will increase at times. This is the first step.......... There is a great activity at Cawnpore (Kanpur). Friends are gathering around. Bhandara is before their eyes, dreaming of success. They are trying their best for succession in Bhandara. There are so many powers at your back - (they have no backing).

हज़रत क़िब्ला: मैं फ़तेहगढ़ गया था और वहीं से आ रहा हूँ। **स्वामी विवेकानन्द** जी साहब ने जब से काम लिया, हटे ही नहीं। **जग्गू** भी मसरूफ़ हैं। जब तक अभ्यासी में तज़ल्ज़ुले-ईमानी पैदा नहीं होता या एत्क़ाद में ख़ामी नहीं पड़ती, उस वक्त तक गन्दगी का असर नहीं होता। ज़बरदस्ती कोई ठूंसे तो और बात है। मगर ख़ुश -अक़ीदत एक चीज़ है कि यह उस को भी साफ़ कर देती है और असर आने नहीं देती है। दोनों मिसालें मौजूद हैं, एक़ रामचन्द्र की और दूसरी बाबू राम। बाबू मदन मोहन लाल को मुबारकबाद दो कि मैं ने उन के शिष्य बदायूनी का एक स्टेज पार कर दिया और सुग़रा मुकम्मिल कर दिया। कुबरा की तरफ़ मेरा मैलान-तबाअ अभी नहीं हुआ।

S.V. We have finished a branch of our work. **Lord**

Gauranga (Shri Chaitanya Mahaprabhu) is with me, he is taking interest in our work. He has sweared not to go to the upper world till the work is finished. We are all here now. We have just received an order from **Lord Krishna** to take my weapon in the last. One of us is going to Jaipur, leaving Jaggu at Fatehgarh. We are now both in Jaipur (9.35 PM)..

18-3-45

S.V.= You (RC) have done wonders this time but to give powers, two or more sittings will be necessary. If he does not take it ill, I advise him (MM) to let it remain open. The method is that he should meditate that the veil underlying has been chipped off altogether. It is but in an infancy, -- it requires development. If possible, he should take butter or ghee for three (3) days continually, according to the digestive power, mixed with pepper, and have a milk diet for so many days. Boiled things without spices will be very useful during this time. Tamarind, pumpkins and ripe tomatoes are useful. (11.20AM)

हज़रत क़िब्ला : तुम्हारी शक्ल तक मर्त्बा मेरे सामने आई थी और यह मेरी दुआ का असर था जो मैं ने उस दरगाह में की थी कि एक शख़्स मुझ को ऐसा मिल जाये जो मेरी सज्जादा नशीनी के क़ाबिल हो। उस सूरत को देख कर मैं ने तुम्हें अपनी तरफ़ कशिश किया था। यह तुम्हारे, मेरे पास आने से बहुत पहले की बात है। बैअत करने में

मैं ने इस लिये तसाहिल किया था कि ज़रा यह (RC) और सुलग लें। मुझे यक़ीन हो गया था कि तुम मेरे पास आओगे तो ज़रूर, मगर जल्दी की वजह से मैं ने कशिश करना शुरु किया था। और तुम्हारी हालतें वहीं; यानी उसी वक़्त से तब्दील होना शुरु हो गई थीं। पिछला नोट जो मैं ने तुम्हारी बाबत दिया है, उस के मानी यह हैं कि यह बात होने पर ही मैं ने अपनी .... बराबर क़ायम रखी और अपना एहसास फिर भी अपने गुरु महाराज से बराबर tally करता रहा। इस में एक वजह यह भी थी कि मुझे तुम्हारे रईस होने का ख़याल था। इसलिये क़दम - क़दम पर मैं तुम्हें देखता रहा।

हज़रत क़िब्ला : अज़ीज़ रामचन्द्र के दिमाग़ में वो बात आई जो अच्छे-अच्छों के आना दुश्वार था। मैं कह सकता हूँ कि यह तरीक़ा आज तक किसी के ख़याल में नहीं आया। इस के कहने से मेरा मतलब हाल के बुज़ुर्गों से है, वरना यह कोई नई बात नहीं है। वो यह है कि जब यह अपना सूक्ष्म शरीर भेजता था या तुम कोई भेजते हो तो वो काम ठीक नहीं करता था और अपनी तवज्जह की ज़रूरत पड़ती थी। अब यह बात उस ने खो दी। **तरीक़ा** यह है अपने सूक्ष्म शरीर को निकाल कर (उसमें) ज़िन्दगी दे दे। उस की हरकत फ़ौरन् मालूम होने लगेगी। फिर उस को किसी काम में लगा दे। और उस को उस काम की कुछ पावर (Power) और देदे। इस की ख़ूबियाँ मैं ही ख़ूब जानता हूँ और यह मेरी यानी मोक्ष आत्माओं की नक़ल है।

S.V. = Now I am taking work from you. Your life body is before me. The world will remember you. I have given you a duty.

चैतन्य महाप्रभू : हमारी सन्स्था (Sanstha) में कोई शख़्स ऐसा पैदा न हुआ। आरज़ू ही बाक़ी रह गई।

S.V. = The invention is not of an extraordinary ability. In days long gone by, there was a Hindu Sage in India - he had discovered this method. You are working side by side with me and I am taking work from you. Another wonderful discovery. Now you are doing work without any exertion on your brain. I want to keep you along always.

श्री कृष्ण जी महाराज : तुम (RC) अपने ज़माने की मिसाल हो। ईजादें वापस आ रही हैं।

अगस्त मुनि : इस (सूक्ष्म में ज़िन्दगी देना) **ईजाद** की ख़बर मुझ को भी हो गई। अच्छी ईजाद है। मेरे पास बहुत सी विद्या मौजूद है। मौक़ा आने दो, सब सामने रख दूँगा। यह मौक़ा तुम्हारी ज़िन्दगी के बाद आवेगा। जब तुम आज़ादी से काम कर सकोगे। जल्दी और देर तुम्हारे ही हाथ में है। इस वक्त में बहुत से ऋषि तुम्हारी तारीफ़ कर रहे हैं। मेरा मतलब हिन्दु ऋषियों से है।

श्री कृष्ण जी महाराज : इन के (मदन मोहन) सवाल का ज़वाब मैं देता हूँ। **किसी ख़ास काम के लिये ख़ास ताक़त क़ुदरत**

से उतरती है। जो किसी ख़ास हस्ती में बैठ कर काम करती है। उसकी शक्ल अवतार की होती है। जब ऐसा मामला दरपेश होता है तो क़ुदरत की ताकतें उस के हुक्म से काम करना शुरु कर देती हैं। वो ख़ुद (ताक़तें) कुछ नहीं कर सकतीं।

S.V. = You have had talk from Lord Krishna, now comes my turn. You are doing wonders here (Fatehgarh) as well. The same faculty you have got, is working here with me, with your Suksham Sharir (सूक्ष्म शरीर). You have come here with full powers. Another wonder--as if you have come yourself. Your brain now begins to work in सूक्ष्म body. When you return, take off all these things.

ऋषि लंका (सीलोन) वक्त 10½ शबः तुम्हारे भण्डारे की तारीख़ें कौन कौन हैं। (तारीख़ बतला दी गई) तो फ़रमाया कि **कृष्ण जी महाराज** से मुझ को हुक्म मिला है कि मैं भण्डारे में आप के साथ रहूँ। मैं उस से एक रोज़ क़ब्ल से अपनी ख़ुशी से ड्युटी लगा लूंगा।

अगस्त ऋषि : वक्त 11½ रात : मुझ को अभी हुक्म मिला है कि भण्डारे में मैं तुम्हारे साथ रहूँ। चुनाँचे ऐसा ही करूँगा। यह पहला मौक़ा है कि मैं अपनी जगह छोड़ रहा हूँ।

19-3-45

S.V. = I have issued orders to all venerable sages of India. I mean the Hindu sages to remain with you during

Bhandara. **Rishi Agasta** is one of them. I am issuing orders to **Atri Rishi** just now. He will speak with you after some time.

अतरी ऋषि : मेरे लिये अभी हुक्म मिला है कि मैं भण्डारे में तुम्हारे साथ रहूँ। (चुनाँचे तारीख़ें बतला दी गई) कहा, साथ रहूँगा।

अब्दाल मथुरा : वक्त 10.45 दिन : (नोट अब्दाल को हस्बे ख़्वाहिश हज़रत राम चन्द्र जी साहब ने तवज्जह दी, उस पर उन्होंने कहा) हाय, यह कमाल मैं ने कहीं नहीं देखा। मेरी तबियत चाहती है कि उम्र भर मैं आप ही की सेवा करता रहूँ। अच्छे-अच्छे बुज़ुर्ग मेरी निगाह से गुज़रे। उन साहब को छोड़ता हूँ जो **दयानन्द शताब्दी** में मथुरा तशरीफ़ लाये थे। (इशारा मिनजानिब हज़रत क़िब्ला) मैं ने यह फ़ैज़ कहीं नहीं देखा। और न यह कमाल कहीं पाया। मेरे गुरु महाराज बाहयात थे, उन्होंने भी उन बुज़ुर्ग की ज़ियारत की थी और गद्-गद् हो गये थे। (**नोट** : जब यह कहा गया कि वही बुज़ुर्ग मेरे गुरु महाराज हैं) तो कहा, यह उन्हीं साहब का नमूना है, मूझे इस वक्त मालूम हुआ। इस से क़ब्ल मैं इस से बेख़बर था। ज़्यादा क्या कहूँ।

हज़रत क़िब्ला: बाबू मदन मोहन लाल: अज़ीज़ राम चन्द्र की तारीफ़ कहां तक की जावे। अगर वो इस वक्त मुझ को शान्त करते तो मैं इस वक्त उन को सज़ा देता। उस वक्त का शान्त करना मुनासिब था, और इस वक्त नहीं था। कहो मदन मोहन, इस की पोज़ीशन कैसी नाज़ुक है। मैं ने इस वक्त irritation क़स्दन् पैदा किया था और इस की (RC) आज़माइश थी। भला यह कैसे हो सकता है कि मैं इस की

बात टाल दूँ। जिस शख़्स को ज़्यादा सज़ा दी जाती है, उस पर इन्तहाई रहम भी करना फ़र्ज़ है। क्या कोई ऐसी मिसाल मिल सकती है। हरगिज़ नहीं। वायदा करता हूँ कि जो ख़याल तुम्हारा (रामचन्द्र का) पैदा होगा वो ही कर के दिखा दूँगा। सही और ग़लत का सवाल नहीं। इतनी बड़ी सज़ा जो मैं ने तुम्हारे लिये तजवीज़ की थी, आज तक किसी के लिये तजवीज़ नहीं की। मगर इम्तिहान में पूरे उतर गये। लिहाज़ा अब तुम्हारे लिये मज़कूरा बाला इबारत है। **सज्जादा नशीनी बच्चों का खेल नहीं**। ऐसी आज़माइश मैं ने किसी की नहीं की, क्योंकि मैं समझता था कि कोई इस में पूरा नहीं उतर सकता था। जहाँ इतनी सज़ा थी वहाँ इस से ज़्यादा इनाम भी है। अगर ऐसा न करूँ तो इन्साफ़ से हटना होता है। जिस शख़्स को ज़रा सी गलती पर, अगर हो जाती, ख़ुदा न करे तो तबाह करने का इरादा किया था। अब लाज़िम है कि इस को इतना ही बड़ा इनाम भी दे दूँ । मेरी इस लिये यह राय है कि यह independently और ख़ास कर ऐसे मौक़े पर काम करे। इस ने कमाल कर दिया। मेरी ख़ुशी का कहीं ठिकाना नहीं। जब माँगने पर मैं ने मजबूर किया तो यह माँगा, **"हुज़ूर का नाम जब तक दुनिया क़ायम है,. मिस्ले आफ़्ताब रोशन रहे।"**

मैं आयन्दा से फिर वायदा करता हूँ कि यह जो कुछ कहेगा, वो ही मन्ज़ूर होगा। जब मैं अपने प्यारे पर इस क़दर मुसीबत नाज़िल करने पर, अगर ग़लती हो जाती तो आमादा था, तो कोई वजह नहीं मालूम होती कि अब यह अल्फ़ाज़ मैं उस के लिये क्यों न दे दूं। यह उस का आख़री इम्तिहान था। मुझे दावा है कि इतनी हम-आहंग

आहंगी आज तक किसी में पैदा नहीं हुई। अब मैं तुम्हें (RC) इजाज़त देता हूँ कि जहाँ पर मुझ में irritation पैदा हो जाये तो तुम कम कर सकते हो। मदन मोहन लाल! तुम को यह ख़बर नहीं कि मैं ने इस को इस वक़्त क्या दे डाला। यह तन्दुल का क़िस्सा समझो जो **कृष्ण** और **सुदामा** के दरमियान हुआ था। मदन मोहन! इस ने अपनी बारीकी नहीं छोड़ी। इसने वो ही मुझे हुक्म दिया जो मैं चाहता था। यह इस की आज़माइश नहीं थी। वो तो मैं कह ही चुका हूँ। अज़ीज़ रामचन्द्र मैं तुम को हिदायत करता हूँ कि अपनी ज़िन्दगी में और बाद, कभी किसी शख़्स का इतना सख़्त इम्तिहान मत लेना। मदन मोहन ! मैं तुम से भी कहता हूँ। रामेशर से भी कह दो। मतलब बाद ज़िन्दगी से है।

S.V. = I am leaping with joy that out of such a hard test, you have come out successful. Had it been the case otherwise, I would have gone altogether. I request my Lord (हज़रत क़िब्ला) submissively not to have such a test again. That was a very hard test, and it is you and you alone that came out successfully. Such a test was never done before till the beginning of the world exists - by one's Master. And I assure you that such a personality as you are, was never born. I began to tremble when He put you to such a hard test, praying all along. This is an example of hard test put before the world.

हज़रत क़िब्ला : मदन मोहन लाल! अज़ीज़ रामचन्द्र ने फिर कमाल कर दिखाया। **स्वामी विवेकानन्द** जी ने फ़रमाया था, हालाँकि

ख़ुशी में फ़रमाया था कि कृष्ण जी महाराज से इस आज़माइश का ज़िक्र करूँगा। उन का मन्शा यह था कि ख़ुशी का सबक़ सुनाते कि राम चन्द्र आज़माइश में कामयाब हुआ। रामचन्द्र ने कितना अच्छा जवाब दिया कि मेहरबानी कर के यह चीज़ या बात **कृष्ण जी** महाराज से न कहिये, इसलिये कि यह बात किसी हद तक कहते हुये अच्छी नहीं मालूम होती कि जिस शख़्स से मुझ को ऐसी मुहब्बत हो, उस का इस क़दर कर्रा test लिया जावे कि फ़ेल (fail) होना तबाही का नतीजा हो। मैं अपने दिल का इस वक़्त इज़्हार नहीं कर सकता, जो मेरी हालत है। इस से ज़्यादा आदाब पीर हो ही नहीं सकता। अब मैं वो दिल कहां से लाऊँ जो इस का कहना टाल दे। आज़माइशें ख़त्म हो चुकीं। अब कभी नहीं करूँगा। मैं ने आज से अपने आप को तुम से गिरवी (रहन) कर दिया। और क्या कहूँ। मदन मोहन लाल, मैं बख़ुदा कहता हूँ कि आज मैं ने अपने पास कुछ नहीं रखा। जो कुछ था सब इस को दे ड़ाला। और पल्लु झाड़ कर खड़ा हो गया। जितनी दौलतें कि हो सकती थीं, सब बख़्श दी गईं। फिर इसने कमाल कर दिया। मैं ने इस से पूछा कि अब क्या दूँ? इस ने कहा कि **"सायाए आत्फ़त जैसा कि रहा है।"** यह मिसाल कहीं नहीं मिलेगी और आगे भी उम्मीद नहीं।

मदन मोहन! वाक़ई तौर पर जो बात देने से रह गई थी, वो इस ने मांग ली। मैं फिर कहता हूँ, यह मिसाल नहीं मिलेगी। लोगों को चाहिये कि सबक़ लें।

S.V. = My Lord has made you the **governing power** and kept himself aloof from the work.

ऋषि अगस्त : मेरे पास वही (वह्य) आई है कि तुम को तुम्हारे गुरु ने **governing power** बना दिया है।

अतरी ऋषि : मुझे ख़बर मिली है कि तुम governing power बना दिये गये।

हज़रत क़िब्ला : बाबू मदन मोहन लाल! अगर सच पूछो तो मैं ने अपने बैठने की भी जगह नहीं रखी।

S.V. = I ask you but one thing that when you take up my work you think yourself as my Lord.

हज़रत क़िब्ला: जो इस वक़्त स्वामी जी ने फ़रमाया कि जिस वक़्त तुम मेरा काम लो उस वक़्त तुम अपने आप को मेरा Lord समझना। इस ने कितना अच्छा जवाब दिया कि **अगर एक ग़ुलाम शाही गद्दी पर बैठा दिया जाये तो वाक़ई तौर पर उस की हैसियत ग़ुलाम ही की रहेगी। ख़्वाह बादशाही इख़्तयारात क्यों न मिल जावें।** इस जवाब से मैं बहुत ख़ुश हुआ और स्वामी जी भी निहायत ख़ुश हुये । क्या यह सभ्यता नहीं है और आदाबे पीर के दायरे में नहीं आती है।

S.V. = I am very glad with this answer.

20-3-45

हज़रत क़िब्ला : (दोपहर दिन) : बाबू मदन मोहन लाल! मैंने

आलमे बाला छोड़ दिया है। इन की ज़िन्दगी भर अब जाने का इरादा नहीं है। ज़रूरत दूसरा सवाल है या वक्तन् फवक्तन् हो आना। मेरा क़याम ज़्यादातर अब यहीं रहेगा। अब मुझ को आलमे बाला में जाने का कोई हक़ नहीं रहा। इसलिये कि वो जगह भी इन को दे चुका हूँ।

S.V. = My Lord kept nothing for Himself.

हज़रत क़िब्ला: एक तरीक़ा वहाँ रहने का मुझे अज़ीज़ रामचन्द्र ने बतला दिया है। वो तरीक़ा ज़रूर है जिस से मैं वहाँ रह सकता हूँ। मगर यह मेरी मर्ज़ी पर है।

ऋषि अगस्त : इस बात का जो रात मैं ने कही थी, अमल दरामद हो गया है।

S.V. = I am also thinking of leaving the **upper world** for you.

चैतन्य महा प्रभु : मेरी भी राय है कि मैं भी छोड़ दूँ। तुम्हें पता नहीं कि तुम्हारी क्या हालत हो गई। **मजलिस वहीं अच्छी मालूम होती है जहाँ बादशाह हो।**

S.V. = Souls are coming to you for this work. We are all leaving the upper or brighter world for the purpose your Guru has given you hints, and it is quite possible, though not definite, that your life may be prolonged. These are the new orders. They will take their shape recently. Days and nights

you will have to work. Sleep you will but for a few hours, and I assure you that it will be sufficient to keep up your health. In reality, ten minutes' sleep is enough for you, at this stage people have no sleep. Sleeplessness will not tell upon your health. There is a great disturbance in **Manu Smriti**. You will have to take it first, then comes the turn of Shastras and Vedas in the last. You will have to write commentaries on each subject of different schools of Philosophy. You can't do both the work yourself. You will be the bearer of these things and somebody else will read the books, and if possible one may go on writing, otherwise the reader can do this work. You will leave all these work to go under the print after leaving this world. We will arrange ourselves. **The Sutras** have been defiled by the Brahmanas, given their own supremacy throughout in every kith and kin. The science part of the **Vedas** is not found in India. The **Sanskrit grammar** has been touched by the evil hands of the Brahmanas. **Brahm Sutra** tells the tales of so called Brahman Supremacy. The real part of it has been taken away and burnt to ashes. Everywhere you will find the supremacy of Brahmanas and Brahmanas only. The real things have been chewed away. They (are) all being returned to you and the very sage who has written will come down for dictation and correction. The orders are being issued. We have proposed punishment for the authors who took the Brahman idea in prejudiced way. They will be reborn and destructed (destroyed). I take the example of Patanjali. His idea was to bring the philosophy in new form. He was a learned one but was not leading a

practical life worth living for. The people like Patanjali were only bookworms. I speak highly of Tilak. Your Guru will give commentary on each subject. This is the turning point of your spiritual history. I mean by this word that you have been chained to some other work also. I am going to appoint a sage whose only work will be to draw out exhaustion from your brain. I wouldn't allow you more than two hours' sleep and three hours in a very rare case. Practically speaking, you need no rest. **Your soul has left or severed His connection from the body.** My experience during the existing work is that you **will have to create a new world.** Sluggish as they (कानपुर वाले) are, activities have been taken away by the persons whom they so revere or esteem and their so called masters have become dull. Take the example of Sri Kishan, he too is the prey of Chacha (चचा). I guarantee nobody in the world can correct them except yourself (RC). They had sufficient will power and have deluded it with full force, making deep impression upon their brains and heart. It is not now a childish (child's) play to remove it at a single glance. One more thing was done to them, it runs that a heavy veil of darkness was thrust upon them. Nobody but youself (RC) could excape from it. Take the case of B. Madan Mohan Lal, his will has been weakened by the same person who is under destruction now. He couldn't do more than it but adopted means to carry it out. I mean the programme he made in his inner faculty or brain. He did not want to give rise to any of the disciples of my Lord, the revered one, the result was that so many thoughts of different

colours are still swimming in the brains of my brethren. He (चचा) is the open book to me. Take the example of B. Brij Mohan Lal. I leave Munshi who is a good for nothing debauche. He did some work. not like a Satan but to spread his supremacy over my brethren.

21-3-45

S.V. The condition is improving again. I have resolved not to leave you at any moment and want to follow my Lord in this respect.

हज़रत क़िब्ला: मैं ने **बरनई** का अज़ख़ुद मुआयना किया। Situation ख़ुद देखी। तुम्हारे एहसानात उन लोगों पर इस क़दर हैं जिस की ज़मींदारों में मिसाल नहीं मिलती। और तुम्हें इन लोगों से मुहब्बत भी है। मगर ज़माने की ख़ुबी कि इस का बदल वो देना नहीं चाहते। मैं ने एक इन्तज़ाम सोचा है। वो यह है कि जहाँ तक हो सके लल्लू सिंह को depute करो। यह आदमी अच्छा है। दयानतदार है और तुम्हारा एहसानमन्द है। दूसरी बात यह है कि जो ब्राह्मण लोग तुम से मिले रहते हैं, वो ही तुम्हारे लिये ख़ार बोया करते हैं। सिर्फ़ एक शख़्स ज्वाला प्रसाद किसी हद तक मुस्तस्ना है। (यह ऊपर का हुक्म है।)कि **ब्राह्मणों** को **बरनई** से क़तई नाबूद कर दो। मैं यह काम मदन मोहन लाल को देता हूँ। मुमकिन है कि अज़ीज़ राम चन्द्र कुछ रियायत कर जायें, इसलिये यही बेहतर समझा। जब से चाहें, यह काम शुरु कर सकते हैं, यह उनका मुस्तक़िल काम है।

S.V. - Whatever spoken by my Lord about love for you, is bare truth. He is burning in love for you. I have never seen such an example anywhere throughout my life. People leave their homes for God: He left his home (असल भण्डार) for you. That is the greatest sacrifice ever expected from liberated souls. If I express a little more, I can tell you beat down the world record in this respect. Love of Radha.....

हज़रत क़िब्ला: यह मत लिखो।

श्री कृष्ण जी महाराज: स्वामी विवेकानन्द जी ने जो कुछ फ़रमाया है, हरफ बहरफ़ सही है। और इस में लिखने में कोई हर्ज नहीं कि मुहब्बत के सिलसिले में तुम ने **राधा (जी)** को मात दे दी। वजूहात तुम्हारे गुरु महाराज अपने नोट में बयान कर चुके हैं। तुम्हें पता नहीं कि तुम्हारी मुहब्बत बढ़ रही है। स्वामी विवेकानन्द जी भी यह अल्फ़ाज़ लिखाना चाहते थे। "The well known love of Radha is now second to you."

मैं इजाज़त देता हूँ कि इस के लिखने में कोई हर्ज नहीं जब कि वाक़या है। मैं ने उन की तरफ़ से यह अन्ग्रेज़ी में जुम्ला जो वो लिखाना चाहते थे, लिखा दिया।

अधिकारी दो तरह के होते हैं। एक उत्तम, एक मद्धम । एक अधिकारी को नीच भी कहते हैं। यह ख़ुद गर्ज़ कहलाते हैं। उत्तम अधिकारी वो है जिस का प्रेमी उस की याद में मुहब्बत की आग में

जला करे।

मद्धम वो है जो अपने प्रेमी की आग में जला करे। नीच से ताल्लुक़ नहीं। वो एक आम बात है। और एक अधिकारी वो भी कहा जा सकता है जो इन तीनों बातों से बरी हो। ऐसा अधिकारी ज़माने में कभी इत्तफ़ाक़ से, बरसों में बल्कि सदियों में, नहीं बल्कि हज़ारों बरस में कहीं एक पैदा कर देता है जो मिसाल नहीं रखता । ऐसा अधिकारी ईश्वर के हुक्म से पैदा होता है। इस की मिसाल तुम ख़ुद हो। इस की मिसाल तुम ख़ुद हो।

जो सब से गिरे अधिकारी होते हैं, उन को निकृष्ट कहते हैं। उन को रूहानी फ़ायदा कभी कुछ नहीं होता। मूढ़ इस में शुमार है।

S.V. - The definition of the best Adhikari, nay, over it, given by **Lord Krishna** is seldom found. What is the born condition of such Adhikari is sufficiently laid down by my Lord in His notes. You are the example of it. Such Adhikari when born, has his connection with pious soul in its origin. Your Guru is an example.

हज़रत क़िब्ला: यह ज़माना अब मुद्दत हा दराज़ तक नहीं आयेगा। जहाँ पर यह मिसाल सादक़ आती हो कि मजनूँ ने बन को घर किया और मैं ने घर को बन किया। **इश्क़ की आख़िरी मन्ज़िल क्या है?**

जहाँ पर अफ़्शा राज़ हो जाये।

S.V. = Condition is improving.

हज़रत क़िब्ला: बाबू मदन मोहन लाल: इस वक्त आप के इशारे पर जो रामेशर की वालदा की बीमारी के सलब करने के मुतल्लिक़ था, कितना अच्छा तरीक़ा मालूम किया। वो यह है कि मरीज़ के सूक्ष्म शरीर को बाहर निकाले और मरीज़ की बीमारी को उस के अन्दर दाख़िल करदे। और सूक्ष्म शरीर को मरीज़ के अन्दर न दाख़िल होने दे। जिस वक्त तक मरीज़ को मर्ज़ से सुबकदोश करना चाहे, उस की बीमारी को सूक्ष्म शरीर में जो अलेहदा कर लिया है, भरे रखे। उस के बाद उस को सलब कर के फिर मरीज़ में दाख़िल कर दे। और सूक्ष्म शरीर को उस असर से साफ़ कर के फिर मरीज़ के अन्दर दाख़िल कर दे। यह तरीक़ा बार-बार हर शख़्स पर नहीं करना चाहिये। किसी ख़ास ज़रूरत पर किया जा सकता है। और थोड़ी देर के लिये। अगर ज़्यादा दिनों के लिये यह करना हो तो उस सूक्ष्म शरीर को ख़याल के दायरे के अन्दर क़ैद कर दे और उस के क़यूद को उस वक्त तोड़े जब कि वो ही बीमारी मरीज़ में फिर दाख़िल करना हो। इस तरीक़े को अगर मुनासिब समझे तो रामेशर प्रसाद अपनी माँ के लिये कर सकते हैं। मैं ने यह तरीक़ा अज़ीज़ राम चन्द्र के साथ, जब वो मरे विसाल से चन्द माह पेश्तर मेरे पास कुछ अरसे के लिये रहने को आया था तो उस की अलालत की हालत में कई रात मुत्वातर किया था।

22-3-45

हज़रत क़िब्ला: आज इस वक्त (10.20 AM) पर एक ताक़त जो **श्री कृष्ण जी महाराज** का तुम्हारे लिये अतिया मेरे पास अमानतन् रखा हुआ था, तुम को दे कर पैवस्त कर दी।

S.V. = Your Guru has given you a power this morning bestowed by Lord Krishna, that is a special gift for you and you only. You can't transfer it to anybody else in your lifetime. You have become quite changed now. The idea is worth remembering what we have said, just so far. This kind of power is given to Avtar (अवतार) or the incarnation **as nobody is coming after you in the shape of Avtar,** so you are in duty-bound not to transfer it. You need not to give तवज्जह to anybody this day, be cautious that even in thought, words or deed, you should always think the benefit of others. There are very many powers in store for you, and these are all gifts of **Lord Krishna, the super authority.** They will be given by and by. The idea you enjoy in the present position is to keep all the others under your subjugation and their reins should always be in your hand.

23-3-45 at 12.40 PM

हज़रत क़िब्ला : मैं फ़तेहगढ़ से वापस आ रहा हूँ। कोशिश कर रहा हूँ।

S.V. = My Lord is a bit anxious as to the situation of Fatehgarh. We are trying hard to attain the goal. There is a great difficulty in my way on account of your mother (चची साहिबा) whom I highly esteem. Look here, you need not be puzzled. In the end I shall clear away the obstacles coming in the way without minding the result, if otherwise happens. There are but a few days more for Bhandara of my Lord. There is still time for them to come about your banner. There are a few persons at her house, I call them fools, who disturb her. What is the remedy for them, that my Lord will propose. There are a few elements in your society worth destruction. We will look to it after Bhandara.

श्री कृष्ण जी महाराज : मेरे अतिये में से एक ताक़त तुम्हारे गुरु महाराज ने तुम में पैवस्त कर दी। इस वक्त बेशुमार ताँता बराहे रास्त तुम्हारे लिये उतरा है।

S.V. = Look here, we have stored it for you.

24-3-45

हज़रत क़िब्ला: अब मेरे पास क्या रहा जो दूं।

श्री कृष्ण जी महाराज: तुम्हारे गुरु ने बराहे-रास्त तुम्हारे लिये दुआ की है कि मेरे पास अब कुछ नहीं रहा है जो रामचन्द्र को दे ड़ालूँ। **अब क़ुदरते कामला मोजज़न हो रही है। रहमत का**

दरिया जोश पर है। हुक्म हुआ है कि हर मिनट, हर सैकण्ड ताकतें उतरती रहें। यह वायदा तुम्हारे पीर का है कि ऐसा क़ल्ब मैं बनाता चलूँगा जिस में यह ताकतें रह सकें, और क़याम कर सकें। पस यही हुक्म हुआ है कि तुम सा मुहब्बत करने वाला और तुम्हारे गुरु महाराज सा देने वाला नहीं मिलेगा।

•

हज़रत क़िब्ला : ताँता उतरना ज़ात से शुरु हो गया। वक्त 8.24 PM यह वायदा ज़ात की तरफ़ से तुम्हारी कुल ज़िन्दगी भर के लिये है।

श्री कृष्ण जी महाराज : आज बड़ा मुबारक दिन है कि तुम्हारे गुरु महाराज ने बराहे रास्त तुम को ज़ात से initiate कर दिया है जिस को बैअत होना कहते हैं। **जब से सृष्टि पैदा हुई, यह पहली मिसाल है।**

राधा जी : अब तक मेरा तुम्हारा पुत्र और माँ का भाव था, अब मुझ को अपनी बहन समझो। मैं भी श्री कृष्ण भगवान के साथ जा रही हूँ।

S.V. = I am puffed up with joy hearing the news of **your direct initiation to God Almighty. This is the first example since the beginning of the world.** The thing you are getting direct cannot be transferred, the reason has been given some where else, it holds good here so well.

चैतन्य महाप्रभु : मेरी अब हिम्मत नहीं पड़ती कि तुम से काम लिया जावे। मगर ख़ैर ! जिस शक्ल में तुम ने मुझ से ज़बान खोली है उस में चन्दाँ हर्ज नहीं।

हज़रत क़िब्ला : इस वक्त महमूद ग़ज़नवी और अयाज़ का किस्सा ख़ूब तुम्हारे ख़याल में आया, लिहाज़ा मैं ने भी सोचा कि एक शेर पढ़ दूं।

शेर: **महमूद ग़ज़नवी कि हज़ारों ग़ुलाम दाश्त,**
इश्क़श चुनाँ गिरफ़्त, ग़ुलामे ग़ुलाम शुद।

(अर्थात बादशाह महमूद ग़ज़नवी, जिस के हज़ारों नौकर-चाकर (दास) निगरानी (रक्षा) करते थे, प्रेम में ऐसा गिरफ़्तार हुआ कि ग़ुलामों के ग़ुलाम (दासों के दास) से भी गया गुज़रा हो गया।)

यह मेरी हालत है। Direct initiation का मेरा ही तरीक़ा है और मेरी ही ईजाद है। इस से पेश्तर यह ईजाद न किसी के ख़याल में आई और न इस पर अमल हुआ।

S.V. = I want to play my part just like your Guru. Look here, I am in direct line with your Guru, when you find a chance to initiate anybody, have his connection with me also. But this method will be adopted only by you.

25-3-45

हज़रत क़िब्ला : रामेश्वर इस वक्त इस ने (RC) कमाल कर दिया। ठीक हिट करना इस को कहते हैं। जो अमल इस वक्त इस ने **चैतन्य महाप्रभु** के साथ किया अगर उस की ज़रूरत न होती तो कमाल दरजे की बेअदबी थी। ख़ुदा इस का (RC) एहसास मुबारक करे।

वक्त बारह बजे रात। **बाबू श्याम बिहारी लाल** का connection उन के पीर से काट दिया गया और destruction का आर्डर दे दिया।

स्वामी विवेकानन्दजी ने फ़रमाया कि He is the root cause of all these evils.

रामेश्वर! मैं इस वक्त तुम लोगों को कुछ सबक़ सिखाने आया हूँ। मिसाल पेश करता हूँ। अज़ीज़ रामचन्द्र को मना कर दिया गया था कि वो सतसंग के सुधार में मौजूदा वक्त में हिस्सा न ले। इसलिये कि बुज़ुर्गों ने ख़ुद अपने हाथ ले लिया है। और यह एक ऐसी बात थी कि हर मुरीद को इस हुक्म का पाबन्द रहना चाहिये। मगर इस ने अपनी मां यानी चची साहिबा के ख़याल को, बावजूदेकि मेरा हुक्म था, हरकत दे ही दी। मैं समझता हूँ, इतनी हिम्मत कोई शख़्स नहीं कर सकता था। बात क्या थी कि मैं इस वक्त, इस मख़सूस काम में जो उन की मां के मुतल्लिक़ है, उस की (RC) मदद् चाहता था। मतलब यह है कि जो बात मैं चाहता हूँ वो ही इस के दिल में ख़याल उठने लगता है।

इस को हम आहंगी कहते हैं।

कृष्ण जी महाराज : इस वक्त जो तुम्हारे गुरु महाराज ने तुम्हारी बाबत लिखाया है, ठीक है। अगर तुम ग़लती कर जाते तो मुमकिन था कि मैं सज़ा देता कि ख़िलाफ़े हुक्म गुरु के ऐसा क्यों किया गया। मगर तुम्हारा ख़याल बिल्कुल ठीक पहुंचा और यह ही हज़रत की मरज़ी थी। मैं बहुत ख़ुश हुआ और गुरु महाराज तो तुम्हारी आज़मायश कर ही चुके। यह हम आहंगी की मेरी आज़मायश थी। तुम इस में भी पूरे उतरे। लिहाज़ा इनाम भी है।

S.V. = We have received reward for you from Lord Krishna.

श्री कृष्ण जी महाराज : अगर इस वक्त तुम अपनी चची के लिये मुख़ातिब न हो गये होते तो वो ही सज़ा तुम्हारे लिये थी, यानी तबाही, जो तुम्हारे गुरु महाराज ने अपनी आज़मायश में फ़ेल होने पर तुम्हारी तजवीज़ की थी। तुम्हारे गद्य (गुण) मेरी तरह गाये जायें।

राधा जी : तुम्हारी आज़मायशें इतनी करीं हुई हैं कि किसी की आज तक नहीं हुईं, और साथ ही इस के इनाम भी ऐसा ही मिला है जो किसी को नहीं मिला। तुम्हें पता नहीं कि क्या हो रहा है। एक आज़मायश मेरी भी होगी।

S.V. = **Radhaji** has tested you just now, and you came out successful in that as well.

राधा जी : भाई मैं ने तुम्हारी आज़मायश कर ली। अगर नाकामयाब रहते तो मैं ने इरादा किया था कि **श्री कृष्ण भगवान** से तुम्हारे लिये कहती कि मौजूदा दरजे से गिरा दिये जायें। अब इस का इनाम यह है कि मौजूदा दरजे से बढ़ा दिये गये। अब आइन्दा कोई आज़मायश न होगा। इत्मीनान रखो। मैं तुम्हारे हर काम में मददगार रहूँगी।

हज़रत क़िब्ला : रामेश्वर ! यह आज़मायश जो **राधा जी** ने इस की की, अजीब ढ़ंग की थी। यह शाज़ोनादर ही किसी की समझ में आ सकती थी। वो सिर्फ़ यह थी कि मेरी आज़मायश पर रामचन्द्र क्या जवाब देते हैं। और वो जवाब आया, वो ही होगा जो मैं चाहती हूँ। जवाब, "चूंकि आप मुझ को भाई कह चुकी हैं, **अगर मैं आप की आज़मायश में पूरा न उतरा तो आप के लिये यह दूसरों को कहते हुये अच्छा मालूम होगा कि भाई इम्तिहान में नाकामयाब रहा।"**

S.V. = On your Prarthana (प्रार्थना) from your Guru, a general order is issued at this very moment that nobody will put you to trial (test) in future. Rest assured.

हज़रत क़िब्ला : रामेश्वर, मैं ने ऐसी कोई बात अज़ीज़ रामचन्द्र में नहीं छोड़ी जिस में मल्का न दे दिया हो। इस ने जिस शक्ल में मुझ से प्रार्थना की थी, यह मामूली ज़हानत की बात न थी। मैं ने इस तर्ज़ को बहुत पसंद किया। और इस बात के इनाम में मुनादी कर दी कि

आयन्दा इस की आज़मायश न की जावे। और वो आवाज़ इस की मैं ने ज़ात तक पहुंचा दी। वो अल्फ़ाज़ क्या थे? वो यह थे, **"मैं फिर भी इन्सान हूँ। कदम क़दम पर ग़लती हो सकती है। यह हुज़ूर ही की मेहरबानी थी कि अब तक इम्तिहानात में पूरा उतरता रहा। अब मेरी तबियत आज़मायशों का ख़याल कर के कांप उठती है। मुझ में इतनी शक्ति नहीं है कि आज़मायशों में पूरा उतर सकूं। अगर ख़ुदा न ख़ास्ता किसी आज़मायश में फ़ेल हो गया तो आगे कहना नहीं चाहता। "**

S.V. = I had a talk with **Mahatma Gautam Buddha** this very time regarding you. There is a great difficulty that his religion is not found in India. It has almost been extinguished from this part of the country. I am moving one point upward this very time that all the religions, I mean the spiritual ones should be absorbed in one. Your service is telling upon me much.

Happy news. **Lord Krishna** is leaving the brighter world for three days in Bhandara. You should be very alert during that time. **This is the first thing happened in the spiritual history of the world. Radhaji** will accompany Him. There is one more news that Nature Itself is helping you, I mean God Himself.

हज़रत क़िब्ला : तुम ने मेरा नाम वाक़ई ज़िन्दा कर दिया। यह आज़मायशें ऐसी न थीं कि कोई शख़्स इन से पार उतर सकता। इस

हम-आहंगी की मेरी बहुत तारीफ़ है। और क्यों न हो, मैं तुम्हारे रोम-रोम में मौजूद हूँ। रामेश्वर प्रशाद! मैं ने एक ताक़त **कृष्ण जी महाराज** के अतिये में से बवक्त 9.50 AM और पैवस्त कर दी।

S.V. = I have just received a news from **Lord Krishna** that you have been given the post of "**Maker of the World.**" Your Guu will explain it. Look here, **this is not an ordinary post. Nobody in the world could get it.** This is a reward for you from **Lord Krishna** in lieu of test you came out successful. **Radhaji** is going a long way off, in lieu of Her test. **Now the powers of Nature issued forth for the first time will work under you directly.** I mean the Shakti's (शक्तियाँ) **-Brahma, Vishnu** and **Mahesh**. **The same duty you will carry out after your life**. One more thing is given to you and that is the reward from **Radhaji** that after leaving the body, you won't wait for resurrection, but will go direct to Zaat (ज़ात) - what you call it Self. This is an impossibility which has been made possible for you by **Lord Krishna and Radhaji**. Your way has been made smooth so as to go direct after leaving your body. Your कारण शरीर (Karan Sharir) has been already broken just as your Guru said somewhere in His notes.That was in reality the foundation laid in by your Guru for the present state (you) already enjoy.

हज़रत क़िब्ला: रामचन्द्र मुझे यह सब बातें अपनी ज़िन्दगी ही में मालूम हो चुकी थीं कि तुम को यह होना है और इससे आगे भी मुझे मालूम है।

श्री कृष्ण जी महाराजः मैं इस सभ्यता से बहुत ख़ुश हुआ कि तुम ने अपने गुरु महाराज को इस हालत में भी न छोड़ा। यह ग़लती नहीं है। यह भी एक तरह का इम्तिहान हो सकता है और तुम्हारे जज़्बात का ख़ुद इम्तिहान है। मैं इस बात से बहुत ख़ुश हुआ। गुरु की क़द्र करना कोई तुम से सीखे। और ठीक है कि जो वाक़ई प्रेमी है उस की निगाह में सिवाये प्रीतम के कुछ नहीं आता और इसी को वो सब कुछ समझता है। यह मिसाल मुश्किल से मिलेगी। बल्कि कहना यूं चाहिये कि नहीं मिलेगी।

नोट : गुफ़्तगू यह थी कि मुझ को सब से बड़ा इनाम यह है कि हमारे **हज़रत क़िब्ला** हर वक्त मेरे पास मौजूद हैं और मुझे दीदार नसीब है; और मुझे क्या चाहिये।

शेर : **दर्द मन्दे इश्क़ रा दारू, बजुज़ दीदर नेस्त।**

अर्थात : प्रेम की व्यथा से पीड़ित, (प्रेमी को) दर्शन के अतिरिक्त कोई दवा नहीं (होती)।

26-3-45

हज़रत किब्ला : वक्त 10.20 AM- **श्री कृष्ण जी महाराज** के अतिय में से एक शक्ति और पैवस्त की गई।

S.V. = The condition of Fatehgarh is taking a serious trend. We are avoiding for the time being, the idea of

destruction. I am in a fix what to do. The most stubborn people have gathered here; failing my Lord's work is the prophecy for the resurrection to them. Most of us have left the upper world for this very work.

हज़रत क़िब्ला : अपने आप को कमज़ोर समझना, यह सख़्त कमज़ोरी की बात है।

S.V. = 4.20 PM. A power is approaching us for the work direct. I referred your suggestion, asked by me, to **Lord Krishna**. The idea is preferably good. You are going to Bhandara with full powers and your subordinates too. You can demand at any time, if more power is needed. We will open it at once. Don't let any weakness creep in you and your subordinates, too. The power has now begun to work. (4.45 PM)

हज़रत क़िब्ला: मेरे नक़्शे सब बिरजू उड़ा ले गये। तुम ने जो suggestion **स्वामी विवेकानन्द जी** को, उनके कहने पर दिया था, वो मन्ज़ूर हो गया। ताक़त उतरने लगी और वो लोग destruction में आयेंगे। Suggestion यह था कि जो लोग भण्डारे के बाद भी मुक़ाबिले पर आ जायें, वो destruction में अभी से लिये जा सकते हैं। अपनी माँ को हर सूरत में छोड़ता हूँ। यह बात suggestion में उस ने ज़रूर कही थी कि अगर मुनासिब हो और इस का करना मसलेहत भी हो। चुनाँचे इस वक्त तक जो लोग destruction में आ चुके हैं, उन के नाम हसब ज़ैल हैं। राजेन्द्र कुमार, मुत्थन्नी। इन की कार्रवाई बराहे रास्त ज़ात से शुरु हो गई। तुम लोगों को इन की

destruction करने की ज़रूरत नहीं। यह ताक़त उस वक्त वापस होगी जब कि इन लोगों का ख़ात्मा कर चुकेगी। मुमकिन है इस ज़ुमरे में कुछ और लोग भी आजायें। काम करना शुरु हो गया है। दरियाफ़्त करने पर **हज़रत क़िब्ला** ने फ़रमाया कि इन दोनों के connection मैं ख़ुद काट चुका हूँ। तुम को ज़रूरत नहीं। तुम को मैं इख़्तियार देता हूँ कि अय्याम भण्डारे में जिस किसी का destruction तुम लाज़िमी समझो, मुझ से कह देना या उस ताक़त के सुपुर्द कर देना। मगर याद रहे कि किसी के कहने सुनने पर अमल न करना। अगर मेरे ख़ास लोगों को किसी से तकलीफ़ पहुँचे, उस में बाबू मदन मोहन लाल और इस्पेक्टर साहब यानी लल्लू व रामेशर प्रसाद भी शामिल हैं, तो वो भी मुझ से प्रार्थना की शक्ल में कह सकते हैं, मगर यह औज़ार जल्द-जल्द इस्तेमाल न किया जावे।

हज़रत क़िब्ला: नन्हें (रघबर दयाल) को मैं ने इतनी कर्री सज़ा दी है कि वो भी याद करेंगे। सज़ा यह है कि वो दोज़ख़ में मय brain या sensitive हिस्सा जायेंगे। मेरे सतसंग का कैसा शीराज़ा बिखेरा गया। मेरी sacrifices इस क़ाबिल थीं जो यह नौबत आई?

हज़रत क़िब्ला: अभ्यासी के गिराव की सूरत ग़ौस उल आज़म तक हो सकती है मगर आम तौर पर ऐसा हो नहीं सकता। और सलब भी किया जा सकता है। मगर यह वो शख़्स कर सकता है जो ग़ौस-उल-आज़म की हालत से पार निकल गया हो। और उस हालत में भी ज़ात से सम्बन्ध जोड़ कर काफ़ी पैर चुका हो। मगर जिस शख़्स में यह हालत है वो कभी सलब नहीं हो

सकता। बल्कि सलब करने वाला ख़ुद उसी में खिसक जायेगा। यानी वो ख़ुद बग़ैर उस बड़ी हस्ती के इशारे के, जिस को वो सलब करना चाहता है, उस की ताक़त ख़ुद बख़ुद उस में शामिल हो जावेगी। वक्त 7-10 PM

मैं ने श्याम बिहारी लाल को उसी destruction ताक़त के सुपुर्द कर दिया जा इस काम के लिये ज़ात से आई है। अब अपना सूक्ष्म शरीर वहाँ से हटा लो। तुम्हें हाथ लगाने की ज़रूरत नहीं। वक्त 7-20 PM

मौलवी साहब भौगाँवी (अब्दुलग़नी साहब), नन्हे और मुन्शी को भी उसी ताक़त के हवाले कर दिया गया। बक़िया को भण्डारे के बाद देखा जायेगा। अब तुम सब इस काम से दस्तबरदार हो जावो।

S.V. = I do not find such an example of love set before you all by my Lord. He wanted to take the lives of the persons, described above, with little or no pain. When the power descended for the destruction of certain people, their heads began to burn. In such case, my Lord sprinkled upon them by His will force the cold water so as to avoid the unnecessary trouble a man takes when he comes on his death bed. He is repeating the same method just after a short time.

हज़रत क़िब्ला: सौंठ एक गिरह तीन रोज़ तक पानी में भिगोई जाये। उस को साये में ख़ुश्क कर ले। मामूली धूप भी दिखाई जा सकती है जब कि बरसात के मौसम में फफूँदी का शुबह हो। एक गिरह

से मेरा मतलब बड़ी गिरह से है। उतना ही पोदीना ख़ुश्क पीस कर मिलाया जाये। और सुहागा हांडी या कुलिया में फूला किया जाये। और उस के ऊपर मिट्टी के बरतन से ढ़ांप दे। जब फूला हो जाये तो पीस कर मिला देना चाहिये। एक गिरह सौंठ में 1½ माशा सुहागा और अगर ज़्यादा तेज़ बनाना है तो दो माशा सुहागा। मगर इस हालत में यह बच्चों को नहीं दिया जा सकेगा। इन सब का सफ़ुफ़ बना लें और तीन माशा खाना खाने के बाद फांक लें। एक वक्त काफ़ी होगा। अगर गिरानी ज़्यादा हो तो दो मर्तबा खा सकते हैं। अगर दस्त, कब्ज़ की हालत में ज़्यादा साफ़ लाना हो तो एक घूंट गरम पानी नमक डाल कर पिया जा सकता है। यह नुस्ख़ा रामेशर को फ़ायदा करेगा। अगर गरमी कर जाये तो अर्क़ सौंफ़, बक़द्र ज़रूरत पिया जा सकता है। आध पाव से ज़्यादा नहीं पीना चाहिये। बच्चे के लिये सिर्फ़ एक माशा सुहागा डालना चाहिये। अगर यह नुस्ख़ा जिगर के लिये मुफ़ीद बनाना हो तो जितनी सौंठ है, उतना नौशादर शामिल कर दें। अगर जिगर की शिकायत ज़्यादा है तो इसी मिक़्दार के मुताबिक़ काली मिर्च भी शामिल की जा सकती है।

S.V.= There are a few persons more who are coming rapidly under destruction. I will let you know the names afterwards. I put the doctor whom my Lord does not want to name under destruction, and the work commenced. I am keeping off the doctor of Sikandarabad at present or for the time being. The vibration now in the Zaat (ज़ात) Itself is taking place, order is soon coming. Look here, here is the order that all the disciples of Nannhe (नन्हे), without measure,

should be annihilated. I am leaving those persons who have no faith with (in) him. Here is the order. All the persons attached to the doctor of Etah should be given warnings in Bhandara, at first; otherwise they will meet the same fate (Time 9.09 PM). We have been waiting for so long that they come to the right path and under your banner.

नोट : जिस वक्त यह हुक्म हुये हज़रत क़िब्ला यहां तशरीफ़ फ़रमा थे, फ़ौरन् यह कह कर तशरीफ़ ले गये कि ग़ज़ब हुआ जाता है।

S.V. = 9.14 PM The orders have been so far amended by my Lord that the disciples of Nannhe (नन्हे) should have warnings first and then to carry out as a last remedy, the orders have been said before. The Zaat (ज़ात) is Itself moving towards destruction. **You are the governing authority now.** I will advise you, but one thing that do what you intend but not as others say. I assure you that your very thought, if intended for anybody, will bring down the power of Zaat (ज़ात) Itself for decay or otherwise. The same things is happening here. I assure you again that whatever you intend or want to do will be incumbent upon us. Look here, **you are the governing agency**. You have done Prarthana (प्रार्थना), this very time from your Guru that I may follow the intentions of my Lord. The reply is coming from Lord Krishna. Wait!

श्री कृष्ण जी महाराज : तुम्हारी प्रार्थना मन्ज़ूर की गई। आयन्दा से ऐसा ही होगा।

S.V. = I tell you the secret of your present condition that whatever you say in any form whether प्रार्थना or otherwise will be accepted by God Almighty.

हज़रत क़िब्ला : रामेशर ! रामचन्द्र के दिमाग़ और समझ को कहाँ तक सराहा जाये; इस ने वो प्रार्थना की जो मैं चाहता था। बड़ी क़ाबिले तारीफ़ बात जो नक़्ल करने के लायक़ है, वो यह है कि इस ने मुझ को अब तक नहीं छोड़ा और न इस का आयन्दा छोड़ने का इरादा है।

S.V. = Your प्रार्थना has reached the Zenith and reply is coming from Lord Krishna to its extremity.

श्री कृष्ण जी महाराज: तुम्हारी प्रार्थना यह भी मन्ज़ूर की गई। प्रार्थना यह थी कि मैं ने अपने गुरु महाराज का जैसे कि अब तक साथ नहीं छोड़ा है आयन्दा भी ऐसा ही हो कि उन का साथ किसी वक़्त में न छूटे। मैं इस प्रार्थना से बहुत ख़ुश हुआ।

हज़रत क़िब्ला: मेरा दिल इस वक़्त ख़ुशी से उछल रहा है। ख़ुदा करे इस के आगे आने वाले लोग इस का भी नाम मेरी तरह ज़िन्दा करें। और इस के गुण गाये जायें। जब तक दुनियाँ क़ायम है, इस का नाम माहे-दरख़्शाँ की तरह रोशन रहे। इस की औलाद नेक हो। मैं दोनों औलादों के लिये दुआ करता हूँ, यानी रुहानी और सुलबी। इस के घर से रूहानियत कभी रुख़्सत न हो और ऐसी हस्तियाँ निकलें कि हम दोनों का नाम ज़िन्दा करें। इस की मुश्किलें

सब आसान हों और रहमत इस पर दिन ब दिन, मिनट-मिनट, पल-पल यानी हर वक्त नाज़िल रहे। इस के दोस्त ख़ुश रहें। दुश्मन पायमाल हों और एक बात मैं और कहता हूँ। ख़ुदा करे ऐसा ही हो कि जिस जगह, जिस ज़मीन से यह निकल जाये, महक उठे। जहाँ यह जाये, इसी का सिक्का जमे और अपना नक़्श बना कर आवे। जिस से इस की सोहबत रहे, वो ख़ुशहाल रहें। ग़ुर्बत का मूंह कभी न देखें। यक़ीन करें कि यह सब बातें अमल में आगईं और आयन्दा ऐसा ही होगा। यह दुआ मेरी ज़ात की हैसियत से है, ख़ाली नहीं जा सकती।

S.V. = Now comes my turn, in brief. I would say the same thing for you and pray for the same. Your captivating manners have won me altogether. I have always a heart ready for you. Being a Sannyasin I assure you that nobody has the power to snare me up in love. It is you and you alone. You have begun to swim in my thought and that practice you have begun three days ago. The result will be akin to your Guru.

हज़रत क़िब्ला: इस वक्त एक क़िस्सा याद आया जो अज़ीज़ रामचन्द्र से मिलता जुलता है। वो यह कि मजनूँ जब काबे में गया तो उस ने दुआ मांगी; इलाही मेरे ख़याल से और मुझ से लैला कभी जुदा न हो। क़िस्सा गो सही हो या ग़लत, इस से मतलब नहीं। मक़्सद जज़बात के इज़्हार का है।

श्री कृष्ण जी महाराज: तुम्हारे गुरु महाराज ने जो कुछ कि तुम को दुआ दी है, हरफ़-ब-हरफ़ मन्ज़ूर हो गई। अब मेरी बारी है।

इस प्रार्थना के ऐवज़ में, मैं तुम को यह दुआ देता हूँ कि हमेशा ख़ुश रहो। फ़िक्र पास न आवे। और यही हालत उन लोगों की रहे जो तुम से सच्चे दिल से प्रेम करें।

27-3-45

इस वक्त (11.15 AM) **श्री कृष्ण जी महाराज** के अतिये में से एक और शक्ति पैवस्त की गई।

S.V. = We have passed the night smoothly; the anxiety began again since this morning. My Lord remained busy throughout. Madan Mohan must be informed of the present situation; writing should go to him as my Lord appointed (him) as your Secretary. We are waiting for you. I have taken a few more persons under destruction. Names will be coming to you afterwards. Alright, I am leaving Maharaj Narain according to your request, but for the time being, if he does not come round, he will meet the same fate. The person you neglected has poisoned your mother's brain to a greater extent. He is one of the slaves of Maulvi Sahib (अब्दुलग़नी साहब) whom I don't want to keep in the world. Death is sure for him. Whoever puts obstacles in my way whether you (Ram Chandra), whom all of us love so much, or anybody else, will meet the same fate. Never mind, whether she may be your Bua (बूआ) or your mother (चची साहिबा). I shall set fire the house of my Lord even if I find any clue to the contrary. I won't listen to you any further. I say again, I shall pull

down the earth itself. Don't suggest me anything now. As soon as you go to Fatehgarh, open yourself to your mother freely and tell her that will of my Lord must come to pass, if you or anybody resist me to abide by my Lord's orders, resurrection will be the result. Make your heart like me this time; not like that of your Guru. You are meddling with God's work; I excuse you this time. On your suggestion, leaving Maharaj Narain, I flew in rage. You are excusable for this reason also that you have a great regard of your mother's (चची साहिबा) house and His relations. There was no selfish motive of yours. I am rejoiced at your saying so submissively. You have really surrendered yourself completely with me and your Lord. Think that, if I do anything wrong for you, am doing it myself.

जग्गू : भाई साहब आप ने इस वक्त बड़ा अच्छा किया जो महाराज नारायन को बचा लिया। मेरी हिम्मत नहीं थी कि मैं कुछ कह सकता।

S.V. = We have pondered over the matter and arrived at the result that it is your mother who has become the instrument of resistance in our work. I want Swastika at the above side of your Ailan (ऐलान) and the rising Sun in the end. I got Swastika marked with red in the middle in circle, and four sides also dotted with red ink; the meaning is clear now. It means destruction in the middle and in the end. Rising Sun means that my Lord gave birth to the new religion called "Sahaj Marg" alias "Sat pad Panth". In future **this will be**

symbol of your satsangh. I mean the Rising Sun in the top, in the end the Swastika with red lines and circle to mark the history of your satsangh dotted with blood. A man who thinks himself at heart his disciples as his subordinates commits wrong. Atma is in them as well, and in that case he has equality with his master. Only the veils or preventions are to be broken off; that is why he comes to his master. In a way, his master should be indebted to him because he, I mean the disciple, is giving chance to render him services. Such an idea as I said before should be entirely vanished from the master's brain. One who does not abide by this, does not perform his duties well. Take the example of your Master, I mean Mahatma Ram Chandra ji Maharaj of Fatehgarh. He has set an example for that. All of you should follow Him. Is there any gentleman among us who comes forward and say that he is abiding by his master in this respect. There is one more news for you. I have taken a very important person named by Brij Mohan Lal under destruction. My Lord is objecting to it, so I am leaving him for the time being. His condition is that he has no other idea but to dominate. He is entirely devoid of spirituality and cherishing the hopes of domination. How strange it is? Your Phupha (फूफा) in spite of having an upset brain (has been) cherishing hopes of domination for his descendants. He has come to the extent that his sons may be worshipped like the idols in the temple. Your Bua (बूआ) too is following him. (Time 7.08 PM).

The matter has taken another serious turn. All these

difficulties we are facing on account of your mother (चची साहिबा). I want to extinguish the race itself in which they were born, but your Lord is checking me from doing so. By race I mean all the relations, near and distant ones, with wife and children. (Time 8.25 PM).

हज़रत क़िब्ला : (9.35 PM) मैं जयपूर में हूँ। हर नरायन इस क़दर सीधा लड़का है कि मिसाल नहीं रखता। मगर नन्हे का असर कैसा फैला हुआ है। जब फ़तेहगढ़ जाओ तो इन्स्पेक्टर साहब से कह देना कि कम अज़ कम हर नरायन को समझा देवें। यह काम बज़रिये ख़त भी हो सकता है। ऐसी हालत में कि वो भण्डारे में शरीक न हो पावें।

S.V. = To speak the truth, Ram Chandra; My Lord's work is going to be a failure. I mean the success I wanted is not going to attend us. I mean by success, the thorough success And it is on account of your mother only. I think the days of resurrection are nearing. I will not leave the work and go upwards but after doing total destruction or the entire success. Thus I have made up my mind just now.

जग्गूः यह क्या ग़ज़ब हो रहा है। चची तिल भर भी नहीं हट रही हैं। मुझे कहना पड़ा, गो मेरी वो मां हैं। ख़ैर मुहावरा कहना नहीं चाहता, फिर भी बुज़ुर्ग हैं। भाई साहब, कितने अचंभे की बात है कि कुल रूहानी दुनियाँ आप को तसलीम कर रही है और मेरी माँ ख़िलाफ़ पड़ रही है। ताक़त क़ुदरत से destruction के लिये उतरी हुई है और

ज़ोरदार होती जाती है। देखा चचा (रघुवर दयाल) ने तुम लोगों पर कैसा ज़ुल्म किया और उसका नतीजा क्या हो रहा है।

S.V. = Your life is at stake now. I won't allow you to take food anywhere else leaving Inspector Saheb. You won't buy anything from the same shop over and over again. Don't leave this work on your servant. When you sleep just as your Guru has said, somebody must wake up and remain alert. The people has (have) suspected you already though not sure. Wherever you stay, your seat will be in the middle. You can't be left alone at any time. A daring heart is necessary for your safety. Any other precaution, necessary, will be taken when you speak or do satsangh. Somebody must remain behind you quite alert. You will give तवज्जह always with your eyes open in Bhandara. Those who love you, need not sit among the crowds for Tawajjha (तवज्जह).

श्री कृष्ण जी महाराज : तुम्हारी पुश्त पर मेरा चक्र होगा। और यह भण्डारे भर रहेगा। इत्मीनान रखो। मैं ख़ुद भी मौजूद हूँगा। जैसा कि कहा जा चुका है। किसी की ताक़त नहीं कि आँख मिला सके।

हज़रत क़िब्ला : स्वामी जी महाराज ने जो एहतियातें बतलाईं, रखना चाहिये।

कृष्ण जी महाराज ख़ुद तुम्हारी हिफ़ाज़त पर मैं हूँगा। **चक्र** तुम्हारे इशारे पर काम करेगा। मगर जब तक मैं न कहूँ, काम न

लेना। जो लोग तुम्हारी हिफ़ाज़त पर होंगे, उन को इनाम दिया जायेगा, ख़्वाह अभी लेलें, ख़्वाह भण्डारे बाद। यह उन की मरज़ी पर है।

28-3-45

हज़रत क़िब्ला : लल्लू से कह देना कि महाराज नरायन को समझा दें और फिर समझा दें कि अगर वो मेरे काम में मददगार नहीं होते, या होना नहीं चाहते हैं तो कम अज़ कम neutral ही रहें। यह मुआमला ऐसा नहीं है कि ख़िलाफ़ हो कर कोई साबुत बच सके।

S.V. = The situation (has) improved a little again (वक़्त 9.40 AM). But you should not think it a firm state as same thing is happening throughout since we have taken this work. The poisoning elements are in the house of my Lord as well. There are certain people at Fatehgarh too who do not want your supremacy or the upperhand in any work of my Lord. The condition improved a bit more (10.45 AM). I want to finish now the whole family, leaving that of my Lord, of chacha, the satan now.

नोट : ऊपर की बात सुनते ही कुछ ग़ुस्से की रमक़ मुझ में आना ही चाहती थी कि स्वामी विवेकानन्द जी ने मुन्दरजा ज़ैल नसीहत की।

हज़रत क़िब्ला : मैं ने भी स्वामी जी महाराज को अब इजाज़त देदी है। तुम भी किसी की सिफ़ारिश मत करना।

S.V.= Heaps of bones you will find everywhere, the matter has reached the climax or to its zenith. I am burning in rage now. You keep yourself aloof from it (rage). The reason is when the higher authority among us moves himself to the point of destruction, and specially you, we will have to leave all the work before us and engage ourselves to that and that alone.

हज़रत क़िब्ला: मैं ने अज़ीज़ रामचन्द्र से मदन मोहन लाल का ख़त सुन कर दरियाफ़्त किया कि मुझे अब क्या करना चाहिये। उस ने कितनी सभ्यता से जवाब दिया कि मुझ में इतनी अक़्ल कहाँ कि हुज़ूर को राय दे सकूं मगर मैं ने किसी किताब में किसी जगह यह पढ़ा है, If at first you do not succeed, try, try again. इस से अच्छा जवाब हो ही नहीं सकता। मेरी तबियत बहुत ख़ुश हुई। हाय अफ़सोस, यह समझ और इस की कोई दाद न दे। मैं स्वामी विवेकानन्द जी से अभी कहूँगा। सच पूछो तो इस जवाब ने मेरा दिल निकाल लिया। सिवाय दुआ के अब मेरे पास कुछ नहीं रहा, जो मैं तुम को दूं। जा रहा हूँ।

S.V. I am sending these words to Lord Krishna. Wait (for) the result.

श्री कृष्ण जी महाराज : (वक़्त 12-17-PM) मैं ने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली, मैं यह काम ख़ुद अपने हाथ में ले रहा हूँ। फ़तेहगढ़ जा रहा हूँ।

S.V.= Lord Krishna has taken the work we are already doing, in His hands this day at 12.20 PM.

हज़रत क़िब्ला चक्र घूमने लगा (वक्त 1.48 PM)

S.V.= (1-50PM) The condition has taken a serious trend again. Proposals from Lord Krishna.

श्री कृष्ण जी महाराजः अगर नाकामयाबी हो, गो इस हद तक उम्मीद नहीं, तो मैं तुम को इजाज़त देता हूँ कि अपनी वो आँख खोल देना जो मैं ने महाभारत में अठारा (18) दिन तक खुली रखी थी।

हज़रत क़िब्लाः जब यह नौबत आये, तो मुझ से पूछ ज़रूर लेना। यह ताक़त तुम्हें ख़ास तौर पर दी जाचुकी है और यह **कृष्ण जी महाराज** का अतिया है। इस का ज़िक्र मेरे नोट में मौजूद है। ख़ास ताक़त ख़ास ही जगह इस्तेमाल होना चाहिये।

जग्गूः (वक्त 2.05 PM) अब मुझे भी ताब नहीं। दीना नाथ को destruction में दिये देता हूँ। काम करते हुये इतने दिन हो गये मुझे ग़ुस्सा अब आया है। महाराज नरायन की भी सिफ़ारिश नहीं करता। सच पूछो तो इस वक्त प्रलय का सीन है। सब से बड़ी ताक़त ख़ुद काम कर रही है। किसी की हिम्मत नहीं कि उस को रोक सके। भाई साहब, एक नसीहत मैं फिर भी करूंगा कि जहाँ तक हो सके, आप ग़ुस्से से बचे रहें। आप का रुत्बा जैसा जो कुछ भी है, मैं बख़ूबी

जानता हूँ। लालाजी के शांत रहने की एक वजह यह भी है कि आप को ग़ुस्सा नहीं आ रहा है।

चैतन्य महाप्रभु : मैं एक शांत आत्मा हूँ। मुझ को ग़ुस्सा कभी नहीं आता। मैं किसी को कष्ट देना नहीं चाहता। मगर वाक़यात दम बदम ऐसे बदल रहे हैं और मामला ऐसा रुख़ पकड़ रहा है कि मुमकिन है मुझ को भी हथियार उठाना पड़े।

हज़रत क़िब्ला: कितने ज़ुल्म की बात है कि अगर कोई शख़्स अपने क़ुसूर की मुआफ़ी ऐसी हालत में मांगे जब कि उस का क़ुसूर अपने दरजे पर नहीं है और फिर वो मुआफ़ न किया जावे। हालांकि तुम ने जो कुछ किया वो ग़लती नहीं थी,मेरा ही हुक्म था। क़ुसूर उन लोगों का है कि जब मेरा reference दिया जाये और फिर यक़ीन न हो। क्या **मीरा बाई** का क़िस्सा क़ाबिले नोट नहीं है। उसने ज़हर हलाहल सिर्फ़ इस बात पर पी लिया कि उस से यह कहा गया था कि यह **कृष्ण जी महाराज** का भेजा हुआ है।

जग्गू : दीना नाथ का connection मुझ से इसी वक्त काट दो।

(तामील हुक्म कर दी गई 2.40 PM)

S.V. This is an example of love. I wanted to see Ram Chandra and he reached there.

S.V.= 5.58 PM The matter took another serious trend. It is due to the stubborn nature of your mother.

जग्गू : रामचन्द्र ग़ज़ब हो गया। तुम्हारी दो उमंगों ने काम तमाम कर दिया। मेरी मां इताब में हैं।

हज़रत क़िब्ला : यह तुम्हारी ख़ता नहीं, यह दो झटके मेरी उमंग के थे। Toleration की इन्तहा हो गई। **कृष्ण जी महाराज** ने अब तक मैदान नहीं छोड़ा। यह मेरा ग़ुस्सा था जो तुम पर असर किया।

श्री कृष्ण जी महाराज: मैं ने यहां हालत को बग़ौर देखा, हालत ठीक नहीं है।

S.V. = (9.15 PM) **Lord Krishna** is still here. (9.20PM) The matter is going from bad to worse (9..25 PM) The condition is not improving.

S.V. = My Lord now does not want to see the face of the persons trying to usurp the rights given to you by Him. He is now in rage (9.48 PM).

29-3-45

हज़रत क़िब्ला : रामेश्वर, इस वक्त अज़ीज़ रामचन्द्र ने वो इख़्लाक बर्ता कि इस की मिसाल नहीं मिलती। इसने सिज्दा पहले **स्वामीजी** को किया था और उस को यह ही वाजिब था। उस के बाद **चैतन्य महाप्रभु** को। जब मेरी बारी आई तो **अपने आप को ख़ुद सिज्दा कर लिया।** यह underline जुम्ला; इस को अल्फ़ाज़ अदा

नहीं कर सकते। इस में ख़ास बात यह है कि अपने आप को इस ने सिज्दा ख़ुद किया।

S.V. = I am going to transfer the highest power. Your Lord is checking me from doing so, at this time, and have kept reserved for you, as soon as you reach the spot, it will be transferred instantly. But look here, keep yourself on milk (दूध) diet alone today, you can take fruits, the ripe ones. This is the gift of **Lord Krishna**, stored for you with me. We have a talk from your Master about you ragarding will force. Now we settled to increase it a little more before you go at the spot, the reason is that you have inherited the irritative capacity from your father; the thing we do not want to remove for the reasons given in the notes of my Lord. For Rameshwar's satisfaction I say that it is swimming over the head of Ram Chandra. Press the switch, it will gush up at once. There will be no delay. A second's time is required for it. You are feeling the air of that power. Your master is of opinion that it should come down to you gradually so as to make it complete before you actually reach there. I praise your Anubhava (अनुभव) power that you felt it instantly. I tell you the truth; every action and thought of our goes direct into you in the force of vibration first which is called **Shruti** (श्रुति) and then comes the words. In the olden times, the sages of our motherland used to catch **Shruti** only, but your case is different, you catch both the things together; I mean after a very short interval. This is the time's demand. Nature is going that way. This is quite a new method as time demands.

The people have grown weaker by keeping themselves aloof from Brahmacharya (ब्रह्मचर्य) ashram (आश्रम). The system has long been forgotten now. You will give birth probably after your life. You will carry along with you this work you have started here, when you depart from this world.

There is a great bustle now at Fatehgarh. Those who are entertaining the idea of domination without doubt, whether he may be Birju or anybody else..... Your Lord is checking me to complete the sentence by adding a few words. The **Shruti** (श्रुति) are now coming direct from the very point through us.

हज़रत क़िब्ला : यह दरजा जो तुम्हें नसीब है, लोग तरसेंगे। इन कम्बख़्तों से कहो कि उन की आँखें अब तक नहीं खुलीं। उन्हें अपनी भी ख़बर नहीं कि क्या हो रहा है और क्या हुआ चाहता है। दुनियाँ किसी वक्त में तुम्हारे लिये रोयेगी। इस से मेरा मतलब यह है, अगर हवा के रुख़ को देखें, उस के सुहावनेपन को ग़ौर करें, फैलाव को जगह दें, तो यह बात जो मैं अभी कहना चाहता था, रोशन हो सकती है। इस के बारे में मैं ने कहीं पर अपने नोट में रोशनी फैंकी है। ताकतें सब नीचे आ रही हैं। बुज़ुर्ग लोग अपना मस्कन यहीं बना रहे हैं। **स्वामी विवेकानन्द जी** अपनी जगह छोड़ रहे हैं। **चैतन्य महाप्रभु** का यही ख़याल है। **महात्मा गौतम** की नज़र तुम्हारी तरफ़ जा रही है। मुमकिन है कि तुम को अपने एहकाम जो बराहे रास्त मिलें, किसी न किसी बुज़ुर्ग के सुपुर्द करना पड़ें।

S.V. = We have renounced the brighter world for you.

हज़रत क़िब्ला : (10.05 AM) यह हुक्म अभी सादर हुआ है। एक बहुत बड़ा तांता क़ुदरत से तुम्हारे लिये उतरा है। वो बात जो direct initiation के वक़्त मैं ने कही थी, मुत्वातर जारी रहेगी। यह बात जो मैं ने अभी कही है, इस के इलावा है।

चैतन्य महाप्रभु : मैं ने भी जगह छोड़ दी है। वक़्तन् फ़वक़्तन् या ज़रूरतन् जाना दूसरा सवाल है। मुझे इसी वक़्त हुक्म मिला है। चोटी के महात्मा सब काम के लिये उतर रहे हैं। **गौतम बुद्ध** भी अपनी जगह छोड़ रहे हैं।

श्री कृष्ण जी महाराज : तुम्हारी प्रार्थना इस हद तक मन्ज़ूर हुई जो घर संभलने के बारे में थी। पेश्तर इस के तुम्हारे गुरु को जो लोग बदनाम करें, वो ही न रहें। इस के मानी भी घर संभलने के हो सकते हैं।

S.V.= Good Prarthana (प्रार्थना) and good reply.

गौतम बुद्ध : मेरा तरीक़ा तालीम का यह ही था जो तुम्हारे गुरु का है। यह बड़ा प्राचीन तरीक़ा है। इस को लोग भूल गये हैं।

S.V. = Another serious trend this moment (10.44 AM) Inviting Lord Krishna.

S.V. = Look here, Ram Chandra. You are in the midst of us now. My Lord is coming to you to transfer a very great power. He has ordered to take a little curd at this time.

Before going to bed you can take only one Pao (एक पाव) of milk and not more than that. You cannot take food tomorrow as well, unless you are ordered to do so. You can't take any breakfast tomorrow morning till the arrival of my Lord. Water I can allow you, one or two draught before going to latrine. Situation is just the same as I told you while you were journeying on the lorry. A good deal of care is to be taken this night, I mean you will be given complete rest, and no talk so as to irritate you. My Lord's work is suffering, that means the lives of certain people are sure to be gone now. We do not want any hostile elements among you. Time 9.15 PM. Another destructive power. **Time only till 31st March 1945.** I give note to the persons, who may write your life after you have gone from the world to write the names of the persons who have helped in our cause.

हज़रत क़िब्ला : वक़्त 10.39 रात फ़र्रुख़ाबाद - मैं ने वो ताक़त जिस का ज़िक्र इस से पेश्तर था, transfer कर दी। सुबह जब मैं आऊँ तब खाना, खाना। फ़तेहगढ़ जा रहा हूँ।

30-3-45

S.V. = You must not be confused with the challenge. Intensive will has been given to you. If anybody comes forward for challenge, meet it at once and without delay. You will actually feel it after some time when actually reach the spot. Food restriction has been taken off but a few hours'

after. Leave this place for Fatehgarh after taking complete rest.

कृष्ण जी महाराज : तुम्हारा इन्तज़ार है। तुम्हारे आते ही मेरी कुल ताक़त मौजूद हो जायेगी।

S.V. = Look here, Ram Chandra, you are on the highest pitch of your will now. Moreover we are all in you. If challenge comes we will open ourselves in you. Rest assured.

राधा जी - मुझे बड़ा उत्साह है कि मैं अपने भाई की कामयाबी देखूँ। मैं एक निबल (निर्बल) स्त्री हूँ।

ऋषि (Ceylon) **लंका** - जिन लोगों को भण्डारे की दावत दी गई है, सब मौजूद हैं।

S.V. = I have received orders from **Lord Krishna** just now for the total annihilation. Power is running. The vibration you are feeling this time surrounding, is the power of destruction.

हज़रत क़िब्ला : रामेशर क्या यह मिसाल कहीं हो सकती है, कि जिस वक्त राम चन्द्र को एहसास हुआ कि मुझ में dejection है, उस वक्त उस ने फ़ौरन मुझे तवज्जह देना शुरु कर दी। यह इस की मुहब्बत है, वाक़ई में मुझे dejection कभी नहीं होता। तवज्जह देने का तरीक़ा कितना अच्छा था कि इस ने अपने आप को मुझे समझ

लिया और तवज्जह दी। कितना अच्छा इख़्लाक़ी नुक्ता था। एक बात मैं बतौर नसीहत तुम लोगों से कहता हूँ कि इस बात की जो वक्तन् फ़वक्तन् इस से सरज़द होती है, आम तौर पर नक़ल न करें। जब तक मुझ से काफ़ी तौर पर हम आहंगी हासिल न कर लें। याद रहे कि अगर मामला बरअक्स हुआ या ख़याल ने ग़लती की तो सब से बड़ी ख़ता यही है।

S.V. This is an example of love, you did at this time. The method is praiseworthy, as if you are doing nothing.

हज़रत क़िब्ला : रामेशर कितनी ख़ूबसूरत बात है कि जब मैं रामचन्द्र की तकलीफ़ नहीं देख सकता और उस के हटाने की, अगर ऐसा इत्तफ़ाक़ हो भी जाये, कोशिश करता हूँ। लिहाज़ा इख़लाक़न् इस का भी फ़र्ज़ यही है कि मुझ को dejection की हालत में कभी न देखे। लाज़िम और मल्ज़ूम के यही मानी हैं।

S.V. = My Lord is now in a good state.

राधा जी : इस वक्त की गुफ़्तगू का जवाब यह है कि मैं हथियार आख़िर में उठाऊँगी। और तुम कहो तो अभी उठालूँ। जवाब का इन्तज़ार है।

नोट: मैं ने स्वामी विवेकानन्द जी से दरियाफ़्त किया कि इस का ज़वाब क्या दिया जाये। फ़रमाया:-

S.V.= Tell her that it is not necessary at this time.

31-3-45 - फतेहगढ़ भण्डारा 8.40 AM

हस्बुल हुक्म **हज़रत क़िब्ला** आज आठ बज कर चालीस मिनट पर वक्त सुबह, बाबू राम चन्द्र साहब शाहजहाँपुरी की सज्जादा नशीनी का ऐलान बज़रिये रामेश्वर प्रसाद, क़ुत्बुल अक़्ताब, जल्सा आम सत संग में करा दिया गया।

S.V. = (5.00 PM) There were a few persons assembled before Chacha (रघुबर दयाल) this noon, telling all about you.

(11.40 PM) Another scheme ready. You are not allowed to go to satsangh (Pandal) tomorrow. I shall let you know afterwards. There are proposals. **Lord Krishna** is coming. One of your children (at Shahjahanpur) got fever. Your mother doing well. I have relieved your Lord of His duty. He remains with you all the hours day and night.

भाग - ४ समाप्त

Glossary

शब्द	**अर्थ**
अमल दरामद होना	कार्रवाई होना, प्रतिपालन
अफ़्शा राज़ होना	राज़ प्रकट होना, revelation of secrets
अतिया	Gift, इनाम दी हुई चीज़, बख़्शिश
अख्ज़ करना	ग्रहण करना, प्राप्ति
अहाता करना	To encircle, घेरा करना
आलमे बाला	परलोक, upper world
आग़ाज़े आलम	सृष्टि की उत्पत्ति
अमल	अभ्यास करना
अम्ल व शग़ल	अभ्यास तथा ध्यान
अख्फ़ा	गोपन, छिपाव
अक्सीर	राम बाण, रसायन
अताब (या इताब नाज़ल होना)	प्रकोप होना
अदबन्	out of etiquette, शिष्टाचार के नाते
अहकामें-ईज़्दी	दैवी आदेश
अक्सी तौर पर	प्रतिबिंबित
इख़लाक़ या अख़लाक़	सद्व्यवहार, सदाचार

उलिया	पार ब्रह्माण्ड मण्डल
ऐलान	Announcement, घोषणा
औलिया अल्लाह	परमात्मा की आराधना करने वाले संत
औलाद सुलबी	सगे बच्चे
कुतुब	ध्रुव
कुत्बुल अक्ताब	ध्रुवाधिपति
क़ाबिले तहसीन	Praiseworthy, प्रशंसनीय
क़यास करना	अनुमान लगाना, अन्दाज़ा
कारेनुमायाँ करना	बड़ा काम करना, अहम काम करना
कुलियतन्	Completely, wholly, सर्वथा, बिल्कुल
क़वायद	उसूल, क़ानून, रसूम, नियमावली
कशफ़	जाहिर होना, अन्दरूनी हालत का खुलना, आत्म शक्ति द्वारा गुप्त बातों का ज्ञान
क़लील अरसा	अल्प समय
कार बरारी	कार्य सिद्धि, कामयाबी
क़लील तन्ख़्वाह	थोड़ी तन्ख़्वाह
कुबरा	ब्रह्माण्ड मण्डल
क़ासिर	विवश, मजबूर
कुर्बत	सामीप्य

क़ुदरते-कामिला	पूर्णप्रकृति
खाँगी	घरेलू
ख़ार	काँटा
ख़्वाबीदा हालत	सोईहुई हालत
ख़फ़ी	महीन, गुप्त
ख़ास ज़र्फ़	विशेष पात्र
गिरह	गांठ
ग़ायबाना	in absentia, अनुपस्थिति
गिर्वीदा	आसक्त, आकर्षित
ग़ौस	पार्षद
ग़ौसुल आज़म	महापार्षद
चन्दाँ हर्ज नहीं	इतना (इस क़दर) हर्ज नहीं
ज़ी रूह	जीवित, जीव, प्राणी
ज़र्रात	कण
जमादात	जड़ पदार्थ, खनिज पदार्थ
ज़ियारत करना	दर्शन करना, किसी तीर्थ स्थान या पुण्य व्यक्ति के दर्शन
ज़ात	अस्तित्व (Being)
जुमेरात	बृहस्पतिवार, गुरुवार (Thursday)
जुम्मा	शुक्रवार (Friday)

जुनूबी हिन्द	दक्षिण भारत (South India)
ज़ाहिरन्	प्रत्यक्ष रूप में
ज़िन्दगी ने वफ़ा न की	मृत्यु हो गई
जदीद	Modern, आधुनिक, नवीन, नूतन
जुम्ला एहबाब	तमाम दोस्त
जज़्ब	लय अवस्था
जज़्बा	passion, attraction, प्रेमावेश, खिंचाव, कशिश
ज़हानत	Intelligence, प्रवीणता, प्रतिभा
जिस्मे लतीफ़	सूक्ष्म शरीर
यकसूई	एकाग्रचित्त, तन्मयता
तल्क़ीन	तालीम देना, सिखलाना, हिदायत करना, नसीहत करना
ताअनो तिश्ना	काटाक्ष, व्यंग, भर्तसना, फटकार, जली-कटी बात
तज़ल्ज़ुल-ईमानी	श्रद्धा या विश्वास में हलचल होना
तसाहिल	काहिली, सुस्ती, आलस्य
तरग़ीब देना	प्रलोभन देना, भड़काना, उत्तेजित करना
तालीम कुनन्दा	शिक्षक
तजावज़ करना	सीमोल्लंघन, हद से गुज़र जाना, अवज्ञा
तहरीरात	लेख, दस्तावेज़

तौफ़ीक़	सामर्थ्य
तमाअ नफ़्सानी	लालच, लोलुपता
ताक़ीद जानो	चेतावनी
दाद देना	प्रशंसा करना
दस्त बरदार होना	परित्याग करना, छोड़ना
दारे-फ़ानी	नश्वर संसार
नबातात	वनस्पति, उभ्दिज
नूर	प्रकाश, रोशनी
नश्तर लगाना	चीरा लगना
नजात	मुक्ति, मोक्ष
नाबूद करना	विनिष्ट, तहस नहस करना, उन्मूलित करना
पैवस्त करना	प्रविष्ट करना
पुश्त	पीठ
पेश्तर	पहले
पीर	गुरु
फ़नाए-फ़ना	तुरिया अवस्था (Death of Death)
फ़ैज़	कृपा grace लाभ
फ़नाए मुत्लक़	total mergence, पूर्ण लय अवस्था

फ़ारस	Persia, ईरान
फ़ुक़रा	बहुवचन फ़क़ीर का
बातनन्	आन्तरिक तौर पर
बराहे रास्त	directly, सीधे रास्ते से
बेबहरा रहना	बेख़बर होना
बैअत करना	दीक्षा लेना (initiate करना)
बक़ा, बक़ा-इल्बक़ा	दायमी ज़िन्दगी, तुरयातीत अवस्था असमप्रज्ञात समाधि, जीवन मुक्त दशा, वहदत के ख़याल में डूबे रहना
बजिन्सा	वस्तु, पदार्थ, श्रेणी, वर्ग, लिंग, नस्ल (से संबंधित)
बेहुमा	सब से अलग
बाहुमा	सब से मिला हुआ
बायसे ख़ुश्नूदी	प्रसन्नता हेतु, ख़ुशी का बायस
बादी उल नज़र	सरसरी नज़र से
मुज़महल	उदास होना, कमज़ोर, निढ़ाल होना
मुन्तक़िल करना	transfer करना, बदलना
मुरीदैन	शिष्य
मुख़ातिब होना	बात करना, संबोधन करना
मुराक़्बा	ध्यान में बैठना
मुनव्वर करना	प्रकाशित करना
मानेअ	निषेधक, मना करने वाला

मौरूसे आला	वंश प्रवर्तक, मूल पुरुष, वो आदमी जो किसी वंश का बानी हो
मुस्तक़िल	permanent, स्थायी, दृढ़
मोज्ज़न होना	लहराना, हिलोलें लेना
मसलेहत	मुनासिब, नेक सलाह, हिकमत
माहे-दरख़्शाँ	चमकता चाँद
मुफ़स्सिल	सविस्तार, ब्योरेवार
मुस्तसना	excepted, अलग किया हुआ
मग़फ़ूर	मुक्त
मुख़्तसरन्	संक्षेप में (in brief)
मद्दो जज़र	उतार चढ़ाव
मुतलिक़न्	नितांत
मुज़्दाबाद	शुभसूचना
मुस्तफ़ीज़ होना	फ़ैज़ उठाने वाला, फ़ैज़ पाना, लाभान्वित होना
मक़्सद बरारी	सफलता, कामयाबी
मिस्ले आफ़्ताब	सूर्य के समान
मग़रबी	पच्छिमी (western)
मन्सूब करना	सम्बंधित करना
मुनेहरिफ़ होना	विमुख होना, अवज्ञाकारी, विद्रोही
माद्दी आग	Material fire, प्राकृतिक (भौतिक)अग्नि
मद्दे नज़र	नज़र के समने आया हुआ, दृष्टिगोचर

मज़्कूरा बाला	उपरिकथित
रसाई	पहुंच
रहमते इलाही	परमात्मा की कृपा
रुजूअ होना	झुकना, मुख़ातिब होना, to incline, to get oriented
राग़िब करना	इच्छुक होना, inclined
लायनहल	न हल होने वाला
लाज़िम	आवश्यक
लतीफ़ाये क़ल्ब	हृदय चक्र (heart point)
लतीफ़ाये सिर्रः	अग्नि चक्र (fire point)
लतीफ़ाये ख़फ़ी	अपः (जल) चक्र (Water point)
लतीफ़ाये अख़्फा	कण्ठ चक्र (throat point) वायू चक्र
लतीफ़	सूक्ष्म
लतीफ़तर	सूक्ष्मतर
लाज़िमो मल्ज़ूम	interdependent, एक दूसरे से वाबस्ता
वुक़अत	इज़्ज़त, क़द्र
वुसअत	विशालता
वही, वह्य	इलहाम, आकाशवाणी, ईश्वरीय संकेत
वक़्तन् फ़वक़्तन	कभी-कभी (off&on) समय समय पर
विसाल (या वसाल)	मिलन, महासमाधि
वबा	बीमारी

हर कस व नाकस	हर शख़्स, छोटा बड़ा
हर्फ़ गीरी करना	दोश निकालना
हस्बे इस्तताईयत	शक्ति अनुसार
हैवानात	चौपाये, जानदार
हम आहँगी	सहमती
हत्ताउलवसाअ	यथा शक्ति, यथा संभव, भरसक
हज़रत क़िब्ला	गुरु महाराज
हसब मन्शा	इच्छा अनुसार
हमसरी	बराबरी
सरचश्मा	source पानी के निकलने की जगह
सर्फ़े के लिये	ख़र्चे के लिये
शाहिद	गवाह, साक्षी
शरह तफ़्सील	व्योरेवार व्याख्या
शाज़ो नादर	यदा कदा, कभी कभी
साया-ए-आत्फ़त	कृपा की छाया
शग़ले राब्ता	गुरु की शक्ल पर ध्यान
सज्जादा नशीन	spiritual representative, उत्तराधिकारी
सरायत करना	घुस जाना
सलब करना	छीन लेना
शमाली हिस्सा	उत्तरी भाग
सुबकदोश होना	भार मुक्त होना

सफ़ूफ़	powder (चूर्ण)
सुग़रा	पिण्ड देश
सुम बकुम	बहरा-गूँगा, वो शख़्स जो बात का जवाब न दे
शग़ल	ध्यान, काम में मसरूफ़ रहना